



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

हिन्दी त्रैमासिक पत्रिका

लेखापरीक्षा प्रकाश

एक सौ छत्तीसवां अंक अप्रैल-जून, 2021



योग



भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय
9, दीन दयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110124

मुख्यालय में वैक्सीनेशन कैंप का उद्घाटन करते हुए भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदय





लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

लेखापरीक्षा प्रकाश

एक सौ छत्तीसवां अंक

हिंदी त्रैमासिक पत्रिका
(अप्रैल-जून, 2021)

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय
नई दिल्ली-110124

हमें संकल्प लेना होगा कि हम सभी सरकारी कामकाज हिंदी में करने में अपना गौरव समझेंगे और हिंदी का प्रयोग न केवल निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए करेंगे बल्कि हिंदी को राष्ट्रभाषा का गौरव प्रदान करने के लिए भरसक प्रयास करेंगे।



लेखापरीक्षा प्रकाश

एक सौ छत्तीसवां अंक (अप्रैल-जून, 2021)

पृ.सं.		पृ.सं.	
अनुक्रमणिका	3	4. आई.सी.ई.डी. जयपुर के राष्ट्रीय	19
पत्रिका परिवार एवं संपादकीय	5	प्रशिक्षण कार्यक्रम के 'कचरा प्रबंधन'	
पाठकों के नाम पाती	6	विषय पर प्रेरणादायी संस्मरण	
आपके पत्र	7	मुनीष भाटिया	
लेख		5. आजकल जिंदगी डर के साए में	21
1. योग का महत्त्व	11	जो बीत रही है	
सुश्री अनामिका अंतिल		बिजेन्द्र कुमार बेरवाल	
2. लेखापरीक्षा की सार्थकता व अनुभव	15	6. सोशल मीडिया और हिंदी	32
दया सागर		डॉ. लाखा राम	
3. पंडित दीनदयाल उपाध्याय : राष्ट्रीय	17	7. स्वनिम विज्ञान	35
स्वयं सेवक संघ के चिंतक और		गौरव हारिथ	
संगठनकर्ता एवं एकात्म मानववाद		8. समय के सदुपयोग का महत्त्व	38
के प्रणेता		सुश्री राजकुमारी शर्मा	
सुश्री सं.ग. श्रीमती		9. वर्तमान समय में कम्प्यूटर की महत्ता	41
		सुश्री मीना भारद्वाज	

	पृ.सं.		पृ.सं.
10. हिंदी की ओर <i>अंकित कुमार ठाकुर</i>	45	21. बंटवारा <i>विनय कुमार गर्ग</i>	79
11. कार्यालय में प्रयोग होने वाले कुछ महत्वपूर्ण राजभाषा अधिनियम/नियम <i>सुश्री पूजा सिंह मंडल</i>	47	22. जीवन तरंग <i>सुश्री नीतू सिंह</i>	81
12. राम-कथा की विश्वजनीयता <i>अभय राम सिंह</i>	50	23. माँ गंगा <i>सुश्री आरती शर्मा</i>	82
13. पावन पर्व छठ <i>नीतीश कुमार</i>	53	24. पलाश के फूल <i>योगेश कुमार मिश्र</i>	83
<i>कहानियाँ</i>		25. दो गज़लें <i>सुश्री मनजीत शर्मा 'मीरा'</i>	88
14. रवीन्द्रनाथ टैगोर की नारी-केन्द्रित लघु कथा : पत्नी का पत्र <i>सुश्री सोमवती</i>	55	26. विश्व राष्ट्र <i>मुकेश कुमार सक्सेना</i>	89
15. मृत्युलोक की परिकल्पित संरचना <i>मेहरबान सिंह नेगी</i>	67	27. मानव जैसे मोबाइल बन गया <i>सुश्री राजश्री के. शाह</i>	90
16. हमेशा सीखते रहो <i>पवन कुमार</i>	74	28. सुख कहाँ है? <i>सुश्री पुनम शर्मा</i>	91
17. विरासत <i>अनिल कुमार शर्मा</i>	75	29. कभी सोचता हूँ <i>कुमार भास्कर</i>	93
<i>कविताएँ</i>		30. महानगर की जिंदगी <i>सुश्री प्रिया मिश्रा</i>	94
18. सावन <i>सुश्री इला सिंह</i>	76	31. आत्म-विश्वास <i>सुश्री मोनिका चौहान</i>	95
19. जीवन का सार <i>श्रीमती शुभा कुमार</i>	77	32. जलती हुई चिताओं से पूछे.... <i>रवि कान्त</i>	96
20. वापसी <i>सुश्री रश्मि अग्रवाल</i>	78	33. पिता <i>सुश्री मीनाक्षी</i>	97

स्वत्वाधिकार

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक

प्रकाशन

“लेखापरीक्षा प्रकाश”
(त्रैमासिक हिंदी पत्रिका)

प्रकाशक

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक
का कार्यालय, नई दिल्ली-110124

एक सौ छत्तीसवां अंक
(अप्रैल-जून, 2021)

पत्रिका परिवार

मुख्य संरक्षक

श्री गिरीश चंद्र मुर्मू
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक

संरक्षक

श्री जयंती प्रसाद
उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक

संपादक मण्डल

प्रधान संपादक

श्री राज कुमार
प्रधान निदेशक (राजभाषा)

संपादक

श्री अजीत सिंह
वरिष्ठ प्रशासन अधिकारी

सहायक संपादक

श्री हीरा बल्लभ भट्ट
सलाहकार

सुश्री अनामिका अंतिल
सहायक प्रशासन अधिकारी

रचना चयन समिति

श्री अनिल कुमार पिलानी
वरिष्ठ प्रशासन अधिकारी

सुश्री राजकुमारी शर्मा
सलाहकार

मुद्रक : आकांक्षा इम्प्रेसंस
जी-194, सेक्टर-2, बवाना, दिल्ली

मूल्य : राजभाषा के प्रति निष्ठा

नोट- पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं के साथ संपादक
मंडल का सहमत होना जरूरी नहीं है।

संपादकीय

‘लेखापरीक्षा प्रकाश’ अपनी अनवरत यात्रा पर अग्रसर है। पत्रिका का एक सौ छत्तीसवां अंक प्रकाशित होने जा रहा है। यह अंक विभिन्न स्तरों पर विभिन्न अधिकारियों/कर्मचारियों के सुयोग्य निर्देशन और अथक परिश्रम का परिणाम है। संविधान सभा द्वारा हिंदी को राजभाषा का दर्जा देने के बाद समय-समय पर विभिन्न नियम, अधिनियम पारित करके हिंदी के विकास के लिए कई सकारात्मक कदम उठाये गये हैं। निःसंदेह, इनसे हिंदी अपनी विकास यात्रा पर अग्रसर हुई है।

पत्रिका का मुख्य उद्देश्य भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के आदेशों और अनुदेशों का अनुपालन करते हुए अपने संगठन के कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए प्रचार करना है। काफी हद तक हम अपने उद्देश्य में सफल भी हो रहे हैं। हिंदी का प्रयोग तभी सफल होगा और सार्थक माना जायेगा जब इस देश के लोग अपनी राजभाषा को अनुवाद की शृंखलाओं से आजाद करेंगे। भाषाई आजादी की प्राप्ति का अन्तिम उद्देश्य यह है कि इस देश की स्वाधीनता का लाभ पंक्ति में खड़े अन्तिम व्यक्ति तक पहुंचे। किसी में कोई हिचक/झिझक या कमी न हो, सभी को समान अभिव्यक्ति एवं वार्तालाप का अवसर मिले। राष्ट्र का कोई व्यक्ति राष्ट्र के किसी व्यक्ति से अपरिचित इसलिए न रहे कि वे परस्पर संपर्क या संप्रेषण के लिए भाषाई बाधा का अनुभव कर रहे हैं। यदि हम आंकड़ों की बात करें तो कार्यालयीन प्रयोग में अवश्य ही राजभाषा का प्रयोग नियमानुसार कुछ प्रतिशत बढ़ा है परन्तु फिर भी हम लक्ष्य से पीछे हैं। हम इस राह पर अग्रसर हो रहे हैं और हमारे प्रयास से लक्ष्य अवश्य प्राप्त होगा। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हिंदी को दिल से अपनाएं। कार्यालय में काम करने के लिए हिंदी का प्रयोग करना एक अलग बात है परन्तु पत्रिका के लिए लिखना, स्व-उद्गारों को अभिव्यक्ति देना मानव हृदय को उजागर करता है। अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करने के लिए किसी भाषा का प्रयोग करना उस भाषा का मान बढ़ाना है और यदि वह भाषा आपकी राष्ट्रभाषा है तो आपका भी स्वाभिमान बढ़ता है।

अंत में मैं सभी रचनाकारों व पत्रिका प्रेमियों से अनुरोध करता हूँ कि भविष्य में भी पत्रिका में अपनी लेखनी का सहयोग निरंतर बनाये रखें।

जय भारत – जय भारती

आपका शुभाकांक्षी

अजीत सिंह

संपादक

नई दिल्ली

पाठकों के नाम पाती

प्रिय पाठकगण,

संपादक के नाम पत्र भेजने वाले 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के आदरणीय लेखकों, पाठकों एवं प्रसंशकों को मेरा सादर नमन। 'लेखापरीक्षा प्रकाश' का यह एक सौ छत्तीसवां (अप्रैल-जून, 2021) अंक आपके समक्ष रख रहा हूँ। मेरा नैतिक दायित्व बनता है कि अपने रचनाकार मित्रों की रचनाओं और पाठकों के पाठकीय की पावती दूँ। एक सौ छत्तीसवां अंक तक प्राप्त रचनाओं और पत्रों की संख्या बड़ी है। पाठकों के पत्र जो छप नहीं पाये उनके विषय में अधिक कुछ नहीं केवल इतना ही अनुरोध करूंगा कि आपकी कृपा दृष्टि से ही हमारी यह कृति सुधर सकती है। पत्र छपे न छपे आपके मार्गदर्शन की छाप जो हम पर छूट जाती है, वही कुछ हमारा पाथेय बन जाता है। लेखकगण अपने जीवन की अनुभूति व भाव प्रवण जो महसूस करते हैं उसे लेख, कविता व कहानियों के माध्यम से सभी के बीच बांटते हैं जिसके कारण सभी रचनायें अत्यंत रोचक एवं प्रशंसनीय बनती हैं। मैं इस पत्रिका के उन भागीदारों का जो अलग-अलग विषयों पर अपने लेख से सबका मन मोह लेते हैं तथा एक नई सोच देते हैं, उनका आभार व्यक्त करता हूँ।

जय भारत – जय भारती

नई दिल्ली

आपका शुभाकांक्षी

अजीत सिंह

संपादक

आपके पत्र

रचनाओं के मध्य छायाचित्र अत्यन्त सार्थक, सुन्दर एवं विषयानुकूल हैं।

ई मेल द्वारा 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ चौतीसवें अंक का ई-संस्करण प्राप्त हुआ है, एतदर्थ धन्यवाद। ई-पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं उच्चकोटि की हैं। रचनाओं के मध्य छायाचित्र अत्यन्त सार्थक, सुन्दर एवं विषयानुकूल हैं। 'राजभाषा हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन में दस 'प्र' की भूमिका', मातृभाषा साहित्य अभिरुचि की तथा ज्ञानवर्धक रचनाएं हैं वहीं 'आधुनिक युग में कबीर की प्रासंगिकता', 'इंसानियत', 'स्वागत है बेटी', हृदयस्पर्शी तथा भावनात्मक हैं। हास्यपुट से पूर्ण रचनाएं 'जीवन के सफर में...।', 'गजल', 'मेघ बनूं' पत्रिका की रोचकता को बढ़ा रही हैं। सार यह है कि पत्रिका जीवन के सभी रंगों को अपने में समाए हुए अत्यन्त सुरुचिपूर्ण, ज्ञानवर्धक, मनोरंजक हैं। उत्कृष्ट संयोजन एवं संपादन के लिए संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

उप महालेखाकार (प्रशासन)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हरियाणा, चण्डीगढ़

पत्रिका की साज-सज्जा हमेशा की तरह बेहद मनमोहक व उच्चकोटि की हैं तथा प्रत्येक पृष्ठ प्रेरणा पुंज का कार्य करता है।

हिंदी त्रैमासिक पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ चौतीसवें अंक के ई-संस्करण की प्रति प्राप्त हुई, इस हेतु आभार स्वीकार करें। पत्रिका की साज-सज्जा हमेशा की तरह बेहद मनमोहक व उच्चकोटि की है तथा प्रत्येक पृष्ठ प्रेरणा पुंज का कार्य करता है। पत्रिकाओं में संकलित सभी रचनाएं बेहद सराहनीय हैं। प्रकाशित रचनाओं में श्री गौरव हारिथ का लेख 'अर्थ-विज्ञान', श्री मेहरबान सिंह नेगी की कहानी 'दूसरी माटी के लोग', श्री शुभम वर्मा की कविता 'इंसानियत', एवं श्री केदारनाथ प्रसाद की कविता 'स्वागत है बेटी' बेहद प्रशंसनीय हैं। पत्रिका के सफल संपादन हेतु संपादक मण्डल को साधुवाद व पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

कल्याण अधिकारी (रा.भा.क.)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हक.)
राजस्थान, जयपुर

रचनाकारों द्वारा भिन्न-भिन्न क्षेत्रों के विषयों पर दी गई जानकारी बहुत ही सराहनीय है।

हिंदी ई-पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ चौतीसवें अंक की ई-प्रति वेबसाइट से डाउनलोड किया गया। पत्रिका की साज-सज्जा बहुत ही मनोहर है। पत्रिका में सम्मिलित रचनाएं अत्यंत रुचिकर होने के साथ-साथ बहुत ही उपयोगी एवं ज्ञानप्रद हैं। रचनाकारों द्वारा भिन्न-भिन्न क्षेत्रों के विषयों पर दी गई जानकारी बहुत ही सराहनीय हैं। पत्रिका में शामिल रचनाएं मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं से संबंधित होने के कारण पाठक पर अपना स्पष्ट प्रभाव डालती है। प्रकाशित रचनाओं में 'लॉकडाउन में क्रियाविधि का बदलता हुआ परिवेश', 'राजभाषा हिंदी का उद्देश्य', 'प्रस्थान', तथा 'मेघ बनूं' विशेषरूप से प्रशंसनीय हैं। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशा.)
कार्यालय महानिदेशक वाणि. लेखापरीक्षा
मुम्बई

पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख एवं कविताएं रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं।

त्रैमासिक हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ चौतीसवें अंक का ई-संस्करण प्राप्त हुआ, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख एवं कविताएं रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। विशेषकर श्री पंकज अरोरा की रचना 'हिंदी हमारी मातृभाषा', डॉ. सुमीत जैरथ, सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत

सरकार, नई दिल्ली का लेख 'राजभाषा हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन में दस 'प्र' की भूमिका' तथा श्री पवन कुमार का लेख 'युवा मन का दर्द' उल्लेखनीय एवं सराहनीय हैं। पत्रिका का मुख पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

वरि. उप महालेखाकार (ए.एम.जी./रा.भा.अधि.)
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-II,
महाराष्ट्र, नागपुर

पत्रिका में समाहित सभी रचनाओं में रचनात्मकता, सकारात्मकता तथा नवीनता को मार्मिक तरीके से प्रस्तुत किया गया है।

हिंदी त्रैमासिक पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ चौतीसवें अंक की प्राप्ति हुई, तदर्थ आपको बहुत-बहुत आभार। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक और संग्रहणीय हैं। पत्रिका में प्रकाशित किसी एक रचना की प्रशंसा करना, पत्रिका में प्रकाशित अन्य रचनाओं का अपमान करना होगा, क्योंकि पत्रिका में समाहित सभी रचनाओं में रचनात्मकता, सकारात्मकता तथा नवीनता को मार्मिक तरीके से प्रस्तुत किया गया है। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी (रा.भा.)
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-II,
राजस्थान, जयपुर

पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं उच्चकोटि की एवं वैविध्यपूर्ण हैं।

त्रैमासिक हिंदी गृह पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ चौतीसवें अंक के ई-संस्मरण की प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं उच्चकोटि की एवं वैविध्यपूर्ण हैं। विशेषकर 'राजभाषा हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन में दस 'प्र' की भूमिका', 'शिलांग - पूरब का स्कॉटलैंड', 'आधुनिक युग में कबीर की प्रासंगिकता', 'बंगाल', 'सपनों की उड़ान' रचनाएं अति सराहनीय एवं स्तरीय हैं। पत्रिका के आरंभिक पृष्ठ पर 'महात्मा गांधी की प्रतिमा पर दिए गए संदेश 'मेरा जीवन ही मेरा संदेश है' को हम सब भारतवासियों को अनुकरण करने एवं बापू के दिखाए गए पथ पर चलने के लिए प्रेरित करता है। उम्मीद करता हूँ कि आपकी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' अपने नवीनतम विचारों से हमें अवगत कराती रहेगी एवं भविष्य में भी राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपना योगदान देती रहेगी। 'लेखापरीक्षा प्रकाश' परिवार को पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं कुशल संपादन के लिए 'गोमती' पत्रिका परिवार की ओर से ढेर सारी शुभकामनाएं।

उप महालेखाकार (एएमजी-1 एवं प्रशा.)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
त्रिपुरा, अगरतला

पत्रिका का कलेवर भी अत्यंत आकर्षणीय है।

'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ चौतीसवें अंक की ई-पत्रिका की प्राप्ति हुई है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक हैं। साथ ही पत्रिका का

कलेवर भी अत्यंत आकर्षणीय है। श्री वीरेन्द्र कुमार यादव द्वारा रचित लेख 'शिलांग - पूरब का स्कॉटलैंड', श्री गौरव हारिथ का लेख 'अर्थ-विज्ञान', डॉ. पी.आर. वासुदेवन 'शेष' द्वारा रचित लेख 'आधुनिक युग में कबीर की प्रासंगिकता', श्री मेहरबान सिंह नेगी की कहानी 'दूसरी माटी के लोग', श्री उदय प्रताप सिंह की कविता 'मेघ बनूं', श्री केदार नाथ प्रसाद की कविता 'स्वागत है बेटा' एवं सुश्री मनजीत शर्मा 'मीरा' की 'गजल' सर्वाधिक रोचक एवं सराहनीय हैं। आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी कक्ष)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले.प.)-II,
पश्चिम बंगाल, कोलकाता

पत्रिका का बाहरी रंग रूप ही नहीं, आंतरिक सौंदर्य भी आकर्षित करता है।

ई-मेल के द्वारा कार्यालयीन त्रैमासिक हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ चौतीसवें अंक का ई-संस्करण सधन्यवाद प्राप्त हुआ। अंक पठनीय और उत्कृष्ट है। पत्रिका का आवरण एवं साज-सज्जा, सुंदर एवं लुभावना है। उसका बाहरी रंग रूप ही नहीं, आंतरिक सौंदर्य भी आकर्षित करता है। डॉ. सुमित जैरथ का लेख 'राजभाषा हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन में दस 'प्र' की भूमिका', श्री मेहरबान सिंह नेगी की कहानी 'दूसरी माटी के लोग', एवं सुश्री मनजीत शर्मा 'मीरा' की 'गजल' काफी रोचक, सराहनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं। सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका इसी प्रकार

निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे, ऐसी हमारी शुभकामना है।

वरि. लेखाधिकारी (हिंदी कक्ष)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. एवं हक.)
बिहार, पटना

समग्र रूप से पत्रिका अत्यंत प्रभावी है।

‘लेखापरीक्षा प्रकाश’ पत्रिका के एक सौ चौतीसवें अंक को ई-पत्रिका के रूप में अग्रेषित करने हेतु हार्दिक धन्यवाद। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं हमारे भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग के सदस्यों की सृजनात्मकता को बढ़ावा देती है। सभी रचनाएं सुरुचिपूर्ण तथा ज्ञानप्रद हैं। विशेषरूप से श्री लाखा राम कृत ‘कोरोना मानव जाति के लिए श्राप या सीख परन्तु प्रकृति के लिए वरदान’ अत्यंत ज्ञानवर्धक है, श्री पवन कुमार कृत ‘युवा मन का दर्द’ अत्यंत मर्मस्पर्शी है, श्री विजय कुमार गर्ग कृत ‘गुड्डे-गुडिया की शादी’ बचपन की यादें वापस लाता है एवं श्री मेहरबान सिंह नेगी कृत ‘दूसरी माटी के लोग’ यथार्थता को स्पष्ट करने वाला है। समग्र रूप से पत्रिका अत्यंत प्रभावी है। इस पत्रिका के प्रकाशन में योगदान देने वाले सभी को बधाईयां एवं शुभकामनाएं।

उप निदेशक (प्रशासन)
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा, केन्द्रीय
चेन्नै

रचनात्मकता से परिपूर्ण पत्रिका का मुखपृष्ठ अत्यंत ही मनोरम व आकर्षक है।

त्रैमासिक हिंदी पत्रिका ‘लेखापरीक्षा प्रकाश’ के एक सौ चौतीसवें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। रचनात्मकता से परिपूर्ण पत्रिका का मुखपृष्ठ अत्यंत ही मनोरम व आकर्षक है। पत्रिका की सभी रचनाएं

रुचिकर, ज्ञानवर्धक एवं संग्रहणीय हैं। श्री संजीव कुमार द्वारा रचित ‘राजभाषा हिंदी का उद्देश्य’, श्री पंकज अरोरा द्वारा रचित ‘हिंदी हमारी मातृभाषा’, श्री केदार नाथ प्रसाद द्वारा रचित ‘स्वागत है बेटी’, श्री पवन कुमार द्वारा रचित ‘युवा मन का दर्द’ आदि रचनाएं सराहनीय हैं। इस अंक में हमारे कार्यालय के हिंदी अधिकारी श्री उदय प्रताप सिंह की रचना ‘मेघ बनूं’ को भी स्थान मिला है, इसके लिए मैं आपका हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ एवं अत्यंत गौरवान्वित महसूस कर रही हूँ।

वरि. लेखाधिकारी (मा.सं.वि.)
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक.)
कर्नाटक, बैंगलूर

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना सहित प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं।

हिंदी ई-पत्रिका ‘लेखापरीक्षा प्रकाश’ के एक सौ चौतीसवें अंक की प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं उच्चकोटि की हैं। विशेषकर श्री वीरेन्द्र कुमार यादव द्वारा लिखित लेख ‘शिलांग-पूरब का स्कॉटलैण्ड’, सुश्री राजकुमारी शर्मा द्वारा लिखित लेख ‘लॉकडाउन में क्रियाविधि का बदलता हुआ परिवेश’, श्री विजय कुमार गर्ग द्वारा लिखित कहानी ‘गुड्डे-गुडिया की शादी’, श्री अनिल कुमार शर्मा द्वारा लिखित कहानी ‘आवारा’ अत्यंत रोचक, ज्ञानवर्धक, मनोरंजक, पठनीय एवं सराहनीय हैं। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना सहित प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं।

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
उत्तराखण्ड, देहरादून

योग का महत्व



सुश्री अनामिका अंतिल
सहायक प्रशासन अधिकारी
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक
का कार्यालय, नई दिल्ली

योग का जन्म प्राचीन भारत में हजारों साल पहले हुआ था, पहले धर्म या विश्वास प्रणाली का जन्म हुआ था। ऐसा माना जाता है कि शिव प्रथम योगी या आदियोगी और प्रथम गुरु हैं। हजारों साल पहले, हिमालय में कांतिसरोवर झील के तट पर, आदियोगी ने अपने ज्ञान को महान सात ऋषियों में साझा किया था, क्योंकि उनके सभी ज्ञान और ज्ञान को एक व्यक्ति में रखना कठिन था। ऋषियों ने इस शक्तिशाली योग विज्ञान को एशिया, उत्तरी अफ्रीका, मध्य पूर्व और दक्षिण अमेरिका सहित दुनिया के विभिन्न हिस्सों में ले गए। भारत अपनी संपूर्ण अभिव्यक्ति में योग प्रणाली को पाकर धन्य है।

योग व्यायाम का एक प्राचीन रूप है, जो भारतीय समाज में हजारों

साल पहले विकसित हुआ था और तब से लगातार इसका अभ्यास किया जा रहा है। इसमें किसी व्यक्ति को अच्छे आकार में रखने के लिए और बीमारियों और अक्षमताओं के विभिन्न रूपों से छुटकारा पाने के लिए विभिन्न प्रकार के अभ्यास शामिल हैं। यह ध्यान के लिए एक मजबूत तरीका भी माना जाता है जो मन और शरीर को शांत करने में मदद करता है।

शब्द “योग” संस्कृत से शब्द “युज” बना है, इसका अर्थ एकजुट होना और “संघ” है। उपनिषद, महाकाव्य, पुराण और योग सूत्र ने ‘योग’ शब्द का प्रयोग शरीर, इंद्रियों, दिमाग और बुद्धि को एकजुट और नियंत्रित करने के अर्थ से किया है। यह सार्वभौमिक

चेतना के साथ व्यक्तिगत चेतना का मिलन है। योग 5000 साल पुराना भारतीय दर्शन है। इसका उल्लेख सबसे पुराने पवित्र ग्रंथ में किया गया था – ऋग्वेद (वेद मंत्रों, आध्यात्मिक जानकारी, गीतों और अनुष्ठानों से युक्त ग्रंथों का एक संग्रह था) जिसका उपयोग ब्राह्मण, वैदिक पुरोहित करते थे।

भारतीय समाज में हजारों वर्षों से योग का अभ्यास किया जा रहा है। योग करने वाला व्यक्ति एक आसन से दूसरे आसन की ओर बढ़ेगा। योग उन लोगों को फायदा पहुंचाता है जो इसका नियमित अभ्यास करते हैं।

योग में किए गए अभ्यास के रूप को ‘आसन’ कहा जाता है जो शरीर और मन की स्थिरता लाने में

सक्षम हैं। योग आसन हमारे अतिरिक्त वजन को कम करने और फिट रखने का सबसे सरल और आसान तरीका है।

किसी भी व्यक्ति को सुखी एवं स्वस्थ रखने में योग अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। योग करने से व्यक्ति शारीरिक और मानसिक रूप से फिट रहता है। युवा हो या फिर बुजुर्ग सभी के जीवन में योग सामान रूप से लाभकारी है।

योग करने के कुछ नियम होते हैं, जिन पर जरूर ध्यान देना चाहिए, अन्यथा आप इसका फायदा नहीं उठा सकेंगे –

- योग को सुबह सूर्योदय के बाद करना एवं सूर्यास्त से पहले करना चाहिए।
- योग करने से पहले इसे सीखना बेहद आवश्यक है, अर्थात् योग, गुरु की निगरानी में ही किया जाना चाहिए।
- योग को हमेशा विशेषज्ञ की सलाह लेकर करना चाहिए।
- कभी खाना खाने के बाद योग नहीं करना चाहिए, खाली पेट योग करना चाहिए। योग करने

से करीब 2–3 घंटे पहले से कुछ नहीं खाना चाहिए।

- योग करने के करीब आधा घंटे बाद ही कुछ खाना चाहिए।
- योग करते समय सही तरह से श्वास छोड़ना अथवा लेना आना चाहिए।
- अगर योग करने की शुरुआत कर रहे हैं, तो कठिन आसनों एवं व्यायाम से शुरुआत न करें, इसके साथ ही धीमे-धीमे योग करने की क्षमता बढ़ाएं, शुरुआती दिनों में अपने शरीर के अंगों के साथ जबरदस्ती नहीं करनी चाहिए।
- कॉटन व आरामदायक कपड़े पहनकर योग करना चाहिए।
- योग अभ्यास, किसी दरी अथवा चटाई पर बैठकर किए जाने चाहिए।
- योग का लाभ मिलना धीरे-धीरे शुरू होता है, इसलिए धैर्य के साथ योगाभ्यास को किया जाना चाहिए, जल्दी परिणाम की इच्छा नहीं करनी चाहिए।

योग आसन हमेशा से योगिक संस्कृति में एक महत्वपूर्ण चर्चा

रही है। योग के वास्तविक और पारंपरिक वर्गीकरण में कर्म योग, ज्ञान योग, भक्ति योग और क्रिया योग सहित चार मुख्य मार्ग शामिल हैं।

योग का वर्गीकरण :

योग के चार मुख्य मार्गों पर एक नजर डालते हैं –

कर्मा योग – इसे पश्चिमी संस्कृति में अनुशासन के कार्य 'के रूप में भी जाना जाता है। यह रूप योग के चार आवश्यक मार्गों में से एक है। यह फल से जुड़े बिना या निस्वार्थ गतिविधियों और कर्तव्यों को पूरा करने के बिना किसी के कर्तव्य को करना सिखाता है। यह मुख्य पाठ है जो कर्म योगियों को सिखाया जा रहा है।

यह उन लोगों के लिए है जो आध्यात्मिक मार्ग की तलाश करते हैं और भगवान के साथ मिल जाते हैं। इनाम की उम्मीद किए बिना ईमानदारी से एक के कर्तव्य का पालन करके हमारे नियमित जीवन में इसका अभ्यास किया जा सकता है। यह आध्यात्मिक विकास का मार्ग है।

मूलतः कर्म वह क्रिया है जो हम करते हैं और उसके बाद की

प्रतिक्रिया। व्यक्ति का जीवन उसके कर्म चक्र द्वारा नियंत्रित होता है, जिसमें यदि किसी व्यक्ति के अच्छे विचार, अच्छे कार्य और अच्छे शब्द हैं, तो वह एक खुशहाल जीवन जीएगा, जैसे कि यदि किसी व्यक्ति के बुरे विचार, बुरे कार्य और बुरे शब्द हैं, तो वह एक व्यक्ति का नेतृत्व करेगा तो उसका जीवन दुखी और कठिन होगा। आज की दुनिया में इस तरह के निस्वार्थ जीवन का नेतृत्व करना बहुत मुश्किल है क्योंकि मानव श्रम के फल से ग्रस्त हैं। यही कारण है कि हम उच्च तनाव, मानसिक बीमारी और अवसाद जैसी समस्याओं का सामना कर रहे हैं। कर्म योग सभी भौतिकवादी मार्गों से छुटकारा पाने और एक सुखी और संतुष्ट जीवन जीने की शिक्षा देता है।

जनाना योगा — इसे 'बुद्धि योग' के रूप में भी जाना जाता है। यह सभी के बीच बहुत कठिन और जटिल रास्ता है। यह एक व्यक्ति को विभिन्न मानसिक तकनीकों का गहन अंतःकरण मन में ध्यान देकर और स्व प्रश्न सत्र आयोजित करके आंतरिक आत्म के साथ विलय करना सिखाता है। यह एक व्यक्ति

को स्थायी जागरूक और अस्थायी भौतिकवादी दुनिया के बीच अंतर करने के लिए कहता है। यह मार्ग 6 मौलिक गुणों — शांति, नियंत्रण, त्याग, सहनशीलता, विश्वास और फोकस पर ध्यान केंद्रित करके मन और भावनाओं को स्थिर करना सिखाता है। लक्ष्य प्राप्त करने और इसे सर्वश्रेष्ठ तरीके से करने के लिए अक्सर एक सक्षम गुरु के मार्गदर्शन में ज्ञान योग का अभ्यास करने की सलाह दी जाती है।

भक्ति योग — 'आध्यात्मिक या भक्ति योग' के रूप में भी जाना जाता है। यह ईश्वरीय प्रेम से जुड़ा हुआ है क्योंकि यह प्रेम और भक्ति के माध्यम से आध्यात्मिक ज्ञान का सबसे बड़ा मार्ग है। इस मार्ग में एक व्यक्ति भगवान को प्रेम की सर्वोच्च अभिव्यक्ति और अवतार के रूप में देखता है। इसकी मुख्य विशेषताएं हैं — स्वामी के नाम का जाप करना, उनकी प्रशंसा या भजन गाना और पूजा और अनुष्ठान में संलग्न होना।

यह सबसे आसान और सबसे लोकप्रिय है। भक्ति योग से मन और हृदय की शुद्धि होती है और इसे कई मानसिक और शारीरिक

योग प्रथाओं द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। यह विपरीत परिस्थितियों में भी साहस देता है। यह मूल रूप से दयालु भावना विकसित कर रहा है और शुद्ध दिव्य प्रेम के साथ आंतरिक स्वयं को शुद्ध करने पर ध्यान केंद्रित कर रहा है।

क्रिया योग — यह शारीरिक अभ्यास है जिसमें शरीर के कई आसन ऊर्जा और सांस नियंत्रण या प्राणायाम की ध्यान तकनीकों के माध्यम से किए जाते हैं। इसमें शरीर, मन और आत्मा का विकास होता है। क्रिया योग का अभ्यास करने से कुछ ही समय में पूरी मानव प्रणाली सक्रिय हो जाती है।

सभी आंतरिक अंग जैसे यकृत, अग्न्याशय आदि सक्रिय होते हैं। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए आवश्यक हार्मोन और एंजाइम स्रावित होते हैं। रक्त ऑक्सीजन की उच्च मात्रा को अवशोषित करता है और जल्दी से डी-कार्बोनेटेड हो जाता है जो सामान्य रूप से अच्छी तरह से मदद करता है और मनोदैहिक रोगों की संख्या से बचा जाता है। सिर में अधिक परिसंचरण के माध्यम से, मस्तिष्क

की कोशिकाएं सक्रिय होती हैं, मस्तिष्क की कार्य क्षमता में वृद्धि होती है और याददाश्त तेज होती है और व्यक्ति आसानी से थक नहीं पाता है।

योग, एक अद्भुत क्रिया है, जिसके द्वारा मनुष्य अपने मन और मस्तिष्क को नियंत्रण में रख सकता है। वहीं आज जिस तरह का मनुष्य की जीवनशैली हो गई है, उसमें योग के माध्यम से ही संतुलन बनाया जा सकता है। मन-शरीर के संबंध को संतुलित करके प्रकृति से जुड़ने के लिए योग सबसे अनुकूल विधि है। यह

एक प्रकार का व्यायाम है जो संतुलित शरीर के माध्यम से किया जाता है और आहार, श्वास और शारीरिक मुद्राओं पर नियंत्रण पाने की आवश्यकता होती है। यह शरीर के विश्राम के माध्यम से शरीर और मन के ध्यान से जुड़ा हुआ है।

योग का हर किसी के जीवन में बेहद महत्व है, वहीं इसके अनगिनत लाभों के चलते इसकी लोकप्रियता आज विश्व स्तर पर है। लाखों लोगों को योग के माध्यम से अपने रोगों को दूर करने में सहायता मिली है। वहीं एक सर्वे

के मुताबिक दुनिया में 2 अरब से भी ज्यादा लोग रोजाना योगाभ्यास करते हैं। इसलिए योग के महत्व के प्रति जागरूक करने और नियमित रूप से लोगों को योग के प्रति प्रोत्साहित करने के लिए भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के द्वारा साल 2015 में 21 जून को अंतराष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की गई थी।

विश्व योग दिवस के मौके पर जगह-जगह योग कैंप का आयोजन करवाया जाता है और योग के सही तरीकों एवं इसके महत्व के बारे में लोगों को अवगत करवाया जाता है।



लेखापरीक्षा की सार्थकता व अनुभव



दया सागर
वरिष्ठ लेखापरीक्षक
ले.प. प्रबन्धक समूह-II,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले.प.)
हिमाचल प्रदेश, शिमला

लेखापरीक्षा एक बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य है। लेखापरीक्षा का कार्य ये सुनिश्चित करना है कि सरकारी धन जिस कार्य के लिए दिया गया है, उसी कार्य में, सरकार द्वारा निर्देशित नियमों के अनुसार लगाया गया है ताकि देश को उसका लाभ मिल सके। सीमित शक्तियों और समय के कारण लेखापरीक्षा का कार्य बड़ा ही चुनौती पूर्ण है। एक दिन में 200 से 500 पेजों की फाइल पढ़ना तथा उसमें त्रुटियाँ तलाशना कितना कठिन कार्य है और छह से आठ दिनों में कितनी फाइलें पढ़ी जा सकती हैं, ये तो सभी पढ़ने वाले समझ सकते हैं। लेखापरीक्षा के दौरान लेखापरीक्षा दल को एक सीमित समय में फाइलों और दस्तावेजों का अध्ययन करके उनमें अनियमितताएं खोजनी पड़ती है तथा ऑडिट मेंमों के माध्यम से सरकारी विभागों को सूचित करना पड़ता है। विभागों को सुधार या वसूली के लिए नियमानुसार अनुपालना करने को कहा जाता है, जिससे सरकार के अरबों रूपयों द्वारा अनियमितताओं को सुधारा जाता है तथा सरकारी धन की वसूली की जाती है।

इसके अलावा लेखापरीक्षा दल को अपने परिवार से दूर रहकर अपने कर्तव्यों का निर्वाह करना पड़ता है।

लगभग पूरे साल ही लेखापरीक्षा दल को दौरे पर रहना पड़ता है और महीने-दो महीने के बाद ही वे अपने परिवार व बच्चों से मिलते हैं। इस प्रकार परिवार से दूर रहकर लेखापरीक्षा दल अपने कर्तव्यों का निर्वाह करके त्याग और सेवा का परिचय देते हैं।

प्रत्येक छह से आठ दिनों में पथ परिवहन के द्वारा यात्रा करके उन्हें एक स्थान से दूसरे स्थान, एक जिले से दूसरे जिले जाना पड़ता है। मतलब उन्हें बंजारों की तरह सामान उठाकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमना पड़ता है। उन्हें हमेशा छुट्टी के दिन ही यात्रा करनी पड़ती है, इस कारण उन्हें उचित आराम नहीं मिल पाता। इसके अलावा घर से दूर रहने और सीमित संसाधनों के कारण उन्हें निजी कार्यों, व्यायाम और मनोरंजन के लिए भी समय नहीं मिल पाता।

रोज होटलों या कैंटीन में ज्यादा तेल और मसालों से युक्त खाना खाने की वजह से उनके शरीर पर गलत प्रभाव पड़ता है। इस कारण उन्हें मधुमेह, उच्च रक्तचाप तथा मोटापे जैसी बीमारियाँ होने की संभावना हो सकती है। कभी-कभी रहने की उचित व्यवस्था न होने के कारण उन्हें असमंजस की अवस्था में कार्य करना पड़ता है।

वर्तमान में लेखापरीक्षा का रूप तर्कसंगत नहीं है तथा कई बार तो अधिक दूरी तथा सीमित शक्तियों के कारण निरीक्षण हेतु सूचना मिलने में बहुत कठिनाई होती है। छोटे प्रदेशों में लेखापरीक्षा का केवल एक ही कार्यालय है और बड़े प्रदेशों में दो या तीन कार्यालय हैं। उन्हीं कार्यालयों में कार्यरत अधिकारियों और कर्मचारियों के द्वारा राज्य के प्रत्येक जिले में लेखापरीक्षा की जाती है। जिसके लिए उन्हें प्रत्येक जिले के सरकारी कार्यालयों में जाना पड़ता है। इसके लिए सरकार को यात्रा भत्तों और दैनिक भत्तों के लिए काफी धन व्यय करना पड़ता है।

मेरे पास कुल व्यय के अधिकारिक आंकड़े तो नहीं हैं, पर एक अनुमान के आधार पर मैंने यात्रा भत्तों और दैनिक भत्तों की गणना की है। लेखापरीक्षा के एक दल में लगभग तीन सदस्य होते हैं, जिनका दैनिक व्यय का विवरण इस प्रकार है :-

पद	भोजन पर व्यय	होटल में रहने के लिए व्यय	औसत दैनिक यात्रा भत्ता	कुल दैनिक व्यय
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	900	900	100	1900
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	800	800	100	1700
वरिष्ठ लेखापरीक्षक	800	800	100	1700

अगर लेखापरीक्षा विभाग के कुल 21000 लेखापरीक्षक साल में 200 दिन दौरे पर रहते हैं तो तीन लेखापरीक्षकों के एक दल के हिसाब से कुल 7000 दल बनते हैं, जिनका 200 दिन का व्यय

$5300 \times 7000 \times 200 = 742,00,00,000$ यानि की 742 करोड़ रुपये बनता है। अगर इसमें से हर साल औसतन 450 करोड़ रुपये भी व्यय हो रहे हैं, तब भी ये एक बहुत बड़ी राशि है। अगर ऑनलाइन लेखापरीक्षा की व्यवस्था कर दी जाये तो हर साल 450 करोड़ रुपये के खर्च को बचाया जा सकता है या प्रत्येक जिले में कार्यालय बनाकर इस व्यय के द्वारा सरकार अचल सम्पत्ति का निर्माण कर सकती है। औसतन 1.5 करोड़ रुपये का व्यय करके सभी सुविधाओं से युक्त चार या पांच कमरों का कार्यालय आसानी से बनाया जा सकता है और 450 करोड़ रुपये में लगभग 300 कार्यालय बनाये जा सकते हैं। ढाई साल के यात्रा भत्तों और दैनिक भत्तों का व्यय, जोकि लगभग 1125 करोड़ रुपये होता है, जिससे 750 कार्यालय आसानी से बनाए जा सकते हैं। भारत में लगभग 750 जिले हैं यानि की ढाई साल के यात्रा भत्तों और दैनिक भत्तों के व्यय से प्रत्येक जिले में एक लेखापरीक्षा कार्यालय स्थापित किया जा सकता है।

ऐसा करने से सरकार के हर साल 450 करोड़ रुपये बचेंगे तथा ढाई साल के यात्रा भत्तों और दैनिक भत्तों के व्यय से सरकार 1125 करोड़ रुपये की अचल सम्पत्ति का निर्माण कर सकेगी। इसके साथ ही लेखापरीक्षा दल की कर्तव्यों, निजी और स्वास्थ्य सम्बन्धी कई परेशानियों का भी निदान किया जा सकता है और वो अपने परिवार व बच्चों के प्रति अपनी जिम्मेदारियों का निर्वाह भी कर सकेंगे। सबसे महत्वपूर्ण लाभ यह होगा कि लेखापरीक्षा का कार्य भी पूर्ण दक्षता के साथ किया जा सकेगा तथा प्रदेश के विभागों से किसी भी प्रकार की सूचना आसानी से प्राप्त की जा सकेगी और लेखापरीक्षा प्रतिवेदनों की गुणवत्ता को भी बेहतर किया जा सकेगा ताकि देश को प्रगति के पथ पर अग्रसर करने में भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग अधिक से अधिक योगदान दे सकें।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय : राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के चिंतक और संगठनकर्ता एवं एकात्म मानववाद के प्रणेता



सुश्री सं.ग. श्रीमती
सेवानिवृत्त (हि.अ.)
सं. 135, न्यू वी.ई.एल. रोड
एजीज लेआउट,
बैंगलूर-560094

पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने भारत की सनातन विचारधारा को युगानुकूल रूप में प्रस्तुत करते हुए देश को एकात्म मानववाद नामक विचारधारा दी। उनकी विचारधारा थी, भारत को एक सशक्त और मजबूत राष्ट्र बनाना। राजनीति के अतिरिक्त, साहित्य में भी उनकी गहरी अभिरुचि थी।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का जन्म 25 सितम्बर, 1916 को मथुरा जिले के नगला चन्द्रभान ग्राम में हुआ। उनके पिता का नाम भगवती प्रसाद उपाध्याय था जो नगला चंद्रभान (फरह, मथुरा) के निवासी थे। उनकी माता रामप्यारी थी, जो धार्मिक प्रवृत्ति की थी। दीनदयाल 3 वर्ष के भी नहीं हुए थे, उनके पिता का देहांत हो गया। इससे माता रामप्यारी का जीवन

अन्धकारमय हो गया। 8 अगस्त, 1924 को उनका भी देहावसान हो गया। उस समय दीनदयाल 7 वर्ष के थे। 19 वर्ष की अवस्था तक उपाध्यायजी ने मृत्यु दर्शन से गहन साक्षात्कार कर लिया। फिर, उन्होंने कल्याण हाईस्कूल, सीकर, राजस्थान से दसवीं की परीक्षा में बोर्ड में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

1937 में पिलानी से इंटरमीडिएट की परीक्षा में, प्रथम स्थान प्राप्त किया। 1939 में कानपुर के सनातन धर्म कालेज से बी.ए. की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। मामाजी के बहुत आग्रह पर, उन्होंने प्रशासनिक परीक्षा दी, उसमें वे उत्तीर्ण भी हुए, लेकिन अंग्रेज सरकार की नौकरी नहीं



जिंदगी में विविधता व
बहुलता है पर हमने
हमेशा इसके पीछे की
एकता को खोजने
का प्रयास किया है।

-पं. दीनदयाल उपाध्याय

की। 1937 में जब वह कानपुर से बी.ए. कर रहे थे, अपने सहपाठी बालूजी महाशब्दे की प्रेरणा से राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के संपर्क में आए। संघ के संस्थापक डॉ. हेडगेवार का सान्निध्य कानपुर में ही मिला। उपाध्याय जी आजीवन संघ के प्रचारक रहे। संघ के माध्यम से ही उपाध्याय जी राजनीति में आए। 21 अक्टूबर, 1951 को डॉ. श्याम प्रसाद मुखर्जी की अध्यक्षता में भारतीय जनसंघ की स्थापना हुई। 1952 में इसका प्रथम अधिवेशन कानपुर में हुआ। उपाध्याय जी इस दल के महामंत्री बने। इस अधिवेशन में पारित 15 प्रस्तावों में से 7 उपाध्याय जी ने प्रस्तुत किए। डॉ. मुखर्जी ने उनकी कार्यकुशलता और क्षमता से प्रभावित होकर कहा "यदि मुझे दो दीनदयाल मिल जाएं, तो मैं भारतीय राजनीति का नक्शा बदल दूँ।" 1967 तक उपाध्याय जी भारतीय जनसंघ के महामंत्री रहे। 1967 में कालीकट अधिवेशन में उपाध्याय जी भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। वे 43 दिन मात्र जनसंघ के अध्यक्ष रहे। 11 फरवरी 1968 की रात्रि में मुगलसराय स्टेशन पर उनकी हत्या कर दी गई। शव प्लेटफार्म

पर रखा गया तो लोगों की भीड़ से चिल्लाहट सुनाई पड़ी "अरे, यह तो भारतीय संघ के अध्यक्ष दीनदयाल उपाध्याय हैं।" पूरा देश शोक सागर में डूब गया।

दीनदयाल उपाध्याय जनसंघ के राष्ट्रजीवन दर्शन के निर्माता माने जाते हैं। उन्हें जनसंघ की आर्थिक नीति का रचनाकार माना जाता है। उनका विचार था कि आर्थिक विकास का मुख्य उद्देश्य सामान्य मानव का सुख है।

संस्कृति निष्ठा उपाध्याय के द्वारा निर्मित राजनैतिक जीवन दर्शन का प्रथम सूत्र है। उनके शब्दों में – "भारत में रहने वाला और उसके प्रति ममत्व की भावना रखने वाला मानव समूह एक जन है। उनकी जीवन प्रणाली, कला, साहित्य, दर्शन सब भारतीय संस्कृति है। अतः भारतीय राष्ट्रवाद का आधार वह संस्कृति है। इस संस्कृति में निष्ठा रहे, तभी भारत एकात्म होगा।"

उपाध्याय जी पत्रकार होने के साथ-साथ, चिंतक और लेखक भी थे। उनकी कुछ प्रमुख कृतियों के नाम नीचे दिए गए हैं –

1. दो योजनाएं

2. राजनीतिक डायरी
3. भारतीय अर्थनीति का अवमूल्यन
4. सम्राट चन्द्रगुप्त
5. जगद्गुरु शंकराचार्य
6. एकात्म मानववाद
7. राष्ट्रजीवन की दिशा
8. एक प्रेम कथा

"एकात्म मानववाद" मानव जीवन व संपूर्ण सृष्टि के एकमात्र संबंध का दर्शन है। इसका वैज्ञानिक विवेचन पंडित दीनदयाल ने किया है। एकात्म मानववाद राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का मार्गदर्शक दर्शन है। इसकी तुलना साम्यवाद, समाजवाद, पूँजीवाद से नहीं की जा सकती। इसे एक वाद के रूप में भी नहीं देखना चाहिए। इसे एकात्म मानव दर्शन कह सकते हैं। एकात्म मानववाद के अनुसार, सभी एक-दूसरे से जुड़कर अपना अस्तित्व साधते हुए एक-दूसरे के पूरक एवं स्वाभाविक सहयोगी हैं।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जैसे महान देशभक्त को जन्म देकर भारतमाता धन्य है। आईए, हम सब पंडित जी की असामयिक मृत्यु पर श्रद्धांजलि दें।

आई.सी.ई.डी. जयपुर के राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के ‘कचरा प्रबंधन’ विषय पर प्रेरणादायी संस्मरण



मुनीष भाटिया
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले.प.)
हरियाणा, चण्डीगढ़-160020

आधुनिक भारत में बदलती जीवनशैली, अनियोजित शहरीकरण और औद्योगिकरण के फलस्वरूप देश के नगर निकायों के लिए कचरे के निपटान की समस्या एक भयंकर समस्या बनकर उभर रही है। भारत में नगरपालिका क्षेत्र में ठोस कचरे की संरचना में बायोडिग्रेडेबल, प्लास्टिक, कागज एवं अन्य जिसमें कपड़ा, कांच धातु, नाली गाद, सड़क की सफाई इत्यादि का कचरा शामिल है। भारतीय शहरों में गीले कचरे का मिश्रण दीर्घ काल तक रहता है। कचरे के सुरक्षित निपटान के लिए लैंडफिल विकसित करने के लिए सरकार द्वारा भूमि निर्धारित की गई है। इन लैंडफिल स्थानों में कचरे के ढेर वातावरण में कार्बनिक पदार्थ का निरंतर अपघटन करते रहते हैं और ग्लोबल वार्मिंग में बढ़ावा

दे रहे हैं। मुझे इंटरनेशनल सेंटर फॉर एनवायरनमेंट ऑडिट एंड सस्टेनेबल डेवलपमेंट (आई.सी.ई.डी.) जयपुर के राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के तहत वर्ष 2019 में कचरा प्रबंधन के कार्यक्रम में भाग लेने का अवसर प्राप्त हुआ। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में कचरा प्रबंधन के सम्बन्ध में किये गये सराहनीय प्रयासों से संबंधित आख्यान के संस्मरण इस आलेख के माध्यम से सांझे किये जा रहे हैं। प्रशिक्षण कार्यक्रम में आख्यान के दौरान श्री रामदास कोकारे ने इस अवधारणा को प्रबल किया कि बढ़ते औद्योगिकरण के दौर में आज कचरा प्रबंधन समय की मांग हो गयी है क्योंकि आज विश्व में ये अवधारणा प्रबल हो चली है कि ‘waste is not waste’।

आज भारत में एक लैंडफिल के

बारे में सोचें तो दिमाग में कूड़े का विशाल ढेर, जहरीली बदबू, आकाश में मंडराने वाले पक्षियों के झुंड और कूड़ा बीनने वाले की तस्वीर उभर कर सामने आती है। डंपिंग ग्राउंड को अपने तरह का विहंगम पार्क का रूप किस तरह से प्रदान किया जा सकता है। लेकिन आई.सी.ई.डी. जयपुर में प्रस्तुत किये गये महाराष्ट्र के सिंधुदुर्ग जिले के वेंगुरला तालुका बारे के चित्रण से पता चला कि डंपिंग ग्राउंड को अपने तरह का विहंगम पार्क का रूप भी प्रदान किया जा सकता है जोकि आज हर साल लाखों पर्यटकों का गवाह बना हुआ है। स्वच्छ भारत अपशिष्ट पार्क के रूप में नामित इस लैंडफिल को नगर पालिका के अधिकारियों के सहयोग से एक सुंदर पर्यटक आकर्षण में बदल दिया गया है। इसी तरह के डंपिंग ग्राउंड को

खेल का मैदान एवं पार्क में बदलने का काम विभिन्न शहरों में बढ़ चला है। इन शहरों में डंपिंग ग्राउंड के स्वरूप बदलने से पूर्व कचरे के उचित निपटान व सुप्रबंधन के फलस्वरूप ही कचरे को लेकर एक क्रान्ति की शुरुआत संभव हो पाई है।

मिश्रित कचरे का कुप्रबंधन ही है जोकि ग्लोबल वार्मिंग के लिए भी जिम्मेदार बना हुआ है। इस समस्या को हल करने के लिए पहले तो शहरों में प्लास्टिक के उपयोग को समाप्त करना होगा और प्लास्टिक कैरी बैग पर प्रतिबंध लगा कर, नागरिकों द्वारा पेपर बैग के प्रयोग को अनिवार्य करना होगा। एकल-उपयोग वाली प्लास्टिक वस्तुओं पर प्रतिबंध लगाना होगा एवं विक्रेताओं और दुकानदारों को कुछ

घंटे के लिए प्लास्टिक का उपयोग बंद करने के लिए उत्प्रेरित करना होगा। इसकी शुरुआत सरकारी भवन परिसरों से आरम्भ करनी होगी तथा सरकारी भवनों में प्लास्टिक की कोई भी वस्तु का प्रवेश निषेध करना होगा।

सोशल मीडिया द्वारा व अन्य प्रचार माध्यम से नगर वासियों को कचरे को अलग-अलग श्रेणियों में बांटने का आदेश देकर उसकी अनुपालना सुनिश्चित करनी होगी यथा (i) प्लास्टिक कचरा (ii) गीला या रसोई का कचरा, कागज (iii) कार्डबोर्ड, टेट्रा पैक, रबड़, कपड़ा, पत्ती का कचरा, मृत लकड़ी (iv) कांच और बोतलें, एल्युमिनियम सहित धातुएं, लोहा और टिन। इसके अलावा एक टोल फ्री नंबर और व्हाट्सएप ग्रुप बनाने में निकायों को अपने नगरवासियों

को प्रेरित करना होगा जिससे लोगों की शिकायतों को सुनने और कचरा संग्रहण, खुले नालों और कूड़े के ढेरों के बारे में शिकायतें सुनी जा सकें। ग्लास और धातु को अलग-अलग स्रोत पर एकत्र किया जा सकता है और डंपिंग साइट पर संग्रहीत किया जा सकता है जोकि क्रेताओं को बेचा जा सकता है एवं बचत करके लागत वसूल होनी आरम्भ हो सकती है।

इस तरह इंटरनेशनल सेंटर फॉर एनवायरनमेंट ऑडिट एंड सस्टेनेबल डेवलपमेंट (आई.सी.ई.डी.) जयपुर के राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में यह अनुभव प्राप्त किया कि कचरे के उचित प्रबंधन से ही महात्मा गांधी के स्वच्छ भारत का सपना साकार हो सकता है।



आजकल जिंदगी डर के साए में जो बीत रही है



बिजेन्द्र कुमार बेरवाल
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक, हिंदी विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
जम्मू व कश्मीर, जम्मू-180001

आजकल के क्या हालात हैं, किसी से छुपे नहीं। जब से कोरोना का इस धरती पर आगमन हुआ है तब से चारों ओर तबाही और खतरे का आलम ही नजर आ रहा है, अर्थात् दिसम्बर 2019 के बाद से तो दुनिया में कोरोना ने कोहराम ही मचा रखा है। कोरोना का ऐसा आगमन हो गया है कि लगता है कि सबको लेकर ही जाएगा। आजकल सभी की जिंदगी डर के साए में बीत रही है। उसकी भी जिसको इसके दर्शन हो गए हैं और उनकी भी जिनका इससे अभी तक कोई वास्ता नहीं पड़ा है। जहाँ इसकी पहली लहर ने विश्व के दूसरे देशों में कोहराम मचाया था वहीं इसकी दूसरी लहर ने तो भारत में तो कोहराम ही मचा दिया है, दूसरी लहर का इतना अधिक प्रभाव है कि इसकी पहली लहर को तो लोग भूल ही गए थे। ऐसा लगने भी लग

गया था कि अब कोरोना शायद चला गया है और लोग सुरक्षित भी महसूस करने लगे थे, क्योंकि जनवरी 2021 में तो मामले बहुत ही कम थे, जिसकी वजह से लोग थोड़े से इससे बेखबर से हो गए थे लेकिन जैसे ही मार्च का महीना आया तो इसी कोरोना ने धीरे-धीरे अपने पैर फिर से पसारने शुरू कर दिए और अप्रैल में ही इसने लोगों को दिन में ही तारे दिखा दिए।

अब तो कोई वक्त ऐसा नहीं निकल रहा है जब हर वक्त कोरोना होने का एहसास न होता हो। कुछ भी बाजार से चीज लाओ तो उसमें कोरोना साथ आने का डर। अच्छी तरह से चीजों को नहीं धोया और सेनेटाइज नहीं किया तो डर। हर पल डर बना रहता है कि कहीं बाहर गए और कोरोना साथ आ गया और कही गलती से किसी को हो गया तो फिर पता नहीं क्या

होगा? और कहीं गलती से संदेह होने पर कोरोना का टेस्ट करवाया और उसमें भी संदेह है कि कहीं रिपोर्ट भी पॉजिटिव आ गई तो फिर तो कहना ही क्या। जरा सी खांसी या गले में खराश होने का अहसास होने लगा तो डर भी लगने लगा, बुखार आ गया तो दिमाग घूम गया। शरीर में जरा सा भी कुछ इस कोरोना के लक्षणों से मिलता जुलता कुछ भी दिखने लगता है तो एक बार मन में आ ही जाता है कि लो भाई आ गए इसकी चपेट में, और फिर खुद की जिंदगी में और घर में परेशानी का दौर चालू। आजकल इस अफरा तफरी के माहौल को देखते हुए इंसान की हिम्मत भी जवाब देने में देर नहीं लगा रही है और किस्मत से बच गया तो ठीक, नहीं तो फिर भगवान ही मालिक है। कोरोना होने के बाद भी जब तक तबीयत ठीक रहती है अर्थात् बिगड़ती नहीं

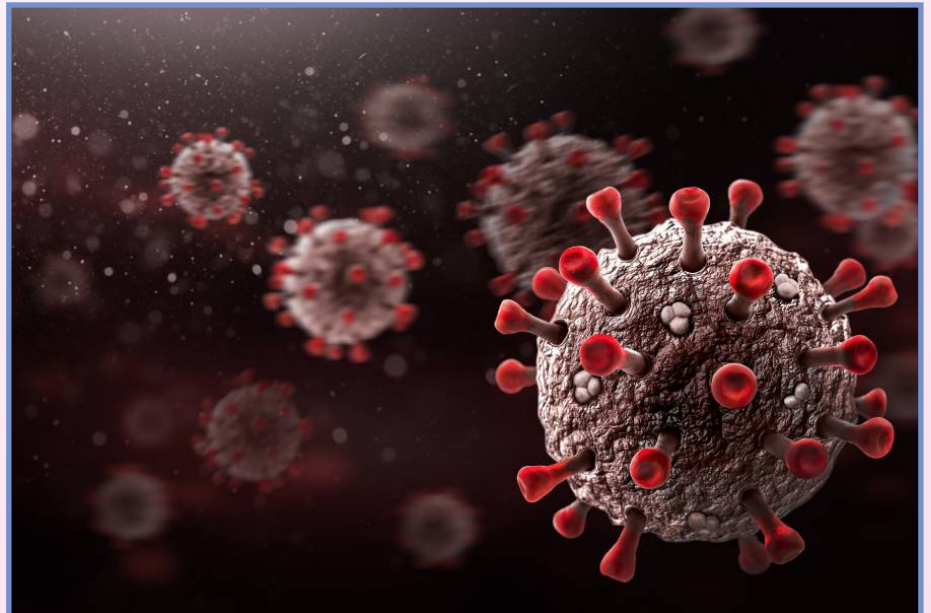
है, सांस लेने में कोई परेशानी नहीं होती है, और हमारा ऑक्सीजन लेवल कम नहीं होता है तब तक तो सब ठीक ही रहता है, लेकिन जब यही तबीयत बिगड़ने लगती है और बिगड़ती ही चली जाती है और फिर न घर पर कोई इलाज कामयाब होता है और पहली बात तो ये कि आपको कोई डॉक्टर नहीं मिलता है और अगर किस्मत से अगर मिल भी जाएं तो डॉक्टर के देखने के बाद भी जब बात नहीं बने तो फिर तो जिंदगी राम भरोसे हो जाती है। बहुत ही किस्मत के धनी हुए तो बच गए नहीं तो गए प्रभु के चरणों में लगभग जाना तय हो जाता है।

आजकल टी.वी. की खबरें और भी डरा रही हैं। आप और हम सब टी.वी. पर खबरों में भी सुन ही रहे होंगे कि आज पांच हजार, और आज 15 हजार और फिर दिनों दिन बढ़ती रफ्तार का नजारा कि आंकड़ा लाख के पार होने में भी देर नहीं लगा रहा है। एक तो पहले ही हमारे यहाँ अस्पताल मरीजों से भरे रहते हैं और ऊपर से कोविड का प्रहार। अब न तो इतने अस्पताल बचे हैं और न ही इतने डॉक्टर जो कि सभी प्रभावित हुए मरीजों को देख सकें। कुछ तो हमारे देश में पहले ही डॉक्टरों, अस्पतालों की संख्या कम है और ऊपर से इस कोरोना के कारण

दिन-ब-दिन मरीजों की बढ़ती संख्या इतनी हो गई है कि सभी कुछ कम लगने लगा है। जितने डॉक्टर और अस्पताल कोरोना के मरीज संभाल रहे हैं उतना ही काफी नहीं हो पा रहा है और अगले दिन लाखों की तादाद में कोरोना के नए मरीज भी आ रहे हैं, जिन्हें संभालना और भी मुश्किल होता जा रहा है। दवा, बेड और डॉक्टर सभी कम पड़ते नजर आ रहे हैं। कोविड के कारण दिनों दिन मरीजों की बढ़ती तादाद के आगे सारा सिस्टम चरमरा सा गया है। चारों ओर अफरा-तफरी का माहौल है, टी.वी. पर आई तस्वीरें दिल को दहला देती हैं। उनको देखते हैं तो पूरे बदन में डर की एक सिरहन सी दौड़ जाती है और मन अंदर से घबराने लगता है कि कहीं इस बीमारी के शिकार हो गए तो शायद ही बचें। क्योंकि ऐसा

लगता है कि जो भी अस्पताल जा रहा है वो शायद ही जिंदा वापिस लौट रहा है। टी.वी. पर लोग रोते बिलखते नजर आ रहे हैं, जिसे देखो वो ही अपने साथ लाए हुए कोरोना के मरीज को अस्पताल में भर्ती करने की गुहार लगा रहा है, कोई स्ट्रैचर पर पड़ा है तो कोई सड़क के किनारे पर पड़ा है, ऊपर से उन मरीजों की बे-सुधी जैसी हालत और दिमाग को खराब कर देती है कि देखने पर लगता है कि शायद बात बिगड़ गई लगती है।

कोरोना से हालात तो बुरे चल ही रहे थे और अब आजकल एक नई समस्या देखने में ये भी सामने आ रही है कि अस्पतालों में ऑक्सीजन खत्म हो रही है और इसी खत्म होती ऑक्सीजन के कारण लोग अस्पताल में भी मर रहे हैं। सभी चैनलों पर इसी प्रकार की खबरें आ



रही हैं, बड़ी हैरानी की बात लगती है कि कल तक जहाँ चैनलों के पास कुछ न कुछ अलग-अलग खबरें होती थी अब वही सभी चैनल सिर्फ एक ही समाचार से भरे हुए पड़े हैं कि ऑक्सीजन खत्म होने के कारण आज इस अस्पताल में इतने लोगों की जान गई और उस अस्पताल में इतने लोगों की जान गई। ऐसा अक्सर देखने में आता है कि कई बार एक जैसी खबरें सभी चैनलों पर ट्रेंड करने लगती हैं। क्या दिल्ली, क्या महाराष्ट्र, क्या तमिलनाडु और क्या उत्तर प्रदेश। सभी जगह हालात खराब ही हो चले हैं। पिछले साल भी हालात इतने खराब नहीं थे और स्थिति पर किसी हद तक नियंत्रण किया हुआ था। लेकिन पिछले साल भी इसका कहर कम नहीं था कि इसकी वजह से ही लाखों लोगों को अपने जमे जमाएं हुए काम-धंधों को छोड़कर अपने घर जाने के लिए हजारों कि.मी. पैदल चलना पड़ा। इस दौरान क्या जवान, क्या बूढ़े और महिलाओं एवं बच्चों ने क्या कम तकलीफें उठाई थी? और इनमें से तो बहुत से लोगों को अपनी जान तक भी गंवानी पड़ गई थी। टी.वी. पर कोरोना से शहरों के बिगड़ते हालातों की जब खबरें आती हैं तो वैसे ही मन घबरा जाता है और अब तो ये भी खबरें आ रही हैं कि कोरोना अब गाँवों की ओर

भी चल पड़ा है। गाँव जहाँ पहले ही शहर जैसी सुख-सुविधाओं का अभाव होता है और चिकित्सा सुविधा भी उतनी बेहतर नहीं होती जितनी की शहरों में। शहरों से सटे गाँवों की स्थिति ही सही नहीं दिखती तो दूर-दराज के गाँवों की स्थिति के बारे में सोचकर मन और भी घबराने और सोचने लगता है और तरह-तरह के सवाल मन में उठने लगते हैं। अगर गाँवों में हालात बिगड़े तो ऐसे में वहाँ भी स्थिति को संभालना और भी कठिन हो जाएगा।

सरकार भी इस परिस्थिति से हर मोर्चे पर लड़ रही है, जितना हो रहा है मरीजों को उतना ही बचाने का प्रयास भी कर रही है। ऑक्सीजन की कमी को दूर करने के लिए एक जगह से दूसरी जगह ऑक्सीजन टैंकर भेजे जा रहे हैं और तो और ऑक्सीजन टैंकरों को एयर लिफ्ट भी करवाया जा रहा है। स्पेशल ऑक्सीजन ट्रेनें भी चलाई जा रही हैं ताकि अस्पतालों और लोगों को समय पर ऑक्सीजन मिल जाए और लोगों की जान बच जाएं। टी.वी. पर तरह-तरह के विश्लेषण और भी डरा देते हैं कि आने वाले दिनों में हालात और भी खराब होंगे। अब जहाँ इतने लाख में आंकड़ा आ रहा है वहीं ये आंकड़ा आने वाले दिनों

में और भी ज्यादा से ज्यादा लोगों को प्रभावित करेगा और अब जो संख्या दो या तीन लाख आ रही है वहीं ये संख्या और भी लाखों में बढ़ जाएगी। बताया जाता है कि अभी इस दूसरी लहर का पीक आना बाकी है। दवाइयों की काला बाजारी हो रही है, जो इंजेक्शन केवल कुछ हजार में मिल सकता है वहीं इसकी मांग अधिक होने और आपूर्ति कम होने के कारण कीमत आसमान छूने जैसा काम कर रही हैं। लोगों की पहुंच से कीमत अधिक होने के कारण दवा पहुंच नहीं पा रही है और इसका परिणाम हम जानें हैं कि व्यक्ति जो कोरोना से पीड़ित हो गया है उसका दवा न मिलने पर क्या हाल हो सकता है।

केवल अस्पतालों का ही बुरा हाल नहीं हो रहा है बल्कि शमशान घाटों में भी जगह नहीं मिल रही है, अंतिम संस्कार के लिए भी लोगों को इंतजार करना पड़ रहा है, लंबी-लंबी कतारें लगी हुई दिखती हैं। अब शमशान घाटों, कब्रिस्तानों में जगह कम होने के कारण कई जगह खुले पार्कों में अब कोरोना से हार चुके लोगों को अंतिम विदाई दी जा रही है। सब कुछ देख कर बहुत अजीब सा लगता है। मन तरह-तरह की बातें सोचने लगता है और बुरे-बुरे ख्याल आने लगते हैं।

2019 में चीन से शुरू हुई बीमारी पकड़ में तो दूर अभी तक पूरी तरह लक्षण भी पहचान में नहीं आए हैं। कोई कुछ बताता है, तो कोई कुछ बताता है। इस नए स्ट्रेन के लक्षण अभी भी पहचान की पहुंच से दूर ही बने हुए हैं। ये नया स्ट्रेन तो पहले के मुकाबले और भी ज्यादा घातक बताया जा रहा है। व्यक्ति को अपनी गिरफ्त में लेने के बाद यदि उस व्यक्ति की समय से घर पर या अस्पताल में तिमारदारी नहीं हुई या उसे सही इलाज नहीं मिलता तो हालत खराब होने में ज्यादा समय नहीं लग रहा है। ये वायरस इतना म्यूटेंट है कि बहुत ही तेजी से अपने को बदल रहा है, कि इसका अभी कोई एक रूप समझ में आता है तभी खबर आती है कि अब इसने अपने आपको म्यूटेंट कर लिया है और अब इसके फिर से नए लक्षण देखने को मिल रहे हैं। अभी भी ये दवा, डॉक्टरों और वैज्ञानिकों की पहुंच से दूर ही बना हुआ है। किसी भी एक नतीजे पर पहुंचना बहुत ही मुश्किल हो रहा है। हालात दिन-ब-दिन खराब और कठिन भी होते जा रहे हैं। सब कुछ असामान्य हो गया है। तीज-त्यौहारों का आयोजन, बच्चों का खेल-कूद और भी अन्य सामाजिक गतिविधियां प्रभावित हो रही हैं। स्कूल, कॉलेज सभी कुछ बंद। जैसे-तैसे सभी शिक्षण

संस्थान ऑनलाइन पढ़ाई करवा रहे हैं, क्योंकि ऑफलाइन पढ़ाई अभी दूर-दूर तक संभव नहीं आ रही है, और ऑनलाइन पढ़ाई होने के कारण पढ़ाई का स्तर भी प्रभावित हो रहा है, क्योंकि जो प्रभावी ढंग से ऑफलाइन पढ़ाई करवाई जा सकती है या होती है वही पढ़ाई ऑनलाइन से उतने ही प्रभावी ढंग से नहीं हो पा रही है। दफ्तरों में जो पहले पूरे स्टाफ के साथ कामकाज होता था अब वो भी प्रभावित हो रहा है, रोस्टरों पर कार्य प्रणाली बनाई जा रही है। सरकार का आदेश है कि स्टाफ को क्रम से और कम बुलाते हुए कार्य किया जाए।

हर समय मुंह को ढक कर रखना पड़ रहा है। ठीक से सांस भी लेना दुभर होता जा रहा है। जहाँ पहले केवल एक मास्क लगाने की बात कही जा रही थी, वहीं अब दो मास्क लगाने की और अब तो घर पर रहते हुए भी मास्क लगाने की बातें कही जा रही हैं। कोई तो इन बातों का पालन करता हुआ दिखता है तो कोई नहीं। जो लोग इसके प्रोटोकॉल का पालन नहीं करते, उन लोगों के हिसाब से कोई कोरोना नहीं हैं, उन्हें लगता है कि अगर लोगों की जान जा रही है तो इसकी वजह कुछ और ही है, इसकी वजह न तो कोरोना है और न ही वो स्वयं। लेकिन ऐसे में वे

भूल जाते हैं कि वे लोग खुद तो संक्रमित होते ही हैं और इसके प्रोटोकॉल का पालन न करके दूसरों को बहुत ही आसानी से और बड़ी संख्या में संक्रमित कर देते हैं। उन्हें इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता है कि उनके ऐसा करने से दूसरों को कितना नुकसान उठाना पड़ रहा है। बार-बार साबुन से हाथों को धोना पड़ता है या हाथों को सैनेटाइज करना पड़ता है। फिर भी मन में भय बना रहता है कि इतना सब करने के बाद भी कहीं कोई वायरस हाथ में रह तो नहीं गया है। आजकल लोगों के घरों में सैनेटाइजर की बोतल, केन आदि देखी जा सकती है। लोग तो अब छोटी सैनेटाइजर की शीशी भी अपनी जेब में रखने लगे हैं। मेरी खुद की जेब में भी हमेशा एक छोटी सैनेटाइजर की शीशी पड़ी रहती है और जरूरत पड़ने पर तुरंत उसका उपयोग अच्छे से किया जा रहा है। क्योंकि एक तो कोविड से तो बचना ही है और दूसरा ऐसा भी अक्सर देखने में आता है कि हर जगह हाथ धोने हेतु सैनेटाइजर की बोतल, साबुन या सिस्टम उपलब्ध नहीं होता है, तो ऐसे में आपके पास रखी ये छोटी शीशी ही काम आती हैं।

हम लोग आजकल खुलकर इस सैनेटाइजर का उपयोग तो कर रहे हैं लेकिन क्या पता आगे चलकर

भविष्य में इस बढ़ते सैनेटाइजर के इस्तेमाल से कहीं और कोई नई समस्या न सामने आने लगे, क्योंकि हर चीज का एक सीमा से अधिक प्रयोग करना नुकसान-दायक भी हो सकता है। क्या पता कल को कोई हमारी त्वचा से संबंधित समस्या आ जाएं या शरीर में कोई और संक्रमण होने लगे? लेकिन आगे तो भविष्य का तो पता नहीं अभी तो इसका इस्तेमाल बहुत जरूरी हो गया है इसलिए अभी तो इसका प्रयोग करना ही पड़ेगा। आगे अधिक सैनेटाइजर के इस्तेमाल से क्या नुकसान हो सकते हैं ये तो भविष्य में ही पता चलेगा।

दिनों दिन भयावह होते हालात व्यक्ति की पहुंच से दूर होते जा रहे

हैं। सरकार का मानना है कि लॉकडाउन लगाने से बचा जाए, क्योंकि पिछले वर्ष लॉकडाउन लगने के कारण अधिकतर काम धंधे ठप्प हो गए थे, हजारों लोगों की नौकरियां चली गईं, सरकार को जो राजस्व मिलना चाहिए था वो नहीं मिला, इसलिए इस बार लॉकडाउन लगाने से बचने की बात कही जा रही है और संपूर्ण लॉकडाउन को अंतिम विकल्प के रूप में चुनने की बात सामने आ रही हैं। लेकिन हालात है कि वश में नहीं आ रहे हैं और स्थिति इतनी खराब हो रही है कि न चाहते हुए भी सरकारों को लॉकडाउन जैसे कदम उठाने पड़ रहे हैं, कहीं आंशिक लॉकडाउन तो कहीं संपूर्ण लॉकडाउन की बात की जा रही है। जिन्होंने लगा दिया है वो इसे

और आगे बढ़ाने में ही मामले कम होने के लिए सही बता रहे हैं और जिन्होंने अभी तक इसे नहीं लगाया है वे भी इस पर विचार कर रहे हैं। पिछले वर्ष लगे संपूर्ण लॉकडाउन से हालात कुछ संभले थे, जिसकी वजह से अब इसकी चारों ओर चर्चा होने लगी है।

कोरोना का कमाल तो देखो कि दिखता बिल्कुल नहीं है और ये अपना काम बराबर किए जा रहा है, हम क्या कर रहे हैं? और भविष्य में इससे बचने और इसे रोकने के क्या उपाय करने वाले हैं, ऐसा लगता है कि ये वो सब हमारे ही आसपास रहकर सुन रहा है और उससे भी आगे बढ़कर कदम बढ़ाने की वो भी सोच रहा है। वैज्ञानिकों, डॉक्टरों और विश्लेषकों के साथ आंखमिचौली खेल रहा है। हाथ में आने का नाम ही नहीं ले रहा है। अपने आपको इतना बदल रहा है कि मानो इसने कसम खा रखी हो और मानव को चुनौती दे रहा हो कि हे मानव अगर तुम में हिम्मत है तो मुझे पकड़ कर दिखाओ? अगर आज तुम मेरा कोई छोटा सा इलाज निकाल भी लोगे तो कोई बात नहीं कल मैं अपना कोई दूसरा रूप तुम्हारे सामने प्रस्तुत करूंगा। उसके इतने वैरिएंट सामने आने लगे हैं कि लगता है कि अगर यही हाल रहा तो शायद ही हम इसको पकड़ पाएं। कभी मुंबई वैरिएंट की



बात होती है तो कभी आंध्रा वैरिएंट की बात होती है और वो इससे भी कहीं ज्यादा घातक बताया जा रहा है। अब तो कभी-कभी ये भी लगता है कि ये वायरस प्राकृतिक तो नहीं है, ये किसी ने बनाया ही है, और वहीं इसके एक रूप को थोड़ा सा नियंत्रित होने की खबर पाते ही इसे नए रूप में ढालने लगता है और दुनिया के सामने इसका एक नया मसला खड़ा हो जाता है। जिसका इलाज फिर से ढूँढना मुश्किल हो जाता है।

हर रोज इसके खुद के द्वारा बनाए हुए रिकार्ड के टूटने की खबर खुद इसके बनाए हुए नए रिकार्ड से सामने आती है कि तीन लाख कुछ थे जो आज आंकड़ा चार लाख के पार हो गया है। टी.वी. की इन खबरों को देखकर लगता है कि अगर इसकी यही रफ्तार रही तो एक दिन हम सबको ये लील कर ही मानेगा। कितना ही बड़े से बड़ा खिलाड़ी या पहलवान या स्वस्थ व्यक्ति या कोई कितना ही अनुभवी डॉक्टर ही क्यों न हो? अगर इसकी चपेट में आ गया और समय पर सही इलाज नहीं मिला और हालात और भी खराब हो गए तो समझो कि उस व्यक्ति के साथ कुछ भी हो सकता है। टी.वी. पर बड़े-बड़े डॉक्टरों को भी इससे प्रभावित होते देखा है और उसकी

जान गँवाने की खबरें भी आ रही हैं, जैसा कि डॉ. के.के. अग्रवाल के मामले में देखने को मिला। वे कितने बड़े और अनुभवी डॉक्टर थे, चिकित्सा जगत में उनका कितना नाम था और लोगों में भी काफी चिर-परिचित थे, लोगों के सवालों का निरंतर जवाब देते रहते थे, लोग भी अपने सवालों का उत्तर पाकर काफी हद तक अपने आपको संतुष्ट पाते थे। अपने व्यवसाय के प्रति बहुत ही समर्पित थे, उनके व्यक्तित्व को देखकर तो लगता था कि उन्होंने अपना पूरा जीवन ही चिकित्सा के लिए स्वयं को समर्पित कर दिया है, कभी भी टी.वी. पर मरीजों को जांचने वाला आला उनके गले से उतरे नहीं देखा हर समय वे मरीज की जांच हेतु तत्पर रहते थे। हर समय उनके चेहरे पर एक मधुर सी मुस्कान बनी रहती थी, निसंदेह उनकी इसी मधुर मुस्कान से

मरीजों को हौसला भी मिलता होगा और जीने की आशा भी बंधती होगी। स्वयं उन्होंने कोविड से संबंधित नियमों का पालन किया और फिर भी उनके साथ अप्रिय घटना घट गई और कोविड उन्हें अपने साथ ले ही गया। जब उनके निधन की खबर सुनी तो एक पल के लिए तो यकीन भी नहीं आया, और दिल मानने को भी तैयार नहीं हुआ, लेकिन सत्य तो यही था और उसे झुठलाया भी नहीं जा सकता था। धीरे-धीरे सभी चैनलों ने उनके निधन के खबर की पुष्टि कर दी थी। उनके निधन से बहुत ही दुख हुआ और लगा कि एक बार फिर कोविड ने हम सबको और चिकित्सा जगत को मुंह चिढ़ा दिया है और अपनी जीत पर इतरा रहा है।

अस्पतालों में हा-हाकार मचा हुआ है। कोरोना से पीड़ितों की मृत्यु की



खबरें सुर्खियों में बनी हुई है। दिनों दिन बिगड़ती स्थिति पर माननीय सर्वोच्च न्यायालय और उच्च न्यायालय में सरकारों से स्थिति स्पष्ट करने पर जवाब मांगा जा रहा है और रोज एक नई बात सामने आ रही है और जल्द से जल्द स्थिति को काबू में करने के लिए आदेश दिए जा रहे हैं। एक सरकार का कहना है कि ऑक्सीजन की पर्याप्त मात्रा नहीं मिल रही है जिसकी वजह से अस्पतालों में हालात काबू में नहीं आ रहे हैं। उधर दूसरी तरफ दूसरी सरकार का कहना है कि आवश्यकतानुसार ऑक्सीजन की आपूर्ति की जा रही है और स्थिति पर पूरी नजर रखी जा रही है। अब ऑक्सीजन के मामले में स्थिति पहले से थोड़ी बेहतर हुई है।

अभी सर्वोच्च न्यायालय ने इस बात पर भी चिंता जताई है कि कोरोना की तीसरी लहर भी आने वाली है, जिसमें शायद बच्चों को कोरोना अपना शिकार बनाएगा। इस पर भी माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने सरकार से स्थिति स्पष्ट करने को कहा है कि यदि इसकी तीसरी लहर यदि आती है तो उसके लिए क्या पर्याप्त उपाय किए गए हैं? हमारे पास उस स्थिति से निपटने के लिए क्या-क्या रास्ते हैं? क्या हम उस आने वाली तीसरी लहर से

निपटने की स्थिति में हैं? अगर वह बच्चों को अपना शिकार बनाएगी तो उससे निपटने के लिए क्या इंतजाम किए गए हैं? क्योंकि बच्चे न तो अकेले अस्पताल में जा सकते हैं और न ही उन्हें अकेले ही संभालना आसान होगा? उस स्थिति से कैसे निपटा जाएगा? क्या बच्चों को लगाई जाने वाली वैक्सीन तैयार कर ली गई है? और यदि नहीं तो उसमें अभी कितना समय और लगेगा? आदि-आदि बातें पूछी जा रही हैं। जवाब में यह भी बताया जा रहा है कि अभी हमारे पास समय है और जल्द ही बच्चों के लिए वैक्सीन तैयार कर ली जाएगी, वह अभी परीक्षण के दौर से गुजर रही है। दुनिया भर की वैक्सीन की डोजेज बढ़ाने की बातें हो रही हैं और कंपनियां भी दिन-रात इस काम में जुटी हुई हैं लेकिन अभी भी इसकी विशाल जनसंख्या और साधन जुटाने के कारण सभी लोगों के टीकाकरण में काफी समय तो लगेगा ही और जब तक सभी का टीकाकरण नहीं हो जाता तब तक सभी की जान पर कोविड के संक्रमण का संकट तो बना ही रहेगा।

एक दिन कोरोना पीड़ितों की संख्या का आंकड़ा थोड़ा कम आने लगता है तो थोड़ी राहत की बात लगती है लेकिन जैसे ही अगले ही

दिन आंकड़ा और अधिक संख्या बताता है तो सारा सुख-चैन काफूर हो जाता है और फिर से बातें और आंकड़े स्थिति भयानक होने की बातें करने लगते हैं। फिर दिल में घबराहट और मन में बैचेनी होने लगती है और दिमाग फिर से टी.वी. की खबरों में खोने लग जाता है। कुछ लोग कहते हैं कि अगर डर कर जीना नहीं है तो आजकल केवल कुछ दिनों के लिए टी.वी. की खबरें देखना और सुनना छोड़ दो। लेकिन मन में फिर एक बात आती है कि अगर टी.वी. नहीं देखेंगे तो पता कैसे चलेगा? कि कोरोना की क्या स्थिति चल रही है? कितने लोग इससे प्रभावित हो रहे हैं? कितने ठीक हो रहे हैं? और क्या इसका कोई इलाज मिला है या निकट भविष्य में मिलने की कोई संभावना है? जिससे ये बिगड़ते हालात ठीक हो जाए और सब कुछ इसके आने से पहले वाली सामान्य जिंदगी हो जाएं? इन सब बातों को जानने के लिए तो टी.वी. देखना और सुनना ही पड़ेगा।

स्थिति कितनी खराब हो रही है ये बात किसी से छुपी नहीं है। देश ही नहीं अब तो विदेशों में भी भारत की स्थिति दिखने लगी है और बहुत से देशों ने तो अपने यहाँ भारत से आने वाली हवाई उड़ानों पर भी

रोक लगा रखी है। दूसरी तरफ विश्व के बहुत से देश भारत के लिए जितना हो सकता है, हर संभव मदद भेज रहे हैं जैसे कोई वेंटिलेटर भेज रहा है तो कोई ऑक्सीजन टैंकर तो कोई ऑक्सीमीटर तो कोई और वैक्सीन तो कोई कुछ और मदद जो इस मुसीबत की घड़ी में भारत के लोगों के काम आ सकती हो। सभी जीवन बचाने वाली कोशिशें कर रहे हैं कि कैसे भी भारत में दिनों दिन बिगड़ते हालातों को कैसे भी संभाला जाए। जब भी कोरोना पर कोई बैठक होती है तो एक नई बात सामने आती है कि आज उस राज्य में केस बढ़ रहे हैं और दूसरे राज्यों में हालात और भी बिगड़ रहे हैं।

पहले देश में 60 से ऊपर वालों को टीका लगाया गया था और फिर 45 वालों का टीकाकरण किया गया और अब 18 से ऊपर वालों को टीकाकरण की बात कही जा रही है। लेकिन हमारी जनसंख्या इतनी ज्यादा है कि सभी को टीका लगाने में भी काफी समय लगेगा। इतनी ज्यादा संख्या के अनुपात में कभी-कभी तो दवाई ही कम पड़ जाती है तो कभी-कभी दवा लोगों तक पहुंच ही नहीं पाती हैं। इतने कठिन दौर में भी गलत लोग दवाइयों की काला बाजारी कर रहे

हैं जिससे एक ओर पीड़ित को दवा मिलनी बहुत ही मुश्किल हो गई है और अगर मिल भी रही है तो बहुत ऊंचे दामों पर जिससे वह खरीदने की हालत में नहीं होता है। महंगी दवा और अन्य जीवन रक्षक उपकरण केवल वही खरीद पा रहा है जो या तो पैसे से बहुत साधन संपन्न है या जिसकी कोई पहुंच निकल आती है तो इसलिए वहीं इस कठिन दौर में जान बचा पाने में थोड़ा बहुत कामयाब हो पा रहा है।

कोरोना से पीड़ित हो चुके कई लोग बिल्कुल ठीक भी हो गए हैं और अब स्वस्थ जीवन भी बिता रहे हैं। लेकिन ऐसा भी देखने में आया है कि कोई तो कोरोना से ठीक होता है और कोई ठीक होने के बाद भी इसी कोविड के कारण बाद में फिर से संक्रमित होने के कारण अपनी जान भी गंवा देता है। कुछ दिन पहले आपने खबरों में देखा होगा कि पुणे के एक अस्पताल में परिस्थितियों वश एक ऐसी दुर्घटना घटी कि सभी कुछ उपलब्ध होने के बाद भी जैसे पीड़ितों को अस्पताल भी मिला, बैड भी मिला और ऑक्सीजन भी उपलब्ध हो गई थी, लेकिन मरीजों तक जिस पाइप से ऑक्सीजन पहुंचनी थी वही लीक हो गई है और परिणामस्वरूप 24 लोग मारे गए और उनको सभी

कुछ होते हुए भी बचाया नहीं जा सका। ऐसी खबरों को देखकर लगता ही है कि सभी कुछ किस्मत के हवाले हैं अगर किस्मत में सांसें होंगी तो इस कठिन दौर में भी बचे रहेंगे और अगर किस्मत में जीवन का साथ नहीं लिखा होगा तो इस दुनिया को अलविदा कहना तय है। कोई कमजोर इम्यूनिटी होते हुए भी बच रहा है तो कोई इंजेक्शन लगवा कर भी और मजबूत इम्यूनिटी होते हुए भी कोविड से हार रहा है। सभी कुछ समझ के पार हो रहा है, इन सब बातों के होते हुए भी निश्चित कुछ कहना मुश्किल हो चला है।

आजकल कोरोना से ही ठीक हो चुके और कोरोना से पीड़ित लोगों में फिर से आंख के संक्रमण की तकलीफ के मामले सामने आ रहे हैं। कुछ राज्यों में इस बीमारी से संबंधित ऐसे मामले देखने को मिल रहे हैं। इस बीमारी को म्यूकोरमाइकोसिस का नाम दिया गया है और इसे आसान भाषा में काला फंगस या ब्लैक फंगस कहा जाता है और अब तो व्हाइट फंगस और येलो फंगस के मामले भी देखने को मिल रहे हैं जो कि एक दूसरे से अधिक घातक बताए जा रहे हैं। अभी एक लहर से निपटे नहीं थे कि दूसरी लहर और अन्य दूसरी बीमारियां चुनौती बन कर

सामने खड़ी हो गई हैं। बहुत से राज्यों ने तो इसे महामारी घोषित कर दिया है। ये एक बहुत ही घातक बीमारी है। जिसमें मरीज को पता भी नहीं चलता और उसके शरीर में विभिन्न प्रकार के असर देखने को मिलते हैं, जैसे आंख और नाक के बीच चकते होना, आंख में दर्द व सूजन होना, सिर में दर्द होना और भी अन्य कोई लक्षण देखने को मिल रहे हैं। एक स्थिति ऐसी आ जाती है कि जिसमें रोगी की आंख में संक्रमण इतना बढ़ जाता है कि उसे निकालने के अतिरिक्त कोई रास्ता नहीं बचता है। अगर बिल्कुल शुरुआत में ही देख कर बचा लिया जाए तो शायद रोगी की आंख बच जाएं, लेकिन अगर शुरुआत में बात नहीं बनी तो फिर तो आंख निकालना तय ही हो जाता है और कई बार तो मरीज

की जान भी चली जाती है। आजकल इसके भी बहुत अधिक संख्या में मामले बढ़ने की खबरें आ रही हैं। पता नहीं इस कोरोना के दौरान और क्या-क्या देखने को मिलेगा? और इस बीमारी का इलाज भी बहुत महंगा बताया जा रहा है, जिसे सभी के लिए वहन करना बहुत ही मुश्किल है।

वायरस देखो कितना शक्तिशाली है, हथियारों से भी अधिक घातक और ताकतवर निकला। जहाँ हथियारों से केवल कुछ व्यक्तियों को नुकसान होता है और अगर युद्ध विराम हो जाएं तो युद्ध रोक भी जा सकता है और मानवता का विनाश होने से बचा और बचाया जा सकता है, और तो और अगर एक देश किसी हथियार से वार करता है तो दूसरा देश उससे बचने के लिए कोई न कोई तोड़ भी

निकालता है जैसे आजकल इजरायल कर रहा है वह दुश्मन देश की मिसाइलों को हवा में ही नष्ट कर रहा है, लेकिन इस वायरस का क्या करें? हालांकि इस बात पर भी बहस होने लगी है कि ये मानव द्वारा निर्मित वायरस या कोई प्राकृतिक वायरस है। इस प्रश्न का कोई ठोस उत्तर नहीं निकला है। लेकिन इसने सारी दुनिया को हिला दिया कि इंसानों द्वारा बनाए गए हथियार तो केवल कुछ का ही सर्वनाश कर सकते हैं लेकिन अगर ऐसे वायरस सारी दुनिया में फैल जाएं तो दुनिया का क्या होगा? ये नजारा हम पिछले साल और इस साल देख चुके हैं और देख भी रहे हैं कि अगर वायरस का इलाज आने में और देरी हुई तो फिर और भी कुछ कहर ढह सकता है।

जहाँ हालात अभी पहले से ठीक है और नियंत्रण में है तो वहाँ कुछ देशों ने तो अभी कुछ जरूरी शर्तों के साथ अनलॉक की बात कही है और नियमों की अनदेखी करने से मना किया है। लेकिन जिस देश से शुरुआत हुई थी अब वहाँ की तस्वीरें तो ऐसा बताती हैं कि वहाँ तो सब कुछ नॉर्मल हो गया है वहाँ तो कोरोना है ही नहीं, सभी कुछ सामान्य रूप से चल रहा है लेकिन जिन देशों में अभी भी ये अपनी बाहें



फैलाए खड़ा है उन देशों का तो बुरा हाल है। ऊपर से ये और कहा जा रहा है कि अभी इसकी तीसरी लहर आनी और बाकी है। पता नहीं और आगे क्या होगा।

ये बात अभी कुछ दिन पहले अर्थात् फरवरी और मार्च माह की रही होगी जब हालात थोड़े ठीक थे और कोरोना भी कुछ कम ही असरदार साबित हो रहा था तब मैं अपने छोटे बेटे को खिलाने के लिए शाम को बाहर लेकर जाता था तो वही अब हालात बिगड़ने के कारण उसका घर से बाहर जाकर खेलना बंद हो गया है, दिन भर घर में ही खेलता रहता है। एक शाम को जब मैं घर से बाहर जा रहा था तो वह खिड़की के पास बैठा हुआ था और बाहर खड़े कुछ लोगों को देख रहा था और मुझसे पूछने लगा कि पापा क्या कोरोना सिर्फ छोटे बच्चों के लिए खतरा बना हुआ है और क्या वो केवल छोटे बच्चों को ही नुकसान पहुंचा रहा है? क्या वो बड़े लोगों को कुछ नहीं कहता है? मैंने बोला नहीं ऐसा तो नहीं है कोरोना तो सब पर बराबर असर कर रहा है, चाहे कोई बच्चा हो या कोई बड़ा। ये सुनते ही वह फिर बोला कि वो इतने सारे अंकल बाहर क्यों खड़े हैं? क्या कोरोना उनको कुछ नुकसान नहीं पहुंचाएगा? मेरे पास एक क्षण के

लिए तो कोई उत्तर नहीं था, फिर भी मैंने उसे समझाया कि बेटे अभी बाहर हालात ठीक नहीं है, अंकल को कोई जरूरी काम होगा तभी वह बाहर गए हुए हैं। यह बात सुनकर वह थोड़ा शांत हो गया और थोड़ा उदास भी लेकिन वह करता भी क्या? अभी तो बच्चा होने के कारण जो मुझे समझ में आया मैंने उसे कह दिया और उसने आगे फिर कोई सवाल न करके मेरी बात को मान भी लिया और फिर से टकटकी लगाकर खिड़की से बाहर की तरफ देखने लगा और अचानक मेरी तरफ मुड़ते हुए देख कर जोर से बोला कि पापा कोरोना हारेगा और हम जीतेंगे। मेरे मन में यही बात आई कि भगवान करे कि तेरी कही हुई बात सही हो और हम सब इस महामारी से बच जाएं और किसी को भी कुछ न हो। सब सुरक्षित रहें और ये कहा भी जाता है कि बच्चे तो भगवान का ही रूप होते हैं उनकी कही हुई बात सच भी हो जाती है। इसलिए मेरे मन ने उसकी कही हुई बात को सच होने के लिए सोचा और भगवान से दुआ की कि इसकी कही बात सच हो जाए।

हालात देखकर तो लगता है कि अभी कुछ संभलने में नहीं आ रहा है तो आगे कैसे संभलेंगे? क्या होगा अगर लोगों को समय पर

दवाई और दूसरी जरूरी जीवन रक्षक रूपी चीजें नहीं मिली तो क्या होगा? ऐसे सवाल कई हैं और लगता है कि जवाब सिर्फ वक्त के पास है। कोई विश्लेषण कहता है कि हमें इसके साथ ही जीना होगा। मास्क, सैनेटाइजर हमारी जिंदगी की अभिन्न हिस्सा बन जाएंगे। ऐसी बातें भी हमारे मन को विचलित कर देती हैं क्योंकि जब हम थोड़ी देर ही मास्क लगाने से तंग हो जाते हैं तो निःसंदेह ऐसी बातें और भी हमारी दिल की धड़कनों को बढ़ा देती हैं और न चाहते हुए भी इसके बारे में सोचने को मजबूर कर देती हैं कि ऐसा होना तो नहीं चाहिए, जल्द ही सब ठीक हो जाए तो ज्यादा अच्छा रहेगा और तभी हमें जल्द ही कोरोना और इससे जुड़ी चीजों से मुक्ति मिलेगी।

आगे क्या होना है जिएंगे या दुनिया को अलविदा कह देंगे यह तो आने वाला वक्त ही बताएगा। लेकिन ये बात भी सत्य है कि कोई कैसे भी कठिन से कठिन हालात में ही क्यों न जी रहा हो फिर भी मरना तो कोई नहीं चाहता है और इस बीमारी में और ऐसे में तो कोई बिल्कुल नहीं जाना चाहेगा। हर कोई चाहेगा कि पहली बात तो कोरोना न ही हो तो अच्छा है लेकिन अगर हो भी जाता है तो

जान न जाए। हम भी भगवान से यही प्रार्थना करते हैं कि हल्द ही कोरोना नाम के इस खतरनाक वायरस और इसके सभी रूपों को अपने वश में कर लो, इस असामान्य स्थिति को सामान्य बना दो, जल्द ही इस बीमारी का इलाज निकाल दो, पहली बात तो यह कि जल्द ही ये बीमारी हमेशा-हमेशा के लिए खत्म हो जाए और अगर वायरस के साथ रहना हमारा तय ही हो गया है तो ये केवल बस एक छोटी सी खांसी-जुखाम की बीमारी ही बनकर रह जाए इससे किसी की जान न जाए और लोग सिर्फ थोड़ी सी दवा लेकर ही ठीक हो जाएं। लोग स्वस्थ रहें और सही मायनों में जिंदगी जीने लगे। देवताओं को तो बचाने के लिए भगवान धनवंतरी अमृत कलश लेकर आ गए थे, हम इंसानों को बचाने के लिए कौन आएगा? हमें और कितने मंथन रूपी अभी दवाओं के शोध करने होंगे ताकि हम मनुष्यों के लिए भी इस वायरस से बचाने के लिए अमृत रूपी वैक्सीन या कोई संपूर्ण रूप से असरदार दवा ही आ जाए।

पहले की खबरें सुनते हैं तो दिल और भी दहल जाता है कि फलां-फलां बीमारी के लिए वैक्सीन आने के लिए कई साल लग गए थे तो फिर से मन घबरा

जाता है और सोचने लगता है कि हालात कितने कठिन रहे होंगे उस समय के जब बीमारी इतनी भयंकर थी और दवा और सुविधाओं का दूर-दूर तक कोई नामो-निशान नहीं होता था, तभी तो लोग हजारों-लाखों की संख्या में गुजर जाते थे और जब आज हम लगभग-लगभग हर क्षेत्र में इतने मॉर्डेनिटी की तरफ बढ़ रहे हैं तब भी आज की इस आधुनिक सदी में आई बीमारी ने हमें बता दिया कि अभी भी हमें हर क्षेत्र में और मेहनत करने की जरूरत है विशेषकर चिकित्सा जगत में क्योंकि देशों के बीच युद्ध हो या न हो लेकिन बीमारी और महामारी नाम के युद्धों से इंसान की लड़ाई हमेशा ही जारी रहेगी क्योंकि अभी भी बहुत सी ऐसी बीमारियां हैं जिन पर मानव विजय हासिल नहीं कर पाया है बस कुछ हद तक नियंत्रण तक ही पहुंचा है। इस मानवता को बचाने और इसके कल्याण के लिए, अभी तक जो कुछ भी किया है वो कम ही लगने लगा है। इसलिए अभी भी इंसान की बीमारियों से लड़ाई जारी है और तब तक रहेगी जब तक सभी बीमारियों पर इंसान विजय हासिल नहीं कर लेता है।

ये बात भी हम सबको अच्छी तरह से पता है कि एक दिन तो जाना हम सभी को है लेकिन हर चीज

समय पर ही हो तो अच्छा लगता है, अर्थात् कोई भी इंसान जिसने एक लंबा बरसा जीया हो और अपने सभी जरूरी काम पूरे कर लिए हों और फिर वह दुनिया से विदा ले तो कोई अचरज नहीं होता है, क्योंकि हम सभी सृष्टि के जन्म-मरण के नियम से बंधे हैं और ये हमें पता भी है कि अपना सब कुछ नई पीढ़ी को सौंपते हुए हमें एक न एक दिन इस दुनिया से जाना ही है लेकिन इस तरह से दुनिया से जाएं तो ये मान लीजिए कि आजकल मानवता बहुत ही गंभीर स्थिति से गुजर रही है जिसे किसी भी दशा में सही नहीं कहा जा सकता है।

अब जबकि ये लेख समाप्त कर रहा हूँ तब भी कोरोना से स्थिति तो वैसी ही बनी हुई है और मन में तरह-तरह के और भी सवाल उठ रहे हैं, लेकिन फिर भी मन तो भगवान से यही दुआ कर रहा है कि जल्द ही सब ठीक हो जाए। लेकिन मन तो आखिर मन ही है, जो चंचल होने के कारण तरह-तरह की बातें सोचता ही रहता है। परिस्थितियां भी मानव के वश में नहीं है और इसलिए ये मानवीय मन तो आज भी डरा हुआ है, सहमा हुआ है क्योंकि "आजकल जिंदगी डर के साए में जो बीत रही है।"

सोशल मीडिया और हिंदी



डॉ. लाखा राम

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हरियाणा, चण्डीगढ़-160020

आज का युग इंटरनेट आधारित सोशल मीडिया का है। सोशल मीडिया को आम बोलचाल में वेब मीडिया भी कहा जाता है। यह एक विशाल नेटवर्क है, जो कि सारे विश्व को एक सूत्र में बाँधता है। यह विश्व का सुगम एवं सस्ता माध्यम है जो तीव्र गति से सूचनाओं का आदान-प्रदान करके हर क्षेत्र की घटनाओं को आमजन तक पहुँचाता है। आज ऐसा लगता है कि सोशल मीडिया ने विश्व को सीमित कर दिया है। सोशल मीडिया के माध्यम से कम समय में दुनिया की हर जानकारी को आम लोगों तक पहुँचाया जा रहा है। पल भर में संदेशों से लेकर छायाचित्र आदि के द्वारा लोग दुनिया के एक छोर से दूसरे छोर पर अपनी बातों को अपनों तक पहुँचा पा रहे हैं। इस माध्यम की संवाद क्षमता अखबार, पुस्तकों, पत्रिकाओं, रेडियो और टी.वी.

से अलग है, और यह इनसे ज्यादा निजी, आकर्षक, अंतरंग, शक्तिशाली बनाती है। जब यह डेस्कटॉप कंप्यूटरों, लैपटॉपों से निकल कर मोबाइल फोन पर आ गया है तो सर्वव्यापी, सर्वसमय, सर्वत्र और सर्वसुलभ हो गया है। अब सोशल मीडिया नाम के इस नए प्राणी ने संचार माध्यमों की दुनिया को फिर बड़े बुनियादी ढंग से बदल दिया है। यह प्रक्रिया जारी है और कहां जाकर स्थिर होगी, यह कोई नहीं जानता।

विश्व में आज लगभग 200 सोशल नेटवर्किंग साइटें हैं, जिनमें फेसबुक, ट्विटर, ऑरकुट, माई स्पेस, लिंकड इन, फिलकर, इंस्टाग्राम सबसे अधिक लोकप्रिय हैं। अब एस.एम.एस., ट्विटर, फेसबुक और वाट्सएप ने बहुत से लोगों के लिए ई-मेल को भी अनावश्यक और अप्रासंगिक बना

दिया है। निस्संदेह, लोकप्रियता के प्रचार-प्रसार में मीडिया एक बेहतरीन प्लेटफार्म है। जहाँ व्यक्ति स्वयं को अथवा अपने किसी उत्पाद को लोकप्रिय बना सकता है। आज फिल्मों के ट्रेलर, टी.वी. प्रोग्राम का प्रसारण भी सोशल मीडिया के माध्यम से किया जा रहा है।

आज संसार की लगभग हर भाषा पर सोशल मीडिया के प्रभाव को महसूस किया जा रहा है, उसे समझने की कोशिश हो रही है और विमर्श हो रहा है। वैश्वीकरण के दौर में भारत के बढ़ते प्रभाव के कारण पिछले कुछ समय से हिंदी भाषा ने सोशल मीडिया के मंच पर दस्तक देकर अपने अस्तित्व को और भी बुलंद तरीके से स्थापित किया है। सोशल मीडिया पर अभिव्यक्ति के लिए हिंदी से उपयुक्त कोई भाषा नहीं मानी जा

सकती है। आज तो सोशल मीडिया पर सक्रिय लोग हिंदी भाषा का प्रयोग न केवल खुलकर, बल्कि गर्व के साथ करते हैं। आज सोशल मीडिया पर हिंदी का प्रयोग, लोगों के लिए भीड़ से अलग दिखने का बेहद आकर्षक तरीका साबित हुआ है। सोशल मीडिया में हिंदी भाषा के वर्चस्व का प्रमुख कारण हिंदी भाषा की सुगमता, सरलता, समृद्धता और अभिव्यक्ति का सशक्त एवं वैज्ञानिक माध्यम होना है। सोशल मीडिया पर जोक्स, मैसेज या अन्य सामग्री का ज्यादा से ज्यादा प्रचलित और प्रसारित होने का कारण भी हिंदी भाषा ही है, क्योंकि यह उपयोगकर्ता और पाठक को सीधे जोड़ने का कार्य करती है।

अब बदलते वक्त के साथ-साथ हिंदी भाषा ने सोशल मीडिया के मंचों पर दस्तक देकर अपनी विशेष पहचान बनाई है। एक समय था जब सोशल मीडिया पर ज्यादातर अंग्रेजी भाषा का ही प्रयोग होता था, लोग सोचते थे कि सोशल मीडिया के आने से हिंदी का वर्चस्व कम हो जायेगा; लेकिन डिजिटल युग में तो यह उल्टा हो गया। सोशल मीडिया पर हिंदी के बढ़ते इस्तेमाल के चलते, अब अंग्रेजी उपयोगकर्ताओं में भी हिंदी का

आकर्षण बढ़ा है। युवाओं में हिंदी सीखने, बोलने और लिखने का अभ्यास बढ़ रहा है। यूनिकोड जैसे फॉन्ट के आ जाने से इंटरनेट पर हिंदी को उसके सही देवनागरी स्वरूप में लिखना-पढ़ना आसान हो गया है।

आज फेसबुक, ट्विटर, ब्लॉग, व्हाट्सएप या अन्य कोई नेटवर्किंग साइट सभी पर हिंदी भाषा का प्रयोग को देखते हुए गूगल जैसी कंपनियां भी हिंदी भाषियों को आकर्षित करने की कोशिश कर रही हैं। आज सोशल मीडिया पर हिंदी भाषा ने ट्विटर के माध्यम से शब्दों में कहने के अभ्यास को संभव बनाया है। हिंदी भाषा में किये गये ट्वीट ने आज सार्वजनिक अभिव्यक्ति की ओर बहुसंख्यक समुदाय का ध्यान आकर्षित करवाया है। हिंदी भाषा के इस सोशल मीडिया ने अपनी

ताकत से सरकारों का अपने फैसलों, नीतियों और व्यवहारों की ओर ध्यान आकर्षित करवाया है। भारतीय सोशल मीडिया के हिंदी ऐप शेयरचैट ने हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने में बड़ी भूमिका निभाई है। आज प्रतिदिन लाखों वीडियो हिंदी भाषा में अपलोड किए जाते हैं और उनके करोड़ों सब्सक्राइबर्स हैं। आज आपको खान-पान से लेकर ज्वैलरी तक, शिक्षा से लेकर टेक्नोलॉजी तक, जिस किसी के बारे में जानकारी हासिल करनी हो तो हिंदी भाषा में एक ही विषय के सैंकड़ों वीडियो मिल जाएंगे। हिंदी सिनेमा के बाद अब हिंदी के टी.वी. चैनल, अखबार, इंटरनेट कम्पनियाँ भी विज्ञापनों के जरिये अरबों रुपये सालाना कमा रहे हैं।

हिंदी आज देशभर में आम बोलचाल की भाषा है। आज सोशल मीडिया ने ही हिंदी को



राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने का बीड़ा उठाया है। आज यह भाषा कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक देश को जोड़ने वाली भाषा है। हिंदी भाषा दुनियाभर में समझी-बोली जाती है। दुनियाभर में आज भारतीय फिल्मों व टेलीविजन कार्यक्रम देखे जाते हैं। इससे भी दुनिया में हिंदी का प्रचार-प्रसार हुआ है। हिंदी भाषा को सोशल मीडिया पर हाथों हाथ लिए जाने का एक कारण यह भी है कि हिंदी भाषा अभिव्यक्ति का एक बेहतरीन माध्यम होने से इसके भावों को समझने में असुविधा का सामना नहीं करना पड़ता और लिखी गई बात पाठक तक उसी भाव में पहुंचती है, जिस भाव के साथ उसे लिखा गया है। आज जनमानस के अंदर गहराई तक पैठने की हिंदी की ताकत को विदेशियों ने भी पहचान लिया है, तभी तो विदेशी व्यापारियों, अभिनेताओं, नेताओं में हिंदी सीखने की ललक होड़ में परिवर्तित हो गई है।

सोशल मीडिया पर हिंदी भाषा के बढ़ते वर्चस्व को देखते हुए माननीय प्रधानमंत्री महोदय और अन्य केंद्रीय मंत्रालयों ने अपने सोशल मीडिया अपडेट्स हिंदी में प्रस्तुत किये हैं। निस्संदेह, सोशल

मीडिया से हिंदी को निश्चित रूप से ताकत मिली है। गूगल-के.पी.एम.जी. रिसर्च, सेंसस इंडिया और आई.आर.एस. की सर्वे रिपोर्ट पर गौर करें तो हम पाएंगे कि वर्ष 2021 में इंटरनेट में हिंदी भाषा का प्रयोग करने वाले अंग्रेजी में इंटरनेट इस्तेमाल करने वालों से अधिक हो जाएंगे।

आज समाज के हर वर्ग द्वारा सोशल मीडिया को स्वीकृति देने से आने वाले समय में हिंदी की स्वीकार्यता और उपयोगिता बड़े पैमाने पर बढ़ने की संभावना है। बदलती परिस्थितियों से एक बात सुनिश्चित है कि भविष्य में हिंदी सोशल मीडिया पर व्यापक स्तर पर अपना साम्राज्य स्थापित करेगी। इस प्रकार आज सोशल मीडिया पर हिंदी का बढ़ता प्रयोग हिंदी के उज्ज्वल भविष्य का संकेत है। आज यह स्वीकार करने में

किसी को कोई हिचक नहीं होगी कि सोशल मीडिया की वजह से हिंदी की पहुंच में अतिशय विस्तार हो पाया है। हम हिंदी को लेकर और आशान्वित हुए हैं। आज का सच यह है कि जिस तरह हिंदी को अपने प्रसार के लिए मीडिया की जरूरत है, उसी तरह मीडिया को अपने विस्तार के लिए हिंदी की आवश्यकता है। भविष्य में सोशल मीडिया पर सिर्फ हिंदी का ही वर्चस्व होगा, ऐसा मेरा विश्वास है। लेकिन दूसरी ओर एक खतरा गंभीर होता जा रहा है कि नई पीढ़ियां पाठ्य-पुस्तकों के अलावा कुछ भी गंभीर, स्वस्थ, विचारपूर्ण लेखन, साहित्य, वैचारिक पठन से लगातार दूर जा रही हैं। अच्छी, असरदार भाषा अच्छा पढ़ने से ही आती है। अच्छी भाषा के बिना गहरा, गंभीर विचार-विमर्श, चिंतन और ज्ञान-निर्माण संभव नहीं।



स्वनिम विज्ञान



गौरव हारिथ

वरिष्ठ हिंदी अनुवादक (राजभाषा)
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक
का कार्यालय, नई दिल्ली

स्वनिम विज्ञान को ध्वनिग्राम विज्ञान भी कहते हैं। स्वनिम विज्ञान उस विज्ञान को कहते हैं जिसमें किसी भाषा में प्रयुक्त स्वनिमों तथा उनसे सम्बद्ध पूरी व्यवस्था पर विचार करते हैं। स्वनिम भाषा की सबसे छोटी व्यवच्छेदक इकाई का नाम है। स्वनिम विज्ञान के अंतर्गत स्वनिम तथा उपस्वन का निर्धारण, उपस्वन का वितरण, स्वर और व्यंजन स्वनिमों का उस भाषा में प्रयुक्त संयोग तथा अनुक्रम प्राप्त का खण्डयेतर स्वनिमों (अनुतान, बलाघात, दीर्घता, अनुनासिकता, संहिता) की व्यवस्था, रूपिमाओं के मिलने पर घटित होने वाली स्वनियमिक परिवर्तन आदि स्वनियमिक व्यवस्था से सम्बद्ध सारी बातें आती हैं।

स्वनिम और उपस्वन :- हिंदी में उल्टा, लो तो तथा 'ला' का सावधानीपूर्वक उच्चारण करे और यदि जीभ की स्पर्श स्थिति पर ध्यान दें तो स्पष्ट हो जाएगा कि 'उल्टा' शब्द के उच्चारण में जीभ उलट जाती है। 'लो' शब्द दांतों की ओर थोड़ा आगे से उच्चरित होता है। 'ले' शब्द और आगे से तथा 'ला' शब्द और भी आगे से उच्चरित होता है। इन चारों शब्दों में ध्वनि एक ही है 'ल' किंतु चारों शब्दों के उच्चारण स्थान एक दूसरे से भिन्न है। वास्तविक रूप में उच्चारण और श्रवण 'ल' 'लो' 'ले' तथा 'ला' होता है अर्थात् इन चारों की सत्ता

भौतिक है। इनकी तुलना में इन चारों शब्दों से जो ध्वनि निकल रही है वह भौतिक नहीं है अपितु मानसिक है। ल, लो, ले, ला के आधार पर एक मुखिया के रूप में उसे अर्थात् सामान्य 'ल' को स्वीकार कर लिया गया है। यह मानसिक सत्ता रखने वाला 'ल' स्वनिम है तथा ल, लो, ले, ला इसके उपस्वन है।

निष्कर्ष रूप में यह कह सकते हैं कि स्वनिम की सत्ता मानसिक होती है तथा उपस्वन व्यक्तिक। यहाँ 'ल' जाति है जो ल, लो, ले, ला व्यक्तियों से बनी है।

यदि 'ल' को एक परिवार कहें तो उस परिवार में उस परिवार के चार सदस्य हैं। जैसे – किसी एक आदर्श परिवार के सदस्यों में मतैक्य होता है, वे एक-दूसरे के विरोधी या व्यतिरेकी नहीं होते वैसे ही ल, लो, ले, ला में भी मतैक्य है। 'ल' केवल 'ट' के पहले आएगा, 'लो' 'ओ' के पहले, 'ले' 'ए' के पहले, 'ला' 'आ' के पहले अर्थात् इनमें मतैक्य है। उनके हिंदी में आने की सुव्यवस्थित व्यवस्था है अर्थात् वह अनुमेय है। साथ ही वे 'ल' परिवार की दृष्टि से एक-दूसरे के पूरक हैं। चारों मिलकर एक परिवार बनाते हैं। ऐसी स्थिति को भाषा-विज्ञान में परिपूरक वितरण में होना कहते हैं। जहाँ एक दूसरे का विरोध न हो, वहीं प्रत्येक के प्रयोग की स्थिति अलग-अलग अर्थात् अत्यतिरेकी हो। यहाँ

‘ल’ के स्थान पर ‘लो’ नहीं आ सकता और न ही ‘लो’ के स्थान पर ‘ल’। इस प्रकार ल, ला, लो, ले परिपूरक वितरण होता है। इसके विपरित ‘ल’ और ‘क’ एक दूसरे के व्यतिरेकी या विरोधी हैं क्योंकि आली के पहले दोनों आ सकते हैं।

ल + आली = लाली

क + आली = काली

जो ध्वनियाँ या स्वन इस प्रकार एक-दूसरे की व्यतिरेकी या विरोधी हैं उन्हें स्वनिम कहते हैं। यहाँ ‘ल’ और ‘क’ स्वनिम हैं।

निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते हैं कि किसी भाषा के स्वनिम अपने वितरण में एक-दूसरे के व्यतिरेकी होते हैं किंतु उपस्वन परिपूरक वितरण में, जहाँ एक आता है वहाँ दूसरा कदापि नहीं आता।

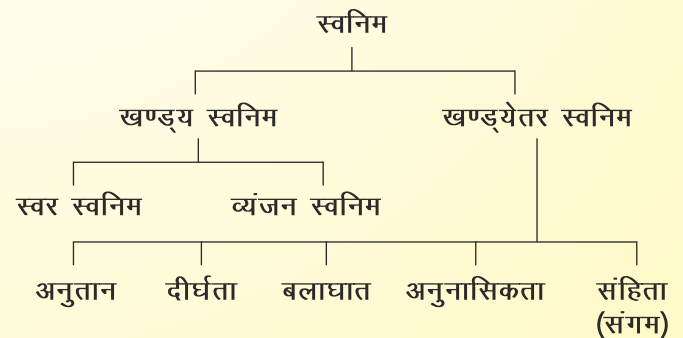
उपस्वन अर्थभेदक नहीं होते हैं उदाहरणार्थ यदि हम ‘लो’ के स्थान पर ‘ल’, ‘ले’, ‘ला’ का उच्चारण भी करें तो ‘लो’ के अर्थ में खास अंतर नहीं आएगा। इसके विपरित यदि हम ‘ल’ के स्थान पर ‘क’ (को), ‘स’ (सो), ‘द’ (दो), ‘ह’ (हो) आदि किसी भी स्वनिम को रखें तो अर्थ पूर्णतः बदल जाएगा। अर्थात् स्वनिम अर्थभेदक होते हैं। लाली और काली इन दो शब्दों के अर्थ अलग-अलग हैं। ध्वनि के नाम पर दोनों में मात्र एक ही अंतर है। एक में ‘ल’ है और दूसरे में ‘क’ है। ऐसे शब्द जोड़ें जिनमें दो ध्वनियों की अर्थ भेदता स्पष्ट होती है उन्हें भाषा विज्ञान में न्यूनतम विरोधी युग्म कहते हैं और जिन दो ध्वनियों के न्यूनतम युग्म मिल जाते हैं वे दोनों ध्वनियाँ स्वनिम होती हैं, उपस्वन नहीं।

संक्षेप में हम यह कह सकते हैं कि किसी भाषा में वाक्यों के माध्यम से अभिव्यक्ति की जाती है। ये वाक्य एकाधिक पदों से मिलकर बनते हैं। विभिन्न शब्दों में

प्रत्यय जोड़कर पदों की रचना की जाती है। ‘शब्द’ ध्वनि समूह ही होते हैं इन्हीं ध्वनियों का सीधा संबंध स्वनिम या उपस्वन से है। ध्वनियों का उच्चारण विभिन्न उच्चारण अवयवों से किया जाता है। सामान्यतः व्यक्तियों के उच्चारण अवयव समान होते हुए भी थोड़ी बहुत भिन्नता रखते हैं। परिणामतः उनके द्वारा उच्चारित ध्वनियाँ समान होते हुए भी संवेदनशील यंत्रों द्वारा भिन्न दिखाई देती है। यही नहीं जब एक ही व्यक्ति एक ही ध्वनि को बार-बार बोलता है तो उसमें सूक्ष्म अंतर आ जाता है। हम मोटे तौर पर उन्हीं ध्वनियों को अलग समझते हैं जिन्हें हमारे कान पृथक समझते हैं। वस्तुतः एक ही ध्वनि के ये सभी सूक्ष्म रूप जो भले ही कानों द्वारा पृथक अनुभव किए जाते हैं ‘उपस्वन’ है तथा हिंदी का वर्ग अन्य ध्वनियों की तुलना में अर्थभेदकता में समर्थ होता है स्वनिम कहलाता है।

दूसरे शब्दों में स्वनिम किसी भाषा की यह ध्वन्यात्मक इकाई है जिसके एकाधिक उपस्वन होते हैं। ये उपस्वन ध्वन्यात्मक दृष्टि से एक दूसरे से मिलते-जुलते होते हैं किंतु अर्थ भेदकता में असमर्थ होते हैं।

स्वनिम के भेद :- स्वनिम दो प्रकार के होते हैं –
(1) खण्ड्य स्वनिम (2) खण्ड्येतर स्वनिम।



(1) **खण्ड्य स्वनिम :-** वे होते हैं जिन्हें अलग-अलग खंडित किया जा सकता है इनकी

स्वतंत्र सत्ता होती है। इनके दो भेद होते हैं – (i) स्वर स्वनिम, (ii) व्यंजन स्वनिम।

(2) **खण्डयेतर स्वनिम** :— इन्हें प्रायः खंडित नहीं किया जा सकता है ये प्रायः एकाधिक खण्ड्य स्वनिमों पर आधारित होते हैं। इनके पाँच भेद होते हैं – (i) अनुतान, (ii) दीर्घता, (iii) बलाघात, (iv) अनुनासिकता, (v) संहिता।

स्वर स्वनिम :— हिंदी भाषा में 10 स्वर स्वनिम हैं इनके न्यूनतम युग्म हिंदी में मिलते हैं – ‘आ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ’ स्वर स्वनिम हैं। इनमें न्यूनतम युग्म ‘मिल–मील’, ‘मेल–मील’, ‘पार–पैर’, ‘सुर–सेर’, ‘कुल–काल’, ‘लुट–लोटा’ आदि हैं। ये आपस में व्यतिरेकी अर्थात् अर्थ भेदक हैं।

व्यंजन स्वनिम :— हिंदी के अधिकांश व्यंजनों के भी न्यूनतम युग्म मिल जाते हैं।

कड़ा, खड़ा, गुड़ा, घड़ा
चला, छला, जला, झला
टाला, डाला, ढाला, माला
तान, घान, दान, पान
पुली, फली, भली, क्ली
यह, वह, कह, रह

विवादास्पद व्यंजन स्वनिम :— ङ, ण, स के विषय में थोड़ा विवाद है। कुछ व्यक्ति ‘ण’ के स्थान पर ‘न’ का प्रयोग करते हैं। ‘कण’ को ‘कन’, ‘गुण’ को ‘गुन’, ‘प्राण’ को ‘प्रान’। हिंदी में ‘ण’ और ‘न’ के विरोधी युग्म मिलते हैं जैसे अणु–अनु (अणु एक कण के लिए प्रयुक्त होता है जबकि अनु एक उपसर्ग है। अतः ‘ण’ को स्वनिम माना जा सकता है)।

जहाँ तक ‘ज’ का प्रश्न है, वह ‘न’ के समान ही सुनाई देता है जैसे चंचल (चञ्चल), झंझा (झञ्झ) यह केवल च, छ, ज और झ के पहले आता है और ‘न’ कभी इन ध्वनियों के पूर्व नहीं आता। इस प्रकार ये दोनों परिपूरक वितरण में हैं, दोनों में विरोध होने के कारण

‘ज’ को स्वनिम नहीं माना जा सकता।

‘ड’ भी क, ख, ग, घ के पूर्व आता है, कुछ सीमित शब्दों में यह ‘म’ के पहले भी आता है जैसे ‘वाडमय’ ‘पराड्मुख’ आदि इस रूप में यह भी ‘न’ के साथ परिपूरक वितरण में है। वस्तुतः यह दोनों ही (ज, ड) के उपस्वन हैं।

जो स्वनिम भाषा में सामान्य रूप से अर्थ भेदक तथा व्यतिरेकी होते हैं उन्हें केन्द्रीय या मुख्य स्वनिम कहते हैं किंतु जो किसी सीमित व्यक्ति, सीमित शब्दों या सीमित परिस्थितियों में प्रयुक्त होते हैं वे गौण या परिधिय स्वनिम कहलाते हैं। हिंदी में अधिकांश स्वनिम केन्द्रीय स्वनिम भी हैं।

खण्डयेतर स्वनिम :— खण्डित न किये जा सकने वाले तथा प्रायः एकाधिक खण्ड्य स्वनिमों पर आधारित स्वनिम खण्डयेतर स्वनिम कहलाते हैं। इसके पाँच उपभेद हैं – अनुतान, बलाघात, दीर्घता, अनुनासिकता, संहिता (संगम)। इन खण्डयेतर स्वनिमों का उच्चारण नहीं हो सकता इसलिए इन्हें ध्वनि ग्रामिक कहना ही अधिक उपयुक्त है इनके न्यूनतम युग्म –

बलाघात – मुझे एक खिड़की वाला मकान चाहिए
मुझे एक खिड़की वाला मकान चाहिए

अनुतान – राम आ गया। (सामान्य कथन)
राम आ गया! (आश्चर्य बोधक)

दीर्घता – बचा – बच्चा
आसन – आसन्न

अनुनासिकता – सास – साँस
गोद – गौंद

संहिता (संगम) – सिरका – सिर का
तुम्हारे – तुम हारे

(स्रोत : अज्ञात)

समय के सदुपयोग का महत्व



सुश्री राजकुमारी शर्मा
सेवानिवृत्त वरिष्ठ प्रशासन अधिकारी
एम-143, साउथ सिटी-1, गुरुग्राम

मानव जीवन में समय का अत्यधिक महत्व है। समय हमारे जीवन का वह बहुमूल्य धन है जिसे एक बार खो देने के बाद दोबारा हासिल नहीं किया जा सकता। अतः निश्चित रूप से जीवन में सफल होने के लिए इसका महत्व समझना आवश्यक है। समय का महत्व समझते हुए ही हम ऊंचाई के शिखर तक पहुँच सकते हैं। समय के मूल्य को पहचानना ही समय का सदुपयोग है। समय का सदुपयोग करने वाले व्यक्ति ही जीवन में सफलता प्राप्त करते हैं। इस संबंध में किसी ने सही कहा है –

वक्त नूर को भी बेनूर बना देता है,
वक्त फकीर को भी हुजूर बना देता है।
वक्त की कद्र कर ऐ-बन्दे,
वक्त कोयले को भी कोहिनूर बना देता है।

समय की अपनी कुछ विशेषताएँ हैं जो कि निम्नवत हैं:—

समय सीमित है — समय ईश्वर प्रदत्त वह वरदान है जिसे न तो बढ़ाया जा सकता है और न ही घटाया जा सकता है। हमारे जीवन का प्रत्येक क्षण सीमित है। भगवान ने हमें जितना समय दिया है उससे ज्यादा

किसी के पास एक क्षण भी नहीं होता है इसलिए प्रत्येक कार्य हमें सही समय पर कर लेना चाहिए। जीवन के प्रत्येक क्षण का सदुपयोग करना चाहिए। समय का सदुपयोग करके निर्धन, धनवान, निर्बल सबल, मूर्ख विद्वान बन जाता है। समय की कीमत जाने बिना सीमित समय पर कार्य न करने के कारण कई बार बाद में पछताना पड़ता है। कहा भी गया है “अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत।” “गया वक्त फिर हाथ आता नहीं, समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता।”

समय अमूल्य धन है — समय अमूल्य धन है। प्रातःकाल उठकर पूरे दिन किए जाने वाले कार्यों की योजना बनाते हुए प्रत्येक कार्य को नियत समय पर समाप्त करना चाहिए। यदि दिनचर्या में कुछ समय बचता है तो उसका भी सदुपयोग किया जा सकता है। उदाहरण के लिए विद्यार्थी विद्यालय से बचने वाले समय का उपयोग अन्य कलाओं को सीखने में कर सकते हैं। इसमें खेलकूद, मनोरंजन भी शामिल है। समय को व्यर्थ की बातों में नष्ट नहीं करना चाहिए। जो लोग समय को बर्बाद करते हैं, समय उनको बर्बाद कर देता है। आज किए जाने वाले कार्य को आज ही

समाप्त करना चाहिए न कि कल पर छोड़ना चाहिए क्योंकि कहा भी गया है —

*“काल करे सो आज कर, आज करे सो अब,
पल में परलै होयगी, बहुरि करेगा कब।”*

समय के सदुपयोग में सफलता का रहस्य छिपा है — समय के सदुपयोग से मानव सफलता की ऊँचाइयों को छू सकता है। समय की सही उपयोगिता व्यक्ति को महान बना देती है। समय पर सभी का समान अधिकार है चाहे वह धनवान, निर्धन, मजदूर, किसान, राजा, रंक, विद्वान, मूर्ख कोई भी हो। समय के मूल्य को समझते हुए जो अपना कार्य उचित समय पर करता है केवल वह मनुष्य ही सफलता तथा महानता की सीढ़ी चढ़ता है। समय के अमूल्य क्षणों का उपयोग करने में ही जीवन की सफलता का रहस्य छिपा है। बुद्धिमता इसी में है कि समय के एक भी अमूल्य क्षण को व्यर्थ न जाने दिया जाए।

समय उन्हीं का साथ देता है जो समय का महत्व समझते हैं — संसार में जिसने समय के मूल्य को पहचाना है उसने ही दुनियाँ के समक्ष अपना लोहा मनवाया है। संसार में जितने भी महान व्यक्ति हुए हैं उनकी महानता तथा सफलता के पीछे समय के महत्व का मूलमंत्र छिपा है। लखपति व्यापारी समय के चूक जाने से भिखारी बन सकता है। स्टेशन पर थोड़ी देर से पहुँचने पर गाड़ी छूट सकती है और

सारे कार्यक्रम धूल में मिल जाते हैं। परीक्षा में देर से पहुँचने पर छात्र परीक्षा से हाथ धो बैठता है। अतः समय के दुरुपयोग से सदा बचना चाहिए।

समय के सदुपयोग में बाधक तत्व — समय का सदुपयोग करने में निम्नलिखित तत्व बाधक हो सकते हैं :—

आलस्य : आलस्य मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है। आलसी मनुष्य अपने जीवन में कभी भी उन्नति नहीं कर सकता तथा यह उसकी उन्नति में बहुत बड़ी बाधा बन जाता है। आलस्य का परित्याग करके ही मनुष्य असंभव को संभव बना सकता है।

सुनिश्चित कार्यक्रम न बनाना तथा समय का निर्धारण न करना : जो व्यक्ति निश्चित कार्यक्रम नहीं बनाता उसका अधिकांश समय व्यर्थ में ही बीत जाता है। वह मानसिक वृत्ति को एकाग्र करके कार्य करने में असफल रहता है। कार्य के समय पर सम्पन्न न होने के कारण उसके हाथ असफलता ही लगती है।



अनुकूल समय तय न करना तथा समय के अनुकूल कार्य निर्धारित न करना भी एक बड़ी बाधा है। प्रत्येक कार्य का समय निर्धारित करना अत्यंत आवश्यक है। उठने, सोने, पढ़ने, खेल-कूद, मनोरंजन तथा अन्य सभी कार्यों का समय निर्धारित न करने वाला व्यक्ति मुसीबत में फंस जाता है।

समय का विभाजन करते समय ध्यान देने योग्य बातें निम्नवत हैं :—

1. कार्य करने का कार्यक्रम इस प्रकार बनाना चाहिए कि शारीरिक और मानसिक थकावट अधिक न हो।
2. दिनचर्या इस प्रकार बनानी चाहिए कि उसमें मनोरंजन अथवा शौक की भी व्यवस्था की जानी चाहिए। मनोरंजन अथवा शौक से जीवन में सरसता आती है और शक्ति का संचय होता है। इनमें टी.वी. पर कार्यक्रम देखना, संगीत, नृत्य, वादन, खेलकूद तथा पुस्तक पढ़ना आदि शामिल हैं।

समय के सदुपयोग के लाभ

व्यक्तिगत उन्नति के साथ-साथ देश तथा समाज की उन्नति में भी योगदान दिया जाता है। व्यक्ति को हर जगह सम्मान मिलता है। सामाजिक प्रतिष्ठा भी मिलती है। जीवन में हर सुख की प्राप्ति होती है। व्यक्ति का हर सपना साकार होता है। समय का सदुपयोग करने वाले व्यक्ति ही साहित्य के सृष्टा, राष्ट्रनायक, वैज्ञानिक और आविष्कारक हुए हैं। कहने का

तात्पर्य है कि समय का मूल्य समझने वाले व्यक्ति के लिए हर उपलब्धि संभव हो जाती है।

अंत में यही कहा जा सकता है कि समय एक मूल्यवान संपत्ति है। यह धन से भी अधिक मूल्यवान है। समय का महत्व इस बात से भी स्पष्ट होता है कि यदि धन खो जाए तो पुनः कमाया जा सकता है, स्वास्थ्य खो जाए तो उसका भी इलाज कराया जा सकता है तथा पुनः प्राप्त किया जा सकता है किन्तु यदि समय एक बार चला गया तो यह दोबारा लौटकर नहीं आता। इसके व्यर्थ चले जाने पर मनुष्य हाथ ही मलता रह जाता है तथा उसके पास सिवाय पछताने के और कुछ शेष नहीं रह जाता। जो व्यक्ति समय का सम्मान करता है समय उसे सम्मान दिलाता है। इसी बात में बुद्धिमता है कि समय का उचित मूल्यांकन करते हुए उसका उपयोग किया जाए। अपने देश और मानव जाति का उत्थान चाहते हुए निश्चित रूप से हमें अपने समय का सदुपयोग करना सीखना चाहिए, तभी हमारी उन्नति संभव है।



वर्तमान समय में कम्प्यूटर की महत्ता



सुश्री मीना भारद्वाज
सहायक लेखा अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (ले. एवं हक.)
हरियाणा, चण्डीगढ़

कम्प्यूटर को विज्ञान की अद्भुत देन कहा जाता है। कम्प्यूटर की उपयोगिता को देखते हुए आज के युग को कम्प्यूटर युग कहा जाता है। समस्त मानव समाज के लिए यह अनोखा और पथप्रदर्शन करने वाला उपहार है। आधुनिक समय में बिना कम्प्यूटर के जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। इसने मानव जीवन में क्रांति ला दी है। आज कम्प्यूटर मानव जीवन के प्रत्येक कार्यात्मक क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है तथा जीवन का अहम हिस्सा बन गया है। जिस किसी भी क्षेत्र में कम्प्यूटरों का उपयोग किया जा रहा है उसमें उनका कोई विकल्प नहीं मिल सका है। कोविड-19 महामारी के दौरान केवल कम्प्यूटर ही एकमात्र ऐसा साधन रहा है जिसके उपयोग से मानव दिनचर्या

से संबंधित कार्य तथा अन्य समस्त कार्य समय पर सम्पन्न हुए हैं।

आज कम्प्यूटर का हमारे जीवन में बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। इसका उपयोग निम्नलिखित क्षेत्रों में किया जा रहा है :-

कार्यस्थल पर कम्प्यूटर का उपयोग

आजकल कार्यालयों (सरकारी/ प्राइवेट) में समस्त कार्य कम्प्यूटर

पर ही किए जाते हैं। कोविड-19 महामारी के दौरान सरकार द्वारा लॉकडाउन लगाने के समय सरकारी कार्यालयों में भी वर्क फ्रॉम होम कल्चर विकसित हुई जिसके लिए कम्प्यूटर एक वरदान सिद्ध हुआ। इस कार्य में कार्यालयीन कार्य के अलावा बैठक/सेमिनार का आयोजन भी शामिल है जिसमें कहीं से भी भाग लिया जा सकता है। कम्प्यूटर की सहायता से ही



सभी कार्य समयबद्ध तरीके में पूर्ण किए जा सके। पुराने समय में कार्यालयों में जहां समस्त कार्य मैनुअल रूप से किए जाते थे वहीं अब सभी कार्य कम्प्यूटर पर ही किए जाते हैं। इसके इंटरनेट से कनेक्ट होने के साथ इसकी उपयोगिता और भी बढ़ गई है। आज अपने दैनिक कार्यों को पूरा करने के लिए कम्प्यूटर और इंटरनेट पर बहुत भरोसा किया जाता है। अस्पतालों में रोगियों की चिकित्सा इतिहास रखने, बैंकों में वित्तीय लेनदेन, पुलिस विभाग में अपराधियों का रिकार्ड रखने, भारतीय जीवन बीमा निगम द्वारा अपना रिकार्ड रखने, विश्वविद्यालयों द्वारा अपना परीक्षाफल तैयार करने, मीडिया द्वारा अपना कार्य करने, न्यूजप्रिंट

तैयार करने तथा मौसम का पूर्वानुमान लगाने में कम्प्यूटर अपनी अहम भूमिका निभा रहे हैं। बड़े शहरों में सड़कों के यातायात के नियम भी कम्प्यूटर द्वारा नियंत्रित किये जाते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि आज हम हर क्षेत्र में कम्प्यूटर पर निर्भर हो गए हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में कम्प्यूटर की उपयोगिता

कम्प्यूटर का शिक्षा के क्षेत्र में बहुत बड़ा योगदान है। यह विद्यार्थियों तथा शिक्षकों के लिए उपयोगी सिद्ध हुआ है। कोविड-19 महामारी के दौरान स्कूली छात्रों को शिक्षा तथा उनकी परीक्षा भी ऑनलाइन माध्यम से आयोजित की गई जिसमें कम्प्यूटर की महत्वपूर्ण भूमिका थी। कम्प्यूटर के

इंटरनेट से जुड़ा होने पर दस्तावेज़ और टैस्ट पेपर तैयार करना आसान होता है। विद्यार्थियों में सीखने की प्रक्रिया कम्प्यूटर के माध्यम से बढ़ती जा रही है। आजकल स्कूलों में एडमिशन की प्रक्रिया भी ऑनलाइन चल रही है। शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षण पद्धति में सुधार करने में कम्प्यूटर सहायक सिद्ध हुआ है। इसी तरह से विभिन्न परीक्षाओं की तैयारी के लिए ऑनलाइन कोचिंग की सुविधा भी परीक्षार्थियों के लिए उपलब्ध है जोकि कम्प्यूटर के माध्यम से ही संभव है।

दैनिक जीवन में कम्प्यूटर की उपयोगिता

आज घर बैठे ही कम्प्यूटर की सहायता से सभी प्रकार की बुकिंग ऑनलाइन करवाई जा सकती है। इसमें रेलवे की टिकट बुकिंग तथा आरक्षण रद्द करना, अस्पताल में डॉक्टर से परामर्श करने के लिए तारीख तथा समय की ऑनलाइन बुकिंग, होटल में कमरे की ऑनलाइन बुकिंग, हवाई यात्रा की ऑनलाइन बुकिंग, सभी प्रकार के बिल जमा करना, ऑनलाइन शॉपिंग, केमिस्ट से दवाई मँगवाने तथा विभिन्न साइटों से घरेलू



सामान मँगवाने के लिए ऑनलाइन बुकिंग शामिल है जोकि कम्प्यूटर द्वारा कराई जा सकती है।

किसी भी विषय पर सूचना प्राप्त करने में उपयोगिता

आज कम्प्यूटर के माध्यम से गूगल जैसी साइट पर किसी भी विषय पर पूरी जानकारी प्राप्त की जा सकती है जोकि काफी लाभप्रद होती है। जानकारी चाहे विश्व के किसी भी भाग/विषय से संबंधित हो, इसे गूगल अपनी साइट पर उपलब्ध करा देता है।

मनोरंजन के लिए कम्प्यूटर का महत्व

आजकल कम्प्यूटरों को लैपटॉप और अन्य विकल्पों जैसे टैबलेट इत्यादि के साथ प्रतिस्थापित किया गया है। चूँकि ये हल्के वजन वाले होते हैं इसलिए उन्हें अपने साथ कहीं भी ले जाना काफी आसान होता है। कम्प्यूटर की सहायता से फिल्मों, गानों तथा वीडियो गेम का आनंद लिया जा सकता है। इस प्रकार कम्प्यूटर मनोरंजन प्रदान करता है। मनोरंजन के साधन उपलब्ध होने के कारण एकाकीपन का एहसास नहीं होता तथा समय व्यतीत होने का आभास नहीं होता।

यह एक ऐसा माध्यम है जिसने हमारे जीवन को बिल्कुल बदल दिया है।

अंतरिक्ष अभियान तथा उपग्रह प्रक्षेपण कार्यक्रम में कम्प्यूटरों का प्रयोग

व्यापक रूप में कृत्रिम उपग्रहों पर मनुष्य को भेजने, उड़ान पर नियंत्रण करने के लिए कम्प्यूटरों का प्रयोग किया जाता है। आज प्रत्येक अंतरिक्ष अभियान तथा उपग्रह प्रक्षेपण कार्यक्रम में कम्प्यूटरों का प्रयोग अनिवार्य रूप से किया जाता है। इनसे संबंधित समस्त प्रक्रियाएँ—प्रक्षेपण कोण, अपेक्षित वेग तथा प्रक्षेपण पथ की दिशा आदि का निर्धारण कम्प्यूटरों द्वारा ही किया जाता है।

अन्य लाभ

कम्प्यूटर के बाद आम आदमी का काम और आसान करने के लिए रोबोट बनाए जा रहे हैं। रोबोट को बनाने में कम्प्यूटर अपनी अहम भूमिका निभा रहा है। रोबोट की मदद से हर कार्य आसानी से किया जा सकेगा।

अंत में यही कहा जा सकता है कि हर वस्तु के दो पहलु होते हैं सकारात्मक तथा नकारात्मक। सकारात्मक पहलुओं की दृष्टि से आज कम्प्यूटर ने हमारा जीवन और काम बहुत आसान बना दिया है। कम्प्यूटर आधुनिक तकनीक का एक बहुत बड़ा आविष्कार है। यह हर किसी के जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है। यह कम समय में मानव से ज्यादा काम



कर सकता है और वह भी बिना किसी त्रुटि के। इससे कागजरहित प्रणाली विकसित हुई है क्योंकि सूचना का आदान-प्रदान ई-मेल के माध्यम से किया जाता है। हार्ड प्रति की आवश्यकता न होने/कम होने के कारण मितव्ययिता को भी बढ़ावा मिला है। कम श्रमबल के साथ थोड़े समय में अधिक कार्य दक्षतापूर्वक सम्पन्न किया जाता है। समस्त सूचना को एक ही स्थान पर मेल के माध्यम से किसी भी समय कहीं भी उपलब्ध कराया जा सकता है। आज के आधुनिक समय की नौकरियों के लिये कम्प्यूटर की जानकारी का होना लगभग अनिवार्य हो चुका है। इसमें दक्ष होने के लिये उच्च शिक्षा में नेटवर्क एडमिनिस्ट्रेशन, हार्डवेयर मेंटेनेंस, सॉफ्टवेयर इंस्टॉलेशन आदि विषय काफी लोकप्रिय हैं। यह सत्य है कि आज कम्प्यूटर भारत तथा भारत जैसे ही अन्य विकासशील देशों में विद्यालयों, कार्यालयों तथा घरों की आवश्यकता बनता जा रहा है।

तथापि नकारात्मक पहलुओं की दृष्टि से कम्प्यूटर ने मानव को पंगु बना दिया है। कई लोगों का काम अकेले करने के कारण कम्प्यूटर से समाज में बेकारी की समस्या भी

पैदा हो रही है। मनुष्य को कम्प्यूटर को एक सीमा तक ही प्रयोग में लाना चाहिए। मनुष्य स्वयं निष्क्रिय न बने बल्कि वह स्वयं को सक्रिय बनाये रखे तथा अपनी क्षमता को सुरक्षित रखे। हमें पूर्णरूपेण यन्त्रों पर निर्भर नहीं रहना चाहिए। कम्प्यूटर से काम कठिन समस्याओं के हल के लिए ही लेना चाहिए। हमें उसका दास नहीं बनना चाहिए, अपितु उसको अपना मित्र बनाना चाहिए। कम्प्यूटर के सैकड़ों फायदे होने के साथ-साथ इससे साइबर अपराध, अश्लील वेबसाइट, जैसे नुकसान भी होते हैं जिसकी पहुँच बच्चों और विद्यार्थियों तक आसानी से हो जाती है। हालांकि कुछ उपायों को अपनाकर हम इसके कई

नकारात्मक प्रभावों से बच भी सकते हैं। कम्प्यूटर चाहे कम समय में मानव से ज्यादा काम कर ले और वह भी बिना किसी त्रुटि के लेकिन वह मानव मस्तिष्क से तेज नहीं माना जा सकता क्योंकि इसका आविष्कार करने वाला मनुष्य ही है। इसलिए कम्प्यूटर से श्रेष्ठ मानव है। कम्प्यूटर स्क्रीन के निरंतर संपर्क में रहने से आँखों पर बुरा प्रभाव पड़ता है। कम्प्यूटर पर लगातार काम करने वालों को जोड़ों में दर्द तथा गर्दन की हड्डी में विकार की शिकायत होने की संभावना रहती है। कम्प्यूटर का प्रयोग रचनात्मक कार्यों में किया जाता है अथवा विध्वंसक कार्यों में, यह मनुष्य के अपने विवेक पर निर्भर करता है।



हिंदी की ओर



अंकित कुमार ठाकुर, एमटीएस
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. व हक.)
हरियाणा, चण्डीगढ़-160020

किसी भी भाषा के बारे में बात होती है तो, मुझे वो कहानी याद आती है जो हमने कक्षा बारहवीं की अंग्रेजी की किताब 'फ्लेमिंगो' में पढ़ी थी। विडंबना यह भी थी कि अंग्रेजी की उस किताब के पहले ही पाठ का नाम था 'द लास्ट लेसन' यानी की 'आखिरी पाठ'।

कहानी उस दौर में स्थापित की गई थी जब बिस्मार्क शासित प्रुशिया ने फ्रांस की सेनाओं को हराकर फ्रांस पर कब्जा कर लिया था। ऐसे में ही एक दिन नन्हा सा 'फ्रान्ज़' जो फ्रेंच भाषा का बहुत अधिक ज्ञान नहीं रखता था, उसके कक्षा में देरी से पहुँचने पर उसके शिक्षक 'एम् हेमल' ने ना उसे डांटा, ना उसे कोई सजा दी।

उन्होंने केवल अपना दुःख व्यक्त किया और दुःख व्यक्त करते हुए ही वे जाने कैसी गूढ़ बातें कहते

गए, सभ्यताओं के बारे में, संस्कृति के बारे में, जिसने हर पढ़ने वाले को उनकी एक-एक कही हुई बात को बार-बार सोचने के लिए मजबूर किया। हेमल के दुःखी होने के पीछे की वजह यह भी थी कि नए नियमों के मुताबिक फ्रेंच भाषा को विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम से हटाया जा रहा था और जर्मन भाषा का पाठन अनिवार्य किया जा रहा था।

एम् हेमल ने उस आखिरी पाठ में इस बात पर जोर दिया कि भाषा किसी भी सभ्यता की पहचान होती है, और उन्होंने दुःख व्यक्त किया, समय रहते हुए अपनी भाषा की कीमत ना पहचान पाने का। उन्हें दुःख था कि आने वाली पीढ़ी केवल भाषा ही नहीं, भाषा के साथ-साथ अपनी सभ्यता को भी भूल जाने वाली थी। खैर, हम सबको ही मालूम है कि फ्रेंच भाषा

ने ये त्रासदी झेली और उसके बावजूद भी लुप्त नहीं हुई बल्कि विश्व पटल पर एक अमिट पहचान भी बनाये हुए है।

अंग्रेजी की उस किताब में यह पाठ पढ़कर स्वतः ही हिंदी भाषा की याद आ जाती है और ऐसा होना स्वाभाविक है। हमने हिंदी को पराया नहीं किया है। आज भी भारत में हिंदी-भाषी बहुतायत हैं। और तो और हमने हिंदी को बचाने के लिए साल का एक दिन हिंदी के नाम भी कर दिया है। जगह-जगह कार्यक्रम होते हैं, हिंदी के नाम पर। हिंदी भाषा के लेखक, पत्रकार आदि भी पिछले कुछ वर्षों से सोशल नेटवर्क पर छाए रहे हैं।

ये सब प्रयास सराहनीय हैं और ऐसे प्रयास होते रहने चाहिए लेकिन गौर करने पर ये सभी प्रयास सतही मालूम होते हैं। हिंदी भाषा का क्षरण केवल यहीं तक

सीमित नहीं है कि हिंदी भाषा को अपने ही समाज के द्वारा दोयम दर्जे की भाषा माना जाने लगा है परन्तु नई पीढ़ी की घटती हुई रुचि भी इस बात का प्रमाण है कि हिंदी भाषा को बचाने की आवश्यकता है।

इक्कीसवीं सदी की शुरुआत में दुनिया में सात हजार के करीब स्थानीय भाषाएँ बोली जाती थी। शोध से पता चलता है कि इक्कीसवीं सदी के पचासवें वर्ष तक पहुँचते-पहुँचते ही इनमें से केवल छः सौ तीस-चालीस के करीब भाषाओं का अस्तित्व बचेगा। इन सात हजार भाषाओं में से कुछ भाषाओं का इस्तेमाल करने वाले लोगों की संख्या दस हजार से भी कम है।

ऐसे में, ये सोचना कि हिंदी भाषा तो फिर भी बेहतर हाल में है, लाज़िमी होगा। पर, अगर आप भाषाओं के बारे में जानने वाले हैं, तो आप जानते होंगे कि हिंदी केवल एक भाषा नहीं है, हिंदी के कई रूप हैं जो अलग-अलग क्षेत्रों में प्रचलित हैं। हिंदी भाषा की सबसे खूबसूरत बात यह है कि भाषा हर क्षेत्र की विविधता को अपने में समाहित कर लेती है। इसमें अंग्रेजी और उर्दू के शब्द तो

हैं ही पर साथ-साथ हिंदी भाषा का खुद का रूप भी बोलने वाले के हिसाब से बदलता रहता है। राजस्थानी, हरियाणवी, बिहारी, अवधी बोली हो या खड़ी बोली या दक्खिनी हिंदी, हिंदी का हर स्वरूप अद्भुत सुन्दरता समेटे हुए है।

ऐसे में एक सवाल स्वतः ही प्रस्फुटित होता है कि जब हम हिंदी को बचाने की बात करते हैं तो किस हिंदी को बचाने की बात करते हैं? हम आमतौर पर बोली जाने वाली हिंदी को बचा भी ले जाएँ तो भी हिंदी के स्थानीय स्वरूप को बचाने की आवश्यकता महसूस होती है। क्योंकि हिंदी का हर स्वरूप किसी न किसी क्षेत्रीय सभ्यता की विरासत की मास्टर चाबी है। ऐसे में, समझ आता है कि हिंदी को केवल बोलकर प्रयोग में लाना ही काफी नहीं होगा। हिंदी को केवल बोले नहीं, हिंदी को पढ़ें भी और ज्यादा से ज्यादा लिखें भी। और सबसे अहम् बात, कोशिश करें की आप सही हिंदी लिखें, सही हिंदी पढ़ें।

अक्सर ऐसा देखा जाता है कि जब इन्सान आकर्षणों की खोजबीन से थक जाता है तो वो अपने अन्दर

तलाशता है यथार्थता को। ये इंसानी फितरत ही है कि जब वो टहलते-टहलते थक जाता है तो घर की ओर लौटना चाहता है। आने वाले निकट भविष्य में ऐसे भी दिन आयेंगे जब आप और हम अपने हिंदी की ओर यानि अपने घर की ओर, अपनी अतुलनीय सभ्यता और संस्कृति की ओर लौटना चाहेंगे क्योंकि हिंदी भाषा खुद में ही भारतीय सभ्यता के रहस्य को समेटे हुए है। इन्सान कितना भी आगे क्यों ना बढ़ जाये, पर उसे हमेशा अपनी जड़, अपनी पुरानी सभ्यता की ओर लौटना ही होता है वैसे ही जैसे घर वापस जाना होता है।

हिंदी भाषा हमारी भारतीय संस्कृति और सभ्यता की कुंजी है। जब तक हमारे पास हमारी भाषा है तब तक हम कितने भी दूर क्यों न चले जाएँ टहलते-टहलते, भटकते-भटकते, हमारे पास एक आश्वासन तो है, कि हम जब चाहें तब अपने घर की ओर, अपने सभ्यता की ओर वापिस लौट सकते हैं, पर शर्त यह है कि हमें ये चाबी संभाल कर रखनी होगी ताकि जब हम लौटें, जब भी हम लौटें तब हमारे पास लौटने की कोई जगह तो हो, कोई संभाव्य साधन तो हो।

कार्यालय में प्रयोग होने वाले कुछ महत्वपूर्ण राजभाषा अधिनियम/नियम

सुश्री पूजा सिंह मंडल
हिंदी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (ले. व हक.)
हरियाणा, चण्डीगढ़

1. हिंदी में प्राप्त पत्रों के उत्तर हिंदी में ही देना अनिवार्य है

राजभाषा अधिनियम 1976 के नियम 5 में यह प्रावधान किया गया है कि हिंदी में प्राप्त पत्रों के उत्तर सभी केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों द्वारा हिंदी में ही दिए जाएंगे।

2. 14 प्रकार के दस्तावेज द्विभाषी रूप में जारी करना

राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3 की उपधारा (3) अथवा धारा 3(3) में यह प्रावधान किया गया है कि किसी भी केन्द्रीय सरकार के कार्यक्रमों में 14 प्रकार के दस्तावेज नामतः सामान्य आदेश, संकल्प, नियम, अधिसूचनाएँ, प्रशासनिक एवं अन्य रिपोर्ट, प्रेस विज्ञप्तियाँ, सरकारी कागज पत्र, संविदाएं, करार, अनुज्ञप्तियाँ, अनुज्ञा पत्र, टेंडर

नोटिस, टेंडर फार्म, संसर के समक्ष प्रस्तुत की जाने वाली प्रशासनिक एवं अन्य रिपोर्ट अनिवार्य रूप से द्विभाषी में जारी किए जाएंगे। साथ ही, ऐसे दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले अधिकारियों का यह उत्तरदायित्व है कि वे यह सुनिश्चित कर लें कि ऐसे सभी दस्तावेज द्विभाषी रूप में ही तैयार किए जाते हैं और जारी किए जाते हैं।

3. केन्द्र सरकार के कार्यालयों के बीच पत्राचार

(क) मंत्रालयों/विभागों के बीच पत्राचार हिंदी अथवा अंग्रेजी में होगा।

(ख) 'क' क्षेत्र में स्थित मंत्रालयों/कार्यालयों, विभागों और उनके संबंध तथा अधीनस्थ कार्यालयों के बीच केन्द्र सरकार द्वारा

यथानिर्धारित अनुपात में हिंदी में पत्राचार होगा। इसके साथ ही हिंदी पत्राचार का प्रतिशत राजभाषा विभाग द्वारा जारी लक्ष्यों के अनुरूप होगा।

(ग) 'क' क्षेत्र के कार्यालयों के बीच पत्राचार केवल हिंदी में होगा।

(घ) अंतरक्षेत्रीय कार्यालयों के बीच पत्राचार हिंदी अथवा अंग्रेजी में होगा।

(ङ) 'ख' अथवा 'ग' क्षेत्र में कार्यालयों के बीच पत्राचार हिंदी अथवा अंग्रेजी में हो सकता है।

4. केन्द्र सरकार के कार्यालयों से भिन्न कार्यालयों तथा राज्यों आदि के साथ पत्राचार की व्यवस्था

(क) 'क' क्षेत्र के किसी राज्य या किसी व्यक्ति के साथ पत्राचार

हिंदी में होगा और यदि किसी मामले में अंग्रेजी भाषा में भेजा जाता है तो उसके साथ उसका हिंदी अनुवाद भी भेजना होगा। 'क' क्षेत्र में स्थित राज्य सरकारों एवं जनता के साथ सामान्य स्थिति में पत्राचार केवल हिंदी भाषा में होगा।

(ख) 'ख' क्षेत्र की राज्य सरकारों के साथ पत्राचार हिंदी और अंग्रेजी में होगा और यदि पत्र अंग्रेजी भाषा में जारी किया जाएगा तो हिंदी अनुवाद साथ में भेजना होगा। राज्य सरकार किसी अवधि विशेष के लिए किसी वर्ग या श्रेणी विशेष का पत्राचार अंग्रेजी अथवा हिंदी में तथा अन्य भाषा में अनुवाद सहित भेजने के लिए कह सकती है और उस स्थिति में उन्हें अनुवाद भेजा जाना चाहिए।

'ख' क्षेत्र के राज्य में किसी व्यक्ति के साथ पत्राचार हिंदी अथवा अंग्रेजी में होगा।

(ग) 'ग' क्षेत्र की राज्य सरकारों अथवा वहाँ की जनता के साथ पत्राचार केवल अंग्रेजी में होगा।

(घ) 'ग' क्षेत्र में स्थिति केन्द्रीय सरकार के कार्यालय 'क' अथवा

'ख' क्षेत्र के किसी राज्य अथवा संघ शासित प्रदेश को अपने पत्र हिंदी या अंग्रेजी में भेज सकता है।

5. आवेदन, अभ्यावेदन आदि

(क) कोई भी कर्मचारी आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिंदी या अंग्रेजी में कर सकता है।

(ख) जब कोई आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिंदी में किया गया हो या उस पर हिंदी में हस्ताक्षर किए गए हों, तब उसका उत्तर हिंदी में ही दिया जाएगा।

(ग) यदि कोई कर्मचारी यह चाहता है कि सेवा संबंधी विषयों (अनुशासनिक कार्यवाहियां समेत) से संबंधित कोई आदेश या सूचना, जिसका कर्मचारी पर तामील किया जाना अपेक्षित है, यथास्थिति, हिंदी या अंग्रेजी में होनी चाहिए तो वह उसे उसी भाषा में दी जाएगी।

6. केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में टिप्पणों का लिखा जाना

(क) कोई कर्मचारी किसी फाइल पर टिप्पण या कार्यवृत्त हिंदी या अंग्रेजी में लिख सकता है और उससे यह अपेक्षा नहीं की जाएगी कि वह उसका अनुवाद दूसरी भाषा में प्रस्तुत करे।

(ख) केन्द्रीय सरकार का कोई भी कर्मचारी, जो हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान रखता है, हिंदी में किसी दस्तावेज के अंग्रेजी अनुवाद की मांग तभी कर सकता है, जब वह दस्तावेज विधिक या तकनीकी प्रकृति का है, अन्यथा नहीं।

7. हिंदी में प्रवीणता

यदि किसी कर्मचारी ने —

(क) मैट्रिक परीक्षा या उसके समतुल्य या उससे उच्चतर कोई परीक्षा हिंदी के माध्यम से उत्तीर्ण कर ली है; या

(ख) स्नातक परीक्षा में अथवा स्नातक परीक्षा के समतुल्य या उससे उच्चतर किसी अन्य परीक्षा में हिंदी को एक वैकल्पिक विषय के रूप में लिया हो; या

(ग) यदि वह इन नियमों से उपाबद्ध प्रारूप में यह घोषणा करता है कि उसे हिंदी में प्रवीणता प्राप्त है :—

तो उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिंदी में प्रवीणता प्राप्त कर ली है।

8. हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान

यदि किसी कर्मचारी ने —

(क) मैट्रिक परीक्षा या उसके समतुल्य या उससे उच्चतर परीक्षा हिंदी विषय के साथ उत्तीर्ण कर ली है; या

(ख) केन्द्रीय सरकार की हिंदी शिक्षण योजना के अंतर्गत आयोजित प्राज्ञ परीक्षा या यदि उस सरकार द्वारा किसी विशिष्ट प्रवर्ग के पदों के सम्बन्ध में उस योजना के अंतर्गत कोई निम्नतर परीक्षा विनिर्दिष्ट है, वह परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है; या

(ग) केन्द्रीय सरकार द्वारा उस निमित्त विनिर्दिष्ट कोई अन्य परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है; या

(घ) यदि वह इन नियमों से उपाबद्ध प्रारूप में यह घोषणा करता है कि उसने ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया है, तो उसके बारे में यह

समझा जाएगा कि उसने हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

9. मैनुअल, संहिताएं, प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, लेखन सामग्री आदि

(क) केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों से संबंधित सभी मैनुअल, संहिताएं और प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, हिंदी और अंग्रेजी में द्विभाषिक रूप से यथास्थिति, मुद्रित या साइक्लोस्टाइल किया जाएगा और प्रकाशित किया जाएगा।

(ख) केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग किए जाने वाले रजिस्टरों के प्रारूप और शीर्षक हिंदी और अंग्रेजी में होंगे।

(ग) केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग के लिए सभी नामपट्ट, सूचना पट्ट, पत्रशीर्ष और लिफाफों पर उत्कीर्ण लेख तथा लेखन सामग्री की अन्य मर्दें हिंदी और अंग्रेजी में लिखी जाएंगी, मुद्रित या उत्कीर्ण होंगी।

यह लेख कार्यालय में सभी को राजभाषा नियमों से अवगत कराने हेतु तथा राजभाषा हिंदी में कामकाज को बढ़ावा देने के लिए लिखा गया है। यह लेख कार्यशाला संदर्शिका एवं राजभाषा विभाग की वेबसाइट पर उपलब्ध राजभाषा नियमों का मिलाजुला संकलन है।



राम-कथा की विश्वजनीयता



अभय राम सिंह
से.नि. सहायक लेखाधिकारी
ग्राम – मोहम्मदपुर,
पो. – मरहट (खुटहन)
जिला जौनपुर (उत्तर प्रदेश)

महर्षि वाल्मीकि ने 'रामायण' की रचना की। 'अयन' अथवा 'अयण' के दो अर्थ हैं – घर और चलना। तुलसीदास जी ने रामचरित मानस में उकेरा है :—

पूँछेहु मोहि कि रहौ कह मैं पूछत सकुचाउं।
जहं न होहु तहं देहु कहि तुम्हहि देखावों ढाउं॥

तात्पर्य यह है कि यद्यपि राम अपना घर बनाने के लिए स्थान चयन करने हेतु पूछते हैं लेकिन वास्तव में सर्वत्र व्याप्त हैं। आगे गोस्वामी जी पुनः कहते हैं :—

जाति-पांति धनु धरम बड़ाई।
प्रिय परिवार सदन सुखदाई॥
सब तजि तुम्हहि रहइ उर लाई।
तेहि के हृदय रहहु रघुराई॥

अर्थात् जाति-पांति, धन-धर्म, बड़प्पन आदि सभी वंचनाओं को तजने वाला मन, तुममें लवलीन रहने वाला मन तुम्हारा निवास हो। उन्होंने "सीय राम मय सब जग जानी। करहु प्रनाम जोरि जुग पानी।" कहकर भक्ति के परिपूर्ण राम कथा की निरन्तरता पर

बल दिया है। राम-कथा के माध्यम से वे सभी प्रकार के संशय के निवारण हेतु लिखते हैं :—

राम-कथा सुन्दर करतारी। संसय विहग उड़ावनहारी।

राम करुणामय हैं। राम धर्म और आचरण के मूर्त रूप हैं। वे मर्यादा पुरुषोत्तम हैं। असीम होकर भी सीमा में रहने की कला रामत्व है। राम नाम का अपना महत्व है। तुलसीदास ने अपनी निम्न पंक्तियों —

राम नाम मणि दीप धरु जीह देहरी द्वार।
तुलसी भीतर बाहरहुँ, जो चाहत उजियार॥

के माध्यम से यह कहा है कि अन्तरात्मा और बाह्य-जगत दोनों के मध्य वाणी देहरी की तरह है। यदि अन्दर और बाहर दोनों ओर आप को प्रकाश की आवश्यकता है तो वाणी की इस देहरी पर राम नाम का बिना तेल-बाती का मणिदीप रख दें।

राम को राजतिलक के स्थान पर चौदह वर्ष का वनवास जाना पड़ा। इस प्रकार वे अयोध्या के राम से निर्वासित हैं, परन्तु वे विस्तृत वन भाग के महीप हैं। श्रेष्ठ साहित्यकार पं. विद्यानिवास मिश्र के अनुसार —

“इसलिए मैं कहता हूँ, राम का घर वन है। राम का निरन्तर चलते रहना ही उनका जीवन है और जन-जन के पवित्र होने की यात्रा है, पवित्रता की गतिशीलता है।” वन में राम ऋषियों, मुनियों के सानिध्य में जीवन बिताए। शबरी के झूठे बेर खाकर उन्होंने भक्ति की पराकाष्ठा को दर्शाया। तुलसीदास ने श्री राम के मुख से “शिव द्रोही मम दास कहावा, सोइ नर मोहि सपनेहुँ नहिं भावा।” कहलवाकर सामाजिक समरसता एवं समभाव को दर्शाया है। “एकं सत बिप्रः बहुधा बदन्ति” प्राचीन भारतीय संस्कृति की पोषक है।

राम कथा वाल्मीकि और तुलसीदास तक ही सीमित नहीं है। संत कबीर निर्गुण राम के उपासक थे। तुलसीदास से 250 वर्ष पूर्व अमीर खुसरो ने लिखा ‘वो हम सबके मालिक राम’ तो तुलसी के समकालीन रहीम राम के आदर्श को नमन करते हुए लिखते हैं –

राम चरित मानस विमल, संतन जीवन प्राण।

हिन्दुआन को वेद सम, यवनही प्रकट कुरान।।

वर्ष 1623 में सादुल्लाह मसीह की ‘दास्ताने रामो-सीता’ फारसी भाषा जनता में लोकप्रिय हुई।

भारत में विभिन्न भारतीय भाषाओं में राम-कथा की रचना की गई है। तुलसीदास के रामचरित मानस के लगभग सौ वर्ष पूर्व बांग्ला भाषा में आदि कवि कृत्तिवास ने ‘कृत्तिवास रामायण’ की रचना की थी। बंगाल के चैतन्य महाप्रभु ने तुलसी के आविर्भाव के पूर्व ही ‘हरे-रामा, हरे-कृष्णा’ को गुन्जायमान कर दिया था। सभी क्षेत्रों, भाषाओं, जातियों के लोगों ने अपने-अपने तरीके से राम-कथा की रचना की है। व्यास रचित महाभारत में भी ‘रामोख्यान’ के रूप में यह

कथा वर्णित है। बौद्ध परम्परा में ‘दशरथ जातक’, ‘अनामक जातक’ और ‘दशरथ कथानक’ नामक तीन जातक कथाएँ उपलब्ध हैं। जैन साहित्य में राम कथा से संबंधित कई प्रमुख ग्रंथ हैं। विभिन्न भारतीय भाषाओं – हिंदी में 11, मराठी में 8, बांग्ला में 25, तमिल में 12, तेलुगू में 12 और उड़िया में 6 रामायणें मिलती हैं। इसके अतिरिक्त गुजराती, मलयालम, कन्नड़, असमिया, कश्मीरी, उर्दू, अरबी, फारसी, संथाली आदि भाषाओं में भी अपनी-अपनी तरह से राम-कथा लिखी गई है। विदेशों में भी अपनी-अपनी तरह राम कथाएँ प्रचलित हैं। तिब्बत की ‘तिब्बती रामायण’, पूर्वी तुर्किस्तान की ‘खोतानी रामायण’, इंडोनेशिया की ‘काकरिन रामायण’, जावा का ‘सेरतराम’, सैरी राम, रामकोलिंग, पालानी राम-कथा; इण्डो-चीन की ‘रामकेर्ति’, खमैर रामायण, म्यांमार की ‘यूलोकी रामयाणन’, थाइलैंड की ‘रामकियेन’ आदि ग्रंथों में राम चरित्र का विशद वर्णन है। विश्व के 70 से अधिक भाषाओं में रामायण का अनुवाद हुआ है जो यह दर्शाता है कि राम का चरित्र पूरे विश्व के लिए एक आदर्श चरित्र है। तुलसीदास ने रामचरित मानस में उकेरा है :-



समर विजय रघुवीर के चरित्र जे सुनहिं सुजान।
विजय, विवेक, विभूति, नित तिन्हहिं देहिं भगवान।।

यानी लंका के विजय के रूप में राम चरित्र सुनने वाले को विजय, विवेक और विभूति तीनों की प्राप्ति होती है परन्तु ऐसे व्यक्ति को सुजान अथवा सुन्दर आचरण वाला होना अमीष्ट है। तुलसीदास ने ठीक ही कहा है — ‘रघुवर छवि के समान रघुवर छवि बनिया’। राम—कथा का गुण—गान पूरे विश्व के लिए एक संदेश है कि हम एक अच्छे इंसान बनें और हमारे कर्मों में आदर्श की पर्याप्त झलक हो। श्री राम जिन जीवन मूल्यों, आदर्शों, मर्यादा और सामाजिक समरसता के लिए संघर्ष करते हैं वे भारतीयों के जीवन—संस्कृति में रचे बसे हैं। इसीलिए हर भारतीय अपनी ‘राम—कहानी’ (जीवन कथा) सुनाता है और परस्पर मिलने पर ‘राम—राम’ का संबोधन करता है। निश्चय ही राम—कथा सारे विश्व के लिए एक प्रेरणा स्रोत है। श्री राम ‘मंगल भवन अमंगल हारी’ हैं।

राम कथा का मानवीय स्वरूप विश्व जन के लिए महानायकत्व है। उनका जीवन एक गहन सांस्कृतिक पाठ है। गिलहरी से सहायता प्राप्त कर, भिलनी से बेर खाकर, हनुमान को साथी बनाकर उन्होंने एक अलग आयाम प्रदान किया। राम कथा की भाषा जनता के सरोकारों से आती है, इसलिए जनता को छूती है। प्रारंभिक जीवन में सत्ता के त्याग की अनूठी धारणा आकार लेती है। उनके द्वारा रावण का वध कर विजय दशमी का पर्व मनाना आसुरी तत्वों के विनाश का एक संकल्प है। यजुर्वेद में ठीक ही कहा गया है — ‘तन्मे मनः शिव संकल्पम् अस्तु’ यानी हमारे मन से अच्छे संकल्प प्रवाहित हो। वनवास के उपरांत जब राम अयोध्या पधारे तो दीपावली के रूप में प्रकाश पुंज

बिखरे गए। दीपावली अन्ततः राम चरित का ही गुणगान है जिसे युवा कवि भारत भूषण जोशी ने अपनी निम्न पंक्तियों में उकेरा है जो राम कथा की निरन्तरता का एक प्रतीक है :—

आ गई इस वर्ष फिर दीपावली,
गुनगुनाएँ राम की चरितावली।
राम के आगमन पथ पर व्यग्र सी,
दास तुलसी की खड़ी कवितावली।
दीप की झिलमिल से पुलकित हो रही,
निशि अमावस की सलोनी साँवली।
ग्राम जन और परिजनों से भेंट कर,
हो रही सीता सुहागन बावली।
हैं प्रकाशित दीप में स्तुति के स्वर,
दास तुलसी गा रहे विरुद्धावली।
ज्योति का पर्व शुभ हो आप को,
तिमिर पथ में जग उठे तारावली।



पावन पर्व छठ



नीतीश कुमार, डी.ई.ओ.
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, मध्य रेल,
नवीन प्रशासनिक भवन, चौथी मंजिल
मुम्बई-400001

छठ का पावन पर्व हिन्दू धर्म का एक प्रमुख पर्व है, इस पर्व में एकमात्र जागृत देवता भगवान सूर्य और उसकी बहन छठ माता की पूजा होती है। छठ का पर्व कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की षष्ठी तिथि को मनाया जाता है। इस पर्व में श्रद्धालु किसी नदी या तालाब के किनारे पर जाकर भगवान् सूर्य एवं छठ मैया की अराधना करते हैं। छठ पूजा मुख्यतः बिहार, उत्तर प्रदेश एवं पश्चिम बंगाल में मनाया जाता है। ऐसी मान्यता है कि स्त्रियाँ अपने पति की दीर्घायु एवं संतान सुख की प्राप्ति हेतु इस पर्व को बड़ी श्रद्धा पूर्वक मनाती हैं। इस पर्व को करने से घर में धनधान्य की वृद्धि होती है एवं खुशहाली आती है। यह व्रत खासकर महिलाएँ करती थी परन्तु अब पुरुष वर्ग भी इस पर्व

में भाग लेने लगे हैं। इस पर्व की उत्पत्ति के समय का कोई वास्तविक ज्ञान नहीं है परन्तु यह माना जाता है कि छठ पूजा सर्वप्रथम सूर्य पुत्र कर्ण द्वारा की गई थी।

इस पावन पर्व की तैयारी दिवाली के तुरंत बाद शुरू हो जाती है एवं यह पर्व चार दिनों तक चलता है।

जिसमें व्रती 36 घंटों का निर्जला व्रत रखते हैं। पर्व के पहले दिन को नहाय खाय कहा जाता है जिसमें तालाब या नदी में स्नान करने के उपरांत घर आकर व्रती महिलाएं चने की दाल, चावल और लौकी की सब्जी का सेवन करती हैं।

दूसरे दिन खरना की विधि की जाती है जिसमें व्रती पूरे दिन



निर्जला उपवास रहकर शाम में गन्ने के रस या गुड़ से बने व्यंजन (रसिया) एवं चावल की खीर को प्रसाद के रूप में सेवन करते हैं और पूरे परिवार को खिलाते हैं। इस दिन बनी गुड़ की खीर (रसिया) बेहद स्वादिष्ट होती है।

पर्व के तीसरे दिन सुबह से शाम तक उपवास रखकर व्रती पकवान जैसे ठेकुआ, सांचा, चावल के लड्डू अपने हाथ से बनाये मिट्टी के चूल्हे पर आम की लकड़ी के जलावन लाकर पकाती हैं। शाम के समय सामर्थ्य के अनुसार पूजा सामग्री, पकवान एवं फल को व्रती के पुत्र या पति बांस के डलिये में रखकर तालाब (नदीघाट) ले जाते

हैं और पूरे दिन निर्जला उपवास रहकर व्रती शाम को डूबते भगवान सूर्य को अर्घ्य देते हैं।

शाम के अर्घ्य के बाद घर आकर वैसे ही सारा सामान रख दिया जाता है। इस दिन रात्रि में छठ व्रती भजन और गीत के साथ-साथ श्री छठ पूजन की कथा सुनते हैं।

पर्व के आखिरी और चौथे दिन सुबह-सुबह भगवान सूर्य के निकलने से पहले व्रती और उनके परिवार वाले डलिया लेकर नदीघाट पर जाते हैं। व्रती जल में हाथ जोड़कर सूर्य के उदय होने की प्रतीक्षा करते हैं एवं अपने संतान और पति की रक्षा, घर

परिवार की खुशहाली, समृद्धि के लिये प्रार्थना करती हैं और उगते सूर्य को अर्घ्य देती हैं। अर्घ्य के बाद व्रती प्रसाद का वितरण करती हैं और स्वयं भी प्रसाद खाकर व्रत खोलती हैं और इस तरह इस पावन पर्व का समापन होता है।

वर्तमान समय में छठ का त्यौहार बिहार के अलावा अन्य राज्यों जैसे कि ओड़िशा, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, तमिलनाडु, मध्य प्रदेश में भी प्रचलित होने लगा है साथ ही दुनिया के कई देश जैसे नेपाल, मॉरीशस में लोग इस पर्व को श्रद्धा पूर्वक मनाने लगे हैं। वो दिन दूर नहीं जब इस महान पर्व की ख्याति पूरी दुनिया में होगी।



रवीन्द्रनाथ टैगोर की नारी-केंद्रित लघु कथा - पत्नी का पत्र



सुश्री सोमवती

वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

त्रिपुरा-799006

कार्यालय प्रधान महा-लेखाकार, त्रिपुरा में वरिष्ठ अनुवादक के पद पर रहते हुए अपने रोजमर्रा के व्यस्ततम कार्यों से फुर्सत के चंद पल निकालकर बांग्ला साहित्य के सुप्रसिद्ध रत्न गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर की कहानियों का गहन अध्ययन करने का सुनहरा अवसर मिला। जब मैंने इनकी कहानियों को नारी-दृष्टिकोण से देखा तो पाया कि साहित्य के इस रत्न ने नारी हृदय एवं उसकी संवेदनाओं को एक सुंदर मोती के रूप में पिरोकर उनकी सहेजता को बरकरार रखते हुए एक अद्भुत कृति का सृजन किया है जिनके नारी किरदार/चरित्र कालजयी है एवं पुरुष प्रधान समाज की सोच पर कड़े प्रश्न-चिन्ह उठाते हैं। इनकी कहानियां नारी जीवन की सूक्ष्मतम बारीकियों एवं जटिलताओं को

यथार्थ एवं विशुद्ध रूप में पाठकों के समक्ष उजागर करती हैं एवं अनन्त प्रश्नों के सागर में पाठकों को ले जाती हैं। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर की ऐसी ही एक कहानी 'पत्नी का पत्र' आप पाठकगणों के लिए प्रस्तुत है जिसका नारी पात्र 'मृणाल' बौद्धिक होने के साथ-साथ समाज की परवाह किए बिना मजबूत निर्णय लेने में सक्षम भी है और अपनी सोच से पाठक मन को विचलित कर देती है।

पत्नी का पत्र

आज हमारे विवाह को पंद्रह वर्ष हो गए, लेकिन अभी तक मैंने कभी तुमको चिट्ठी न लिखी। सदा तुम्हारे पास ही बनी रही — न जाने कितनी बातें कहती सुनती रही, पर चिट्ठी लिखने लायक दूरी कभी नहीं मिली। आज मैं श्री क्षेत्र में

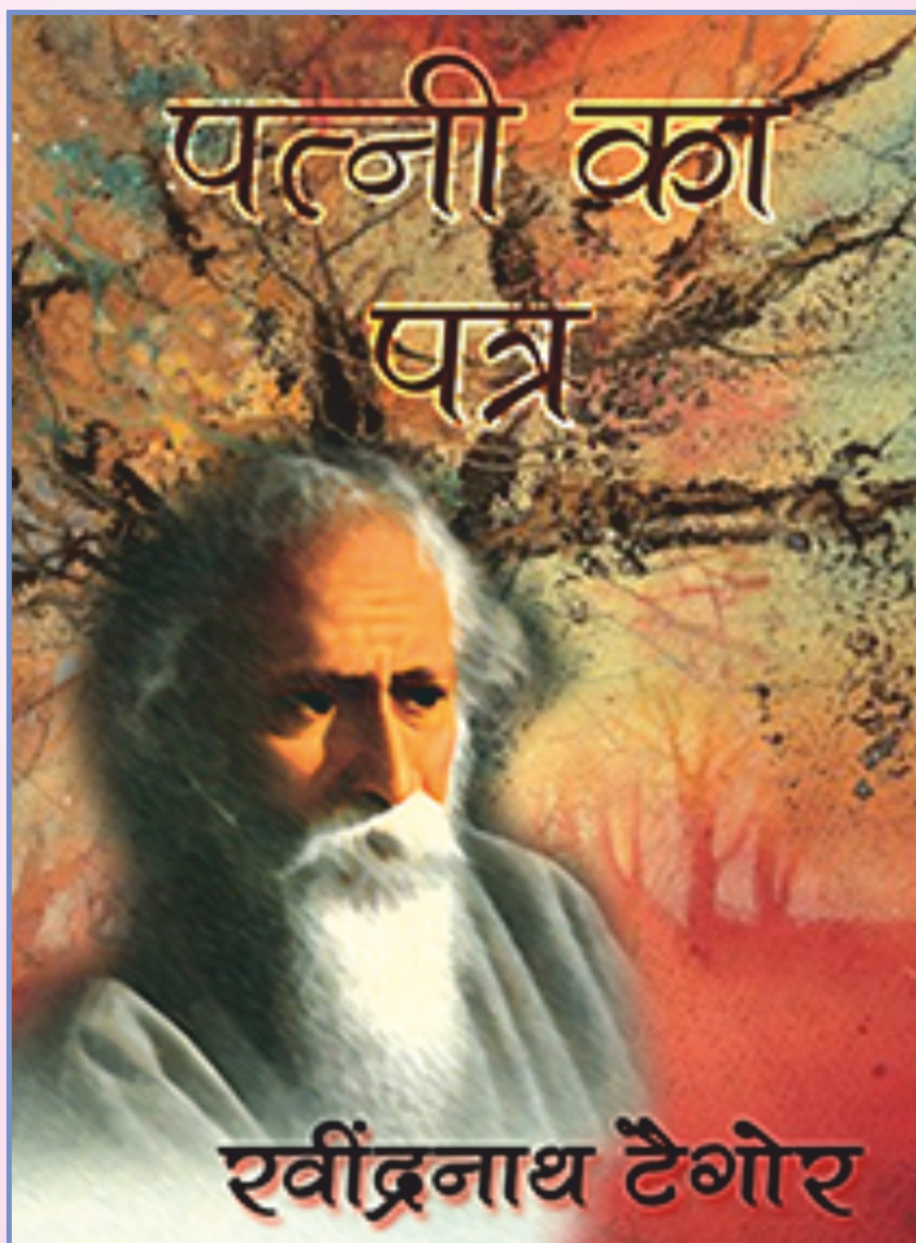
तीर्थ करने आई हूँ, तुम अपने ऑफिस के काम में लगे हुए हो। कोलकाता के साथ तुम्हारा वही संबंध है जो घोंघे के साथ शंख का होता है। वह तुम्हारे तन-मन से चिपक गया है। इसलिए तुमने ऑफिस से छुट्टी की दरखास्त नहीं दी। विधाता की यही इच्छा थी; उन्होंने मेरी छुट्टी की दरखास्त मंजूर कर ली। तुम्हारे घर की मझली बहू हूँ। पर आज पंद्रह वर्ष बाद इस समुद्र के किनारे खड़े होकर मैं जान पाई हूँ कि अपने जगत और जगदीश्वर के साथ मेरा एक संबंध और भी है। इसीलिए आज साहस करके यह चिट्ठी लिख रही हूँ, इसे तुम अपने घर की मझली बहू की ही चिट्ठी मत समझना! तुम लोगों के साथ मेरा संबंध की बात जिन्होंने मेरे भाग्य में लिखी थी उन्हें छोड़कर जब इस संभावना का और किसी

को पता न था, उसी शैशवकाल में मैं और मेरा भाई एक साथ ही सन्निपात के ज्वर से पीड़ित हुए थे। भाई तो मारा गया, पर मैं बची रही। मोहल्ले की औरतें कहने लगीं, “मृणाल लड़की है न, इसलिए बच गई। लड़का होता तो क्या भला बच सकती थी।” चोरी की कला में यमराज निपुण हैं, उनकी नजर कीमती चीज पर ही पड़ती है। मेरे भाग्य में मौत नहीं है। यह आत अच्छी तरह से समझाने के लिए मैं यह चिट्ठी लिखने बैठी हूँ। एक दिन जब दूर के रिश्ते में तुम्हारे मामा तुम्हारे मित्र नीरद को साथ लेकर कन्या देखने आए थे तब मेरी आयु बारह वर्ष की थी। दुर्गम गाँव में मेरा घर था, जहाँ दिन में भी सियार बोलते रहते। स्टेशन से सात कोस तक छकड़ा गाड़ी में चलने के बाद बाकी तीन मील का कच्चा रास्ता पालकी में बैठकर पार करने के बाद हमारे गाँव में पहुँचा जा सकता था। उस दिन तुम लोगों को कितनी हैरानी हुई। जिस पर हमारे पूर्वी बंगाल का भोजन मामा उस भोजन की हँसी उड़ाना आज भी नहीं भूलते।

तुम्हारी माँ की एक ही जिद थी कि बड़ी बहू के रूप की कमी मझली बहू के द्वारा पूरी करें। नहीं तो भला

इतना कष्ट करके तुम लोग हमारे गाँव क्यों आते। पीलिया, यकृत, उदरशूल और दुल्हन के लिए बंगाल प्रांत में खोज नहीं करनी पड़ती। वे स्वयं ही आकर घर लेते हैं, छुड़ाये नहीं छूटते। पिता की छाती धक्-धक् करने लगी। माँ दुर्गा का नाम जपने लगी। शहर के

देवता को गाँव का पुजारी क्या देकर संतुष्ट करे। बेटी के रूप का भरोसा था; लेकिन स्वयं बेटी में उस रूप का कोई मूल्य नहीं होता, देखने आया हुआ व्यक्ति उसका जो मूल्य दे, वही उसका मूल्य होता है। इसीलिए तो हजार रूप-गुण होने पर भी लड़कियों का संकोच



किसी भी तरह दूर नहीं होता। सारे घर का, यही नहीं, सारे मोहल्ले का यह आतंक मेरी छाती पर पत्थर की तरह जमकर बैठ गया। आकाश का सारा उजाला और संसार की समस्त शक्ति उस दिन मानो इस बारह-वर्षीय ग्रामीण लड़की को दो परीक्षकों की दो जोड़ी आँखों के सामने कसकर पकड़ रखने के लिए चपरासगीरी कर रही थी – मुझे कहीं छिपने की जगह न मिली। अपने करुण स्वर में संपूर्ण आकाश को कँपाती हुई शहनाई बज उठी। मैं तुम लोगों के यहाँ आ पहुँची। मेरे सारे ऐबों का ब्यौरेवार हिसाब लगाकर गृहिणियों को यह स्वीकार करना पड़ा कि सब-कुछ होते हुए भी मैं सुंदर जरूर हूँ। यह बात सुनते ही मेरी बड़ी जेठानी का चेहरा भारी हो गया। लेकिन सोचती हूँ, मुझे रूप की जरूरत ही क्या थी। रूप नामक वस्तु को अगर किसी त्रिपुंडी पंडित ने गंगा मिट्टी से गढ़ा हो तो उसका आदर हो, लेकिन उसे तो विधाता ने केवल अपने आनंद से निर्मित किया है। इसलिए तुम्हारे धर्म के संसार में उसका कोई मूल्य नहीं।

मैं रूपवती हूँ, इस बात को भूलने में तुम्हें बहुत दिन नहीं लगे। लेकिन

मुझमें बुद्धि भी है, यह बात तुम लोगों को पग-पग पर याद करनी पड़ी। मेरी यह बुद्धि इतनी प्रकृत है कि तुम लोगों की घर-गृहस्थी में इतना समय काट देने पर भी वह आज भी टिकी हुई है। मेरी इस बुद्धि से माँ बड़ी चिंतित रहती थीं। नारी के लिए यह तो एक बला ही है। बाधाओं को मानकर चलना जिसका काम है वह यदि बुद्धि को मानकर चलना चाहे तो ठोकर खा-खाकर उसका सिर फूटेगा ही। लेकिन तुम्हीं बताओ, मैं क्या करूँ। तुम लोगों के घर की बहू को जितनी बुद्धि की जरूरत है विधाता ने लापरवाही में मुझे उससे बहुत ज्यादा बुद्धि दे डाली है, अब मैं उसे लौटाऊँ भी तो किसको। तुम लोग मुझे पुरखिन कहकर दिन-रात गाली देते रहे। अक्षम्य को कड़ी बात कहने से ही सांत्वना मिलती है, इसीलिए मैंने उसको क्षमा कर दिया। मेरी एक बात तुम्हारी घर-गृहस्थी से बाहर थी जिसे तुम में से कोई नहीं जानता। मैं तुम सबसे छिपाकर कविता लिखा करती थी। वह भले ही कूड़ा-करकट क्यों न हो, उस पर तुम्हारे अंतःपुर की दीवार न उठ सकी। वहीं मुझे मृत्यु मिलती थी, वहीं पर मैं रो पाती थी। मेरे भीतर तुम

लोगों की मझली बहू के अतिरिक्त जो कुछ था, उसे तुम लोगों ने कभी पसंद नहीं किया। क्योंकि उसे तुम लोग पहचान भी न पाए। मैं कवि हूँ, यह बात पंद्रह वर्ष में भी तुम लोगों की पकड़ में नहीं आई। तुम लोगों के घर की प्रथम स्मृतियों में मेरे मन में जो सबसे ज्यादा जगती रहती है वह है तुम लोगों की गोशाला। अंतःपुर को जाने वाले जीने की बगल के कोठे में तुम लोगों की गौएँ रहती हैं, सामने के आँगन को छोड़कर उनके हिलने-डुलने के लिए और कोई जगह न थी। आँगन के कोने में गायों को भूसा देने के लिए काठ की नाँद थी, सवेरे नौकर को तरह-तरह के काम रहते इसलिए भूखी गाएँ नाँद के किनारों को चाट-चाटकर चबा-चबाकर खुरच देतीं। मेरा मन रोने लगता।

मैं गँवई गाँव की बेटा जिस दिन पहली बार तुम्हारे घर में आई उस दिन उस बड़े शहर के बीच मुझे वे दो गाएँ और तीन बछड़े चिर परिचित आत्मीय – जैसे जान पड़े। जितने दिन मैं रही, बहू रही, खुद न खाकर छिपा-छिपाकर मैं उन्हें खिलाती रही; जब बड़ी हुई तब गौओं के प्रति मेरी प्रत्यक्ष ममता

देखकर मेरे साथ हँसी—मजाक का संबंध रखने वाले लोग मेरे गोत्र के बारे में संदेह प्रकट करते रहे। मेरी बेटी जनमते ही मर गई। जाते समय उसने साथ चलने के लिए मुझे भी पुकारा था। अगर वह बची रहती तो मेरे जीवन में जो—कुछ महान है, जो कुछ सत्य है, वह सब मुझे ला देती; तब मैं मझली बहू से एकदम माँ बन जाती। गृहस्थी में बँधी रहने पर भी माँ विश्व—भर की माँ होती है। पर मुझे माँ होने की वेदना ही मिली, मातृत्व की मुक्ति प्राप्त नहीं हुई।

मुझे याद है, अंग्रेज डॉक्टर को हमारे घर का भीतरी भाग देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ था, और जच्चा घर देखकर नाराज होकर उसने डॉट—फटकार भी लगाई थी। सदर में तो तुम लोगों का छोटा—सा बाग है। कमरे में भी साज—श्रृंगार का कोई कमी नहीं, पर भीतर का भाग मानो पश्मीने के काम की उल्टी परत हो। वहाँ न कोई लज्जा है, न सौंदर्य, न श्रृंगार। उजाला वहाँ टिमटिमाता रहता है। हवा चोर की भाँति प्रवेश करती है, आँगन का कूड़ा—करकट हटने का नाम नहीं लेता। फर्श और दीवार पर कालिमा अक्षय बनकर

विराजती है। लेकिन डॉक्टर ने एक भूल की थी। उसने सोचा था कि शायद इससे हमको रात—दिन दुःख होता होगा। बात बिल्कुल उल्टी है। अनादर नाम की चीज राख की तरह होती है। वह शायद भीतर—ही—भीतर आग को बनाए रहती है लेकिन ऊपर से उसके ताप को प्रकट नहीं होने देती। जब आत्म—सम्मान घट जाता है तब अनादर में अन्याय भी नहीं दिखाई देता। इसीलिए उसकी पीड़ा नहीं होती। यही कारण है कि नारी दुःख का अनुभव करने में ही लज्जा पाती है। इसीलिए मैं कहती हूँ, अगर तुम लोगों की व्यवस्था यही है कि नारी को दुःख पाना ही होगा तो फिर जहाँ तक संभव हो उसे अनादर में रखना ही ठीक है। आदर से दुःख की व्यथा और बढ़ जाती है। तुम मुझे चाहे जैसे रखते रहे, मुझे दुःख है यह बात कभी मेरे ख्याल में भी न आई। जच्चा घर में जब सिर पर मौत मँडराने लगी थी, तब भी मुझे कोई डर नहीं लगा।

हमारा जीवन ही क्या है कि मौत से डरना पड़े? जिनके प्राणों को आदर और यत्न से कसकर बाँध लिया गया हो, मरने में उन्हीं को कष्ट होता है। उस दिन अगर यमराज

मुझे घसीटने लगते तो मैं उसी तरह उखड़ आती जिस तरह पोली जमीन से घास बड़ी आसानी से जड़—समेत खिंच आती है। बंगाल की बेटी तो बात—बात में मरना चाहती है। लेकिन इस तरह मरने में कौन—सी बहादुरी है। हम लोगों के लिए मरना इतना आसान है कि मरते लज्जा आती है। मेरी बेटी संध्या—तारा की तरह क्षण—भर के लिए उदित होकर अस्त हो गई। मैं फिर से अपने दैनिक कामों में और गाय—बछड़ों में लग गई। इसी तरह मेरा जीवन आखिर तक जैसे—तैसे कट जाता; आज तुम्हें यह चिट्ठी लिखने की जरूरत न पड़ती, लेकिन, कभी—कभी हवा एक मामूली—सा बीज उड़ाकर ले जाती है और पक्के दालान में पीपल का अंकुर फूट उठता है; और होते—होते उसी से लकड़ी—पत्थर की छाती विदीर्ण होने लग जाती है। मेरी गृहस्थी की पक्की व्यवस्था में भी जीवन का एक छोटा—सा कण न जाने कहाँ से उड़कर आ पड़ा; तभी से दरार शुरू हो गई। जब विधवा माँ की मृत्यु के बाद मेरी बड़ी जेठानी की बहन बिंदु ने अपने चचेरे भाइयों के अत्याचार के मारे एक दिन हमारे घर में अपनी दीदी के पास आश्रय

लिया था, तब तुम लोगों ने सोचा था, यह कहाँ की बला आ गई। आग लगे मेरे स्वभाव को, करती भी क्या। देखा, तुम लोग सब मन—ही—मन खीज उठे हो, इसलिए उस निराश्रिता लड़की को घेरकर मेरा संपूर्ण मन एकाएक जैसे कमर बाँधकर खड़ा हो गया हो। पराए घर में, पराए लोगों की अनिच्छा होते हुए भी आश्रय लेना कितना बड़ा अपमान है यह। यह अपमान भी जिसे विवश होकर स्वीकार करना पड़ा हो उसे क्या धक्का देकर एक कोने में डाल दिया जाता है? बाद में मैंने अपनी बड़ी जेठानी की दशा देखी। उन्होंने अपनी गहरी संवेदना के कारण ही बहन को अपने पास बुलाया था, लेकिन जब उन्होंने देखा कि इसमें पति की इच्छा नहीं है, तो उन्होंने ऐसा भाव दिखाना शुरू किया मानो उन पर कोई बड़ी बला आ पड़ी हो, मानो अगर वह किसी तरह दूर हो सके तो जान बचे। उन्हें इतना साहस न हुआ कि वे अपनी अनाथ बहन के प्रति खुले मन से स्नेह प्रकट कर सकें। वे पतिव्रता थीं। उनका यह संकट देखकर मेरा मन और भी दुखी हो उठा। मैंने देखा, बड़ी जेठानी ने खासतौर से सबको दिखा—

दिखाकर बिंदु के खाने—पहनने की ऐसी रद्दी व्यवस्था की और उसे घर में इस तरह नौकरानियों के—से काम सौंप दिए कि मुझे दुःख ही नहीं, लज्जा भी हुई। मैं सबके सामने इस बात को प्रमाणित करने में लगी रहती थी कि हमारी गृहस्थी को बिंदु बहुत सस्ते दामों में मिल गई है। ढेरों काम करती है फिर भी खर्च की दृष्टि से बेहद सस्ती है। मेरी बड़ी जेठानी के पितृ—वंश में कुल के अलावा और कोई बड़ी चीज न थी, न रूप था, न धन। किस तरह मेरे ससुर के पैरों पड़ने पर तुम लोगों के घर में उनका ब्याह हुआ था, यह बात तुम अच्छी तरह जानते हो। वे सदा यही सोचती रहीं कि उनका विवाह तुम्हारे वंश के प्रति बड़ा भारी अपराध था। इसीलिए वे सब बातों में अपने—आपको भरसक दूर रखकर, अपने को छोटा मानकर तुम्हारे घर में बहुत ही थोड़ी जगह में सिमटकर रहती थीं। लेकिन उनके इस प्रशंसनीय उदाहरण से हम लोगों को बड़ी कठिनाई होती रही। मैं अपने—आपको हर तरफ से इतना बेहद छोटा नहीं बना पाती, मैं जिस बात को अच्छा समझती हूँ उसे किसी और की खातिर बुरा समझने को मैं उचित नहीं मानती

— इस बात के तुम्हें भी बहुत—से प्रमाण मिल चुके हैं।

बिंदु को मैं अपने कमरे में घसीट लाई। जीजी कहने लगीं, “मझली बहू गरीब घर की बेटा का दिमाग खराब कर डालेगी।” वे सबसे मेरी इस ढंग से शिकायत करती फिरती थीं मानों मैंने कोई भारी आफत ढा दी हो। लेकिन मैं अच्छी तरह जानती हूँ, वे मन—ही—मन सोचती थीं कि जान बची। अब अपराध का बोझा मेरे सिर पर पड़ने लगा। वे अपनी बहन के प्रति खुद जो स्नेह नहीं दिखा पाती थीं वही मेरे द्वारा प्रकट करके उनका मन हल्का हो जाता। मेरी बड़ी जेठानी बिंदु की उम्र में से दो—एक अंक कम कर देने की चेष्टा किया करती थीं, लेकिन अगर अकेले में उनसे यह कहा जाता कि उसकी अवस्था चौदह से कम नहीं थी, तो ज्यादाती न होती। तुम्हें तो मालूम है, देखने में वह इतनी कुरूप थी कि अगर वह फर्श पर गिरकर अपना सिर फोड़ लेती तो भी लोगों को घर के फर्श की ही चिंता होती। यही कारण है कि माता—पिता के न होने पर ऐसा कोई न था जो उसके विवाह की सोचता, और ऐसे लोग भी भला कितने थे जिनके प्राणों में इतना बल हो कि उससे ब्याह कर

सकें। बिंदु बहुत डरती—डरती मेरे पास आई। मानो अगर मेरी देह उससे छू जाएगी तो मैं सह नहीं पाऊँगी। मानो संसार में उसको जन्म लेने का कोई अधिकार ही न था। इसीलिए वह हमेशा अलग हटकर आँख बचाकर चलती। उसके पिता के यहाँ उसके चचेरे भाई उसके लिए ऐसा एक भी कोना नहीं छोड़ना चाहते थे जिसमें वह फालतू चीज की तरह पड़ी रह सके। फालतू कूड़े को घर के आस—पास अनायास ही स्थान मिल जाता है क्योंकि मनुष्य उसको भूल जाता है; लेकिन अनावश्यक लड़की एक तो अनावश्यक होती है; दूसरा, उसको भूलना भी कठिन होता है। इसलिए उसके लिए पूरे घर पर भी जगह नहीं होती। फिर भी यह कैसे कहा जा सकता है कि उसके चचेरे भाई ही संसार में परमावश्यक पदार्थ थे। जो हो, वे लोग थे खूब।

यही कारण है कि जब मैं बिंदु को अपने कमरे में बुला लाई तो उसकी छाती धक्-धक् करने लग गई। उसका डर देखकर मुझे बड़ा दुःख हुआ। मेरे कमरे में उसके लिए थोड़ी—सी जगह है, यह बात मैंने बड़े प्यार से उसे समझाई। लेकिन मेरा कमरा एक मेरा ही कमरा तो

था नहीं। इसलिए मेरा काम आसान नहीं हुआ। मेरे पास दो—चार दिन रहने पर ही उसके शरीर में न जाने लाल—लाल क्या निकल आया। शायद अम्हौरी रही होगी या ऐसा ही कुछ होगा; तुमने कहा शीलता। क्यों न हो, वह बिंदु थी न। तुम्हारे मोहल्ले में एक अनाड़ी डॉक्टर ने आकर बताया, दो—एक दिन और देखे बिना ठीक से कुछ नहीं कहा जा सकता। लेकिन दो—एक दिन तक धीरज किसको होता। बिंदु तो अपनी बीमारी की लज्जा से ही मरी जा रही थी। मैंने कहा, शीतला है तो हो, मैं उसे अपने जच्चा—घर में लिवा ले जाऊँगी, और किसी को कुछ करने की जरूरत नहीं। इस बात पर जब तुम सब लोग मेरे ऊपर भड़ककर क्रोध की मूर्ति बन गए। यही नहीं, जब बिंदु की जीजी भी बड़ी परेशानी दिखाती हुई उस अभागी लड़की को अस्पताल भेजने का प्रस्ताव करने लगीं, तभी उसके शरीर के वे सारे लाल—लाल दाग एकदम विलीन हो गए। मैंने देखा कि इस बात से तुम लोग और भी व्यग्र हो उठे। कहने लगे, अब तो वाकई शीतला बैठ गई है। क्यों न हो, वह बिंदु थी न। अनादर के पालन—पोषण में एक बड़ा गुण है। शरीर को वह एकदम अजर—अमर

कर देता है। बीमारी आने का नाम नहीं लेती, मरने के सारे आम रास्ते बिल्कुल बंद हो जाते हैं। इसलिए रोग उसके साथ मजाक करके चला गया, हुआ कुछ नहीं। लेकिन यह बात अच्छी तरह स्पष्ट हो गई कि संसार में ज्यादा साधनहीन व्यक्ति को आश्रय देना ही सबसे कठिन है। आश्रय की आवश्यकता उसको जितनी अधिक होती है आश्रय की बाधाएँ भी उसके लिए उतनी ही विषम होती हैं। बिंदु के मन से जब मेरा डर जाता रहा तब उसको एक और कुग्रह ने पकड़ लिया। वह मुझे इतना प्यार करने लगी कि मुझे डर होने लगा। स्नेह की ऐसी मूर्ति तो संसार में पहले कभी देखी ही न थी। पुस्तकों में पढ़ा अवश्य था, पर वह भी स्त्री—पुरुष के बीच ही। बहुत दिनों में ऐसी कोई घटना नहीं हुई थी कि मुझे अपने रूप की बात याद आती। अब इतने दिनों बाद यह कुरूप लड़की मेरे उसी रूप के पीछे पड़ गई। रात—दिन मेरा मुँह देखते रहने पर भी उसकी आँखों की प्यास नहीं बुझती थी। कहती, जीजी तुम्हारा यह मुँह मेरे अलावा और कोई नहीं देख पाता। जिस दिन मैं स्वयं ही अपने केश बाँध लेती उस दिन वह बहुत रूठ जाती। अपने हाथों से मेरे

केश-भार को हिलाने-डुलाने में उसे बड़ा आनंद आता। कभी कहीं दावत में जाने के अतिरिक्त और कभी तो मुझे साज-श्रृंगार की आवश्यकता पड़ती ही न थी, लेकिन बिंदु मुझे तंग कर-करके थोड़ा-बहुत सजाती रहती। वह लड़की मुझे लेकर बिल्कुल पागल हो गई थी।

तुम्हारे घर के भीतर हिस्से में कहीं रस्ती-भर भी मिट्टी न थी। उत्तर की ओर की दीवार में नाली के किनारे न जाने कैसे एक गाब का पौधा निकला। जिस दिन देखती कि उस गाब के पौधे में नई लाल-लाल कोंपलें निकल आई हैं, उसी दिन जान पड़ता कि धरती पर वसंत आ गया है, और जिस दिन मेरी घर-गृहस्थी में जुटी हुई इस अनाहत लड़की के मन का ओर-छोर किसी तरह रंग उठा उस दिन मैंने जाना कि हृदय के जगत में भी वसंत की हवा बहती है। वह किसी स्वर्ग से आती है, गली के मोड़ से नहीं। बिंदु के स्नेह से दुःसह वेग ने मुझे अधीर कर डाला था। मैं मानती हूँ कि मुझे कभी-कभी उस पर क्रोध आ जाता; लेकिन उस स्नेह में मैंने अपना एक ऐसा रूप देखा जो जीवन में मैं पहले कभी नहीं देख

पाई थी। वही मेरा मुख्य स्वरूप है। इधर मैं बिंदु-जैसी लड़की को जो इतना लाड़-प्यार करती थी यह बात तुम लोगों को बड़ी ज्यादाती लगी। इसे लेकर बराबर खटपट होने लगी। जिस दिन मेरे कमरे से बाजूबंद चोरी हुआ उस दिन इस बात का आभास देते हुए तुम लोगों को तनिक भी लज्जा न आई कि इस चोरी में किसी-न-किसी रूप में बिंदु का हाथ है। जब स्वदेशी आंदोलनों में लोगों के घर की तलाशियाँ होने लगीं तब तुम लोग अनायास ही यह संदेह कर बैठे कि बिंदु पुलिस द्वारा रखी गई स्त्री-गुप्तचर है। इसका और तो कोई प्रमाण न था; प्रमाण बस इतना ही था कि वह बिंदु थी। तुम लोगों के घर की दासियाँ उनका कोई भी काम करने से इन्कार कर देती थीं – उनमें से किसी से अपने काम के लिए कहने में वह लड़की भी संकोच के मारे जड़वत हो जाती थी। इन्हीं सब कारणों से उसके लिए मेरा खर्च बढ़ गया। मैंने खासतौर से अलग से एक दासी रख ली। यह बात तुम लोगों को अच्छी नहीं लगी। बिंदु को पहनने के लिए मैं जो कपड़े देती थी, उन्हें देखकर तुम इतने क्रुद्ध हुए कि तुमने मेरे हाथ-खर्च के रुपये ही बंद कर दिए। दूसरे ही दिन से मैंने

सवा रुपये जोड़े की मोटी कोरी मिल की धोती पहनना शुरू कर दिया। और जब मोती की माँ मेरी जूठी थाली उठाने के लिए आई तो मैंने उसको मना कर दिया। मैंने खुद जूठा भात बछड़े को खिलाने के बाद आंगन के नल पर जाकर बर्तन मल लिए। एक दिन एकाएक इस दृश्य को देखकर तुम प्रसन्न न हो सके। मेरी खुशी के बिना तो काम चल सकता है, पर तुम लोगों की खुशी के बिना नहीं चल सकता – यह बात आज तक मेरी समझ में नहीं आई। उधर ज्यों-ज्यों तुम लोगों का क्रोध बढ़ता जा रहा था त्यों-त्यों बिंदु की आयु भी बढ़ती जा रही थी। इस स्वाभाविक बात पर तुम लोग अस्वाभाविक ढंग से परेशान हो उठे थे। एक बात याद करके मुझे आश्चर्य होता रहा है कि तुम लोगों ने बिंदु को जबरदस्ती अपने घर से विदा क्यों नहीं कर दिया? मैं अच्छी तरह समझती हूँ कि तुम लोग मन-ही-मन मुझसे डरते थे।

विधाता ने मुझे बुद्धि दी है, भीतर-ही-भीतर इस बात की खातिर किए बिना तुम लोगों को चैन नहीं पड़ता था। अंत में अपनी शक्ति से बिंदु को विदा करने में असमर्थ होकर तुम लोगों ने

प्रजापति देवता की शरण ली। बिंदु का वर ठीक हुआ। बड़ी जेठानी बोली, जान बची। माँ काली ने अपने वंश की लाज रख ली। वर कैसा था, मैं नहीं जानती। तुम लोगों से सुना था कि सब बातों में अच्छा है। बिंदु मेरे पैरों से लिपटकर रोने लगी। बोली, जीजी, मेरा ब्याह क्यों कर रही हो भला। मैंने उसको समझाते-बुझाते कहा, बिंदु, डर मत, मैंने सुना है तेरा वर अच्छा है। बिंदु बोली, “अगर वर अच्छा है तो मुझमें भला ऐसा क्या है जो उसे पसंद आ सके।” लेकिन वर-पक्ष वालों ने तो बिंदु को देखने के लिए आने का नाम भी न लिया। बड़ी जीजी इससे बड़ी निश्चिंत हो गई। लेकिन बिंदु रात-दिन रोती रहती। चुप होने का नाम ही न लेती। उसको क्या कष्ट है, यह मैं जानती थी। बिंदु के लिए मैंने घर में बहुत बार झगड़ा किया था लेकिन उसका ब्याह रुक जाए यह बात कहने का साहस नहीं होता था। कहती भी किस बल पर। मैं अगर मर जाती तो उसकी क्या दशा होती। एक तो लड़की जिस पर काली; जिसके यहाँ जा रही है, वहाँ उसकी क्या दशा होगी, इस बात की चिंता न करना ही अच्छा था। सोचती तो प्राण काँप उठते। बिंदु ने कहा, “जीजी, ब्याह के अभी

पाँच दिन और हैं। इस बीच क्या मुझे मौत नहीं आएगी।” मैंने उसको खूब धमकाया। लेकिन अंतर्दामी जानते हैं कि अगर किसी स्वाभाविक ढंग से बिंदु की मृत्यु हो जाती तो मुझे चैन मिलता।

ब्याह के एक दिन पहले बिंदु ने अपनी जीजी के पास जाकर कहा, “जीजी, मैं तुम लोगों की गोशाला में पड़ी रहूँगी, जो कहोगी वही करूँगी, मैं तुम्हारे पैरों पड़ती हूँ, मुझे इस तरह मत धकेलो।” कुछ दिनों से जीजी की आँखों से चोरी-चोरी आँसू झर रहे थे। उस दिन भी झरने लगे। लेकिन सिर्फ हृदय ही तो नहीं होता। शास्त्र भी तो है। उन्होंने कहा, “बिंदु, जानती नहीं, स्त्री की गति-मुक्ति सब-कुछ पति ही है। भाग्य में अगर दुःख लिखा है तो उसे कोई नहीं मिटा सकता।” असली बात तो यह थी कि कहीं कोई रास्ता ही न था — बिंदु को ब्याह तो करना ही पड़ेगा। फिर जो हो सो हो। मैं चाहती थी कि विवाह हमारे ही घर से हो। लेकिन तुम लोग कह बैठे वर के ही घर में हो, उनके कुल की यही रीति है। मैं समझ गई, बिंदु के ब्याह में अगर तुम लोगों को खर्च करना पड़ा तो तुम्हारे गृह-देवता उसे किसी भी भाँति नहीं सह

सकेंगे। इसीलिए चुप रह जाना पड़ा। लेकिन एक बात तुममें से कोई नहीं जानता। जीजी को बताना चाहती थी, पर फिर बताई नहीं, नहीं तो वे डर से मर जातीं — मैंने अपने थोड़े बहुत गहने लेकर चुपचाप बिंदु का श्रृंगार कर दिया था। सोचा था, जीजी की नजर में तो जरूर ही पड़ जाएगा। लेकिन उन्होंने जैसे देखकर भी नहीं देखा। दुहाई है धर्म की, इसके लिए तुम उन्हें क्षमा कर देना। जाते समय बिंदु मुझसे लिपटकर बोली, “जीजी, तो क्या तुम लोगों ने मुझे एकदम त्याग दिया।” मैंने कहा, “नहीं बिंदु, तुम चाहे-जैसी हालत में रहो, प्राण रहते मैं तुम्हें नहीं त्याग सकती।”

तीन दिन बीते। तुम्हारे ताल्लुक के आसामियों ने तुम्हें खाने के लिए जो भेड़ा दिया था उसे मैंने तुम्हारी जठराग्नि से बचाकर नीचे वाले कोयले की कोठरी के एक कोने में बाँध दिया था। सवेरे उठते ही मैं खुद जाकर उसको दाना खिला आती। दो-एक दिन तुम्हारे नौकरों पर भरोसा करके देखा उसे खिलाने की बजाय उनका झुकाव उसी को खा जाने की ओर अधिक था। उस दिन सवेरे कोठरी में गई तो देखा, बिंदु एक कोने में

गुड़-मुड़ होकर बैठी हुई है। मुझे देखते ही वह मेरे पैर पकड़कर चुपचाप रोने लगी। बिंदु का पति पागल था। “सच कह रही है, बिंदु?” “तुम्हारे सामने क्या मैं इतना बड़ा झूठ बोल सकती हूँ, दीदी? वह पागल हैं। इस विवाह में ससुर की सम्मति नहीं थी, लेकिन वे मेरी सास से यमराज की तरह डरते थे। ब्याह के पहले ही काशी चल दिए थे। सास ने जिद करके अपने लड़के का ब्याह कर लिया।” मैं वहीं कोयले के ढेर पर बैठ गई। स्त्री पर स्त्री को दया नहीं आती। कहती है, कोई लड़की थोड़े ही है। लड़का पागल है तो हो, है तो पुरुष। देखने में बिंदु का पति पागल नहीं लगता। लेकिन कभी-कभी उसे ऐसा उन्माद चढ़ता कि उसे कमरे में ताला बंद करके रखना पड़ता। ब्याह की रात वह ठीक था। लेकिन रात में जगते रहने के कारण और इसी तरह के और झंझटों के कारण दूसरे दिन से उसका दिमाग बिल्कुल खराब हो गया। बिंदु दोपहर को पीतल की थाली में भात खाने बैठी थी, अचानक उसके पति ने भात समेत थाली उठाकर आँगन में फेंक दी। न जाने क्यों अचानक उसको लगा, मानो बिंदु रानी रासमणि हो। नौकर ने, हो न हो, चोरी से उसी

के सोने के थाल में रानी के खाने के लिए भात दिया हो। इसलिए उसे क्रोध आ गया था। बिंदु तो डर के मारे मरी जा रही थी।

तीसरी रात को जब उसकी सास ने उससे अपने पति के कमरे में सोने के लिए कहा तो बिंदु के प्राण सूख गए। उसकी सास को जब क्रोध आता था तो होश में नहीं रहती थी। वह भी पागल ही थी, लेकिन पूरी तरह से नहीं। इसलिए वह ज्यादा खतरनाक थी। बिंदु को कमरे में जाना ही पड़ा। उस रात उसके पति का मिजाज ठंडा था। लेकिन डर के मारे बिंदु का शरीर पत्थर हो गया था। पति जब सो गए तब काफी रात बीतने पर वह किस तरह चतुराई से भागकर चली आई, इसका विस्तृत विवरण लिखने की आवश्यकता नहीं है। घृणा और क्रोध से मेरा शरीर जलने लगा। मैंने कहा, इस तरह धोखे के ब्याह को ब्याह नहीं कहा जा सकता। बिंदु, तू जैसे रहती थी वैसे ही मेरे पास रह। देखूँ, मुझे कौन ले जाता है। तुम लोगों ने कहा, बिंदु झूठ बोलती है। मैंने कहा, वह कभी झूठ नहीं बोलती। तुम लोगों ने कहा, तुम्हें कैसे मालूम? मैंने कहा, मैं अच्छी तरह जानती हूँ। तुम लोगों ने डर

दिखाया, अगर बिंदु के ससुराल वालों ने पुलिस-केस कर दिया तो आफत में पड़ जाएँगे। मैंने कहा, क्या अदालत यह बात न सुनेगी कि उसका ब्याह धोखे से पागल वर के साथ कर दिया गया है। तुमने कहा, तो क्या इसके लिए अदालत जाएँगे। हमें ऐसी क्या गर्ज है? मैंने कहा, जो कुछ मुझसे बन पड़ेगा, अपने गहने बेचकर करूँगी। तुम लोगों ने कहा, वकील के घर तक दौड़ोगी? इस बात का क्या जवाब होता? सिर ठोकने के अलावा और कर भी क्या सकती थी। उधर बिंदु की ससुराल से उसके जेठ ने आकर बाहर बड़ा हंगामा खड़ा कर दिया। कहने लगा, थाने में रिपोर्ट कर दूँगा।

मैं नहीं जानती मुझमें क्या शक्ति थी – लेकिन जिस गाय ने अपने प्राणों के डर से कसाई के हाथों से छूटकर मेरा आश्रय लिया हो उसे पुलिस के डर से फिर उस कसाई को लौटाना पड़े यह बात मैं किसी भी प्रकार नहीं मान सकती थी। मैंने हिम्मत करके कहा, “करने दो थाने में रिपोर्ट।” इतना कहकर मैंने सोचा कि अब बिंदु को अपने सोने के कमरे में ले जाकर कमरे में ताला लगाकर बैठ जाऊँ। लेकिन खोजा तो बिंदु का कहीं पता नहीं।

जिस समय तुम लोगों से मेरी बहस चल रही थी उस समय बिंदु ने स्वयं बाहर निकलकर अपने जेठ को आत्म-समर्पण कर दिया था। वह समझ गई थी कि अगर वह इस घर में रही तो मैं बड़ी आफत में पड़ जाऊँगी। बीच में भाग आने से बिंदु ने अपना दुःख और भी बढ़ा लिया। उसकी सास का तर्क था कि उनका लड़का उसको खाए तो नहीं जा रहा था न। संसार में बुरे पति के उदाहरण दुर्लभ भी नहीं हैं। उसकी तुलना मैं तो उनका लड़का सोने का चाँद था। मेरी बड़ी जेठानी ने कहा — जिसका भाग्य ही खराब हो उसके लिए रोने से क्या फायदा? पागल-वागल जो भी हो, है तो स्वामी ही न। तुम लोगों के मन में लगातार उस सती-साध्वी का दृष्टांत याद आ रहा था जो अपने कोढ़ी पति को अपने कंधों पर बिठाकर वेश्या के यहाँ ले गई थी। संसार-भर में कायरता के इस सबसे अधम आख्यान का प्रचार करते हुए तुम लोगों के पुरुष-मन को कभी तनिक भी संकोच न हुआ। इसलिए मानव-जन्म पाकर भी तुम लोग बिंदु के व्यवहार पर क्रोध कर सके, उससे तुम्हारा सिर नहीं झुका। बिंदु के लिए मेरी छाती फटी जा रही थी, लेकिन तुम लोगों का

व्यवहार देखकर मेरी लज्जा का अंत न था।

मैं तो गाँव की लड़की थी, जिस पर तुम लोगों के घर आ पड़ी, फिर भगवान ने न जाने किस तरह मुझे ऐसी बुद्धि दे दी। धर्म-संबंधी तुम लोगों की यह चर्चा मुझे किसी भी प्रकार सहन नहीं हुई। मैं निश्चयपूर्वक जानती थी कि बिंदु मर भले ही जाए, वह अब हमारे घर लौटकर नहीं आएगी। लेकिन मैं तो उसे ब्याह के एक दिन पहले यह आशा दिला चुकी थी कि प्राण रहते उसे नहीं छोड़ूँगी। मेरा छोटा भाई शरद कलकत्ता में कॉलेज में पढ़ता था। तुम तो जानती ही हो, तरह-तरह से वालंटियरी करना, प्लेग वाले मोहल्लों में चूहे मारना, दामोदर में बाढ़ आने की खबर सुनकर दौड़ पड़ना — इन सब बातों में उसका इतना उत्साह था कि एफ.ए. की परीक्षा में लगातार दो बार फेल होने पर भी उसके उत्साह में कोई कमी नहीं आई। मैंने उसे बुलाकर कहा, “शरद, जैसे भी हो, बिंदु की खबर पाने का इंतजाम तुझे करना ही पड़ेगा। बिंदु को मुझे चिट्ठी भेजने का साहस नहीं होगा, वह भेजे भी तो मुझे मिल नहीं सकेगी।” इस काम के बजाय यदि मैं उससे डाका डालकर बिंदु को लाने की बात

कहती या उसके पागल स्वामी का सिर फोड़ देने के लिए कहती तो उसे ज्यादा खुशी होती। शरद के साथ बातचीत कर रही थी तभी तुमने कमरे में आकर कहा, तुम फिर यह क्या बखेड़ा कर रही हो? मैंने कहा, वही जो शुरू से करती आई हूँ। जब से तुम्हारे घर आई हूँ ... लेकिन नहीं, वह तो तुम्ही लोगों की कीर्ति है। तुमने पूछा, बिंदु को लाकर फिर कहीं छिपा रखा है क्या? मैंने कहा, बिंदु अगर आती तो मैं जरूर ही छिपाकर रख लेती, लेकिन वह अब नहीं आएगी। तुम्हें डरने की कोई जरूरत नहीं है। शरद को मेरे पास देखकर तुम्हारा संदेह और भी बढ़ गया। मैं जानती थी कि शरद का हमारे यहाँ आना-जाना तुम लोगों को पसंद नहीं है। तुम्हें डर था कि उस पर पुलिस की नजर है। अगर कभी किसी राजनीतिक मामले में फँस गया तो तुम्हें भी फँसा डालेगा। इसीलिए मैं भैया-दूज का तिलक भी आदमी के हाथों उसी के पास भिजवा देती थी, अपने घर नहीं बुलाती थी। एक दिन तुमसे सुना कि बिंदु फिर भाग गई है, इसलिए उसका जेठ हमारे घर उसे खोजने आया है। सुनते ही मेरी छाती में शूल चुभ गए। अभागिनी का असह्य कष्ट तो मैं समझ गई, पर

फिर भी कुछ करने का कोई रास्ता न था। शरद पता करने दौड़ा। शाम को लौटकर मुझसे बोला, बिंदु अपने चचेरे भाइयों के यहाँ गई थी, लेकिन उन्होंने अत्यंत क्रुद्ध होकर उसी वक्त उसे फिर ससुराल पहुँचा दिया। इसके लिए उन्हें हर्जाने का और गाड़ी के किराए का जो दंड भोगना पड़ा उसकी खार अब भी उनके मन से नहीं गई है। श्रीक्षेत्र की तीर्थ-यात्रा करने के लिए तुम लोगों की काकी तुम्हारे यहाँ आकर ठहरीं। मैंने तुमसे कहा, मैं भी जाऊँगी। अचानक मेरे मन में धर्म के प्रति यह श्रद्धा देखकर तुम इतने खुश हुए कि तुमने तनिक भी आपत्ति नहीं की। तुम्हें इस बात का भी ध्यान था कि अगर मैं कलकत्ता में रही तो फिर किसी-न-किसी दिन बिंदु को लेकर झगड़ा कर बैठूँगी। मेरे मारे तुम्हें बड़ी परेशानी थी। मुझे बुधवार को चलना था, रविवार को ही सब ठीक-ठाक हो गया। मैंने शरद को बुलाकर कहा, जैसे भी हो बुधवार को पुरी जाने वाली गाड़ी में तुझे बिंदु को चढ़ा ही देना पड़ेगा। शरद का चेहरा खिल उठा। वह बोला, डर की कोई बात नहीं, जीजी, मैं उसे गाड़ी में बिठाकर पुरी तक चला चलूँगा। इसी बहाने जगन्नाथ जी के दर्शन भी हो जाएँगे। उसी दिन शाम को

शरद फिर आया। उसका मुंह देखते ही मेरा दिल बैठ गया। मैंने पूछा, क्या बात है शरद। शायद कोई रास्ता नहीं निकला। वह बोला, नहीं। मैंने पूछा, क्या उसे राजी नहीं कर पाए? उसने कहा, “अब जरूरत भी नहीं है। कल रात अपने कपड़ों में आग लगाकर वह आत्म-हत्या करके मर गई। उस घर के जिस भतीजे से मैंने मेल बढ़ा लिया था उसी से खबर मिली कि तुम्हारे नाम वह एक चिट्ठी रख गई थी, लेकिन वह चिट्ठी उन लोगों ने नष्ट कर दी।”

“चलो, छुट्टी हुई।” गाँव-भर के लोग चीख उठे। कहने लगे, “लड़कियों का कपड़ों में आग लगाकर मर जाना तो अब एक फैशन हो गया है।” तुम लोगों ने कहा, “अच्छा नाटक है।” हुआ करे, लेकिन नाटक का तमाशा सिर्फ बंगाली लड़कियों की साड़ी पर ही क्यों होता है, बंगाली वीर पुरुषों की धोती की चुन्नटों पर क्यों नहीं होता, यह भी तो सोचकर देखना चाहिए। ऐसा ही था बिंदु का दुर्भाग्य। जितने दिन जीवित रही, तनिक भी यश नहीं मिल सका। न रूप का, न गुण का – मरते वक्त भी यह नहीं हुआ कि सोच-समझकर कुछ ऐसे नए ढंग से मरती कि दुनिया-भर के लोग

खुशी से ताली बजा उठते। मरकर भी उसने लोगों को नाराज ही किया। जीजी कमरे में जाकर चुपचाप रोने लगीं, लेकिन उस रोने में जैसे एक सांत्वना थी। कुछ भी सही, जान तो बची, मर गई, यही क्या कम है। अगर बची रहती तो न जाने क्या हो जाता। मैं तीर्थ में आ पहुँची हूँ। बिंदु के आने की तो जरूरत ही न रही। लेकिन मुझे जरूरत थी। लोग जिसे दुःख मानते हैं वह तुम्हारी गृहस्थी में मुझे कभी नहीं मिला। तुम्हारे यहाँ खाने-पहनने की कोई कमी नहीं। तुम्हारे बड़े भाई का चरित्र चाहे जैसा हो, तुम्हारे चरित्र में ऐसा कोई दोष नहीं जिसके लिए विधाता को बुरा कह सकूँ। वैसे अगर तुम्हारा स्वभाव तुम्हारे बड़े भाई की तरह भी होता तो भी शायद मेरे दिन करीब-करीब ऐसे ही कट जाते और मैं अपनी सती-साध्वी बड़ी जेठानी की तरह पति देवता को दोष देने के बजाय विश्व-देवता को ही दोष देने की चेष्टा करती। अतएव, मैं तुमसे कोई शिकायत नहीं करना चाहती – मेरी चिट्ठी का कारण यह नहीं है। लेकिन मैं अब माखन बड़ाल की गली के तुम्हारे उस सत्ताईस नंबर वाले घर में लौटकर नहीं आऊँगी। मैं बिंदु को देख चुकी हूँ।

इस संसार में नारी का सच्चा परिचय क्या है, यह मैं पा चुकी हूँ। अब तुम्हारी कोई जरूरत नहीं। और फिर मैंने यह भी देखा है कि वह लड़की ही क्यों न हो, भगवान ने उसका त्याग नहीं किया। उस पर तुम लोगों का चाहे कितना ही जोर क्यों न रहा हो, वह उसका अंत नहीं था। वह अपने अभागे मानव जीवन से बड़ी थी। तुम लोगों के पैर इतने लंबे नहीं थे कि तुम मनमाने ढंग से अपने हिसाब से उसके जीवन को सदा के लिए उनसे दबाकर रख सकते, मृत्यु तुम लोगों से भी बड़ी है। अपनी मृत्यु में वह महान है — वहाँ बिंदु केवल बंगाली परिवार की लड़की नहीं है, केवल चचेरे भाईयों की बहन नहीं है, केवल किसी अपरिचित पागल पति की प्रवंचिता पत्नी नहीं है। वहाँ वह अनंत है। मृत्यु की उस वंशी का स्वर उस बालिका के भग्न हृदय से निकलकर जब मेरे जीवन की यमुना के पास बजने लगा तो पहले-पहल मानो मेरी छाती में कोई बाण बिध गया हो। मैंने विधाता से प्रश्न किया, “इस संसार में जो सबसे अधिक तुच्छ है वही सबसे अधिक कठिन क्यों है?” इस गली में चारदीवारी से घिरे इस निरानंद स्थान में यह जो तुच्छतम बुदबुद है, वह इतनी भयंकर बाधा

कैसे बन गया? तुम्हारा संसार अपनी शठ-नीतियों से क्षुधा-पात्र को सँभाले कितना ही क्यों न पुकारे, मैं उस अंतःपुर की जरा-सी चौखट को क्षण-भर के लिए भी पार क्यों न कर सकी? ऐसे संसार में ऐसा जीवन लेकर मुझे इस अत्यंत तुच्छ काठ पत्थर का आड़ में ही तिल-तिलकर क्यों मरना होगा? कितनी तुच्छ है यह मेरी प्रतिदिन की जीवन-यात्रा। इसके बंधे नियम, बंधे अभ्यास, बंधी हुई बोली, बंधी हुई मार सब कितनी तुच्छ है — फिर भी क्या अंत में दीनता के उस नाग-पाश बंधन की ही जीत होगी, और तुम्हारे अपने इस आनंद-लोक की, इस सृष्टि की हार? लेकिन, मृत्यु की वंशी बजने लगी — कहाँ गई राज-मिस्त्रियों की बनाई हुई वह दीवार, कहाँ गया तुम्हारे घोर नियमों से बँधा वह काँटों का घेरा। कौन-सा है वह दुःख, कौन-सा है वह अपमान जो मनुष्य को बंदी बनाकर रख सकता है। यह लो, मृत्यु के हाथ में जीवन की जय-पताका उड़ रही है। अरी मझली बहू, तुझे डरने की अब कोई जरूरत नहीं। मझली बहू के इस तेरे खोल को छिन्न होते एक निमेष भी न लगा। तुम्हारी गली का मुझे कोई डर नहीं। आज मेरे सामने नीला समुद्र

है, मेरे सिर पर आषाढ़ के बादल। तुम लोगों की रीति-नीति के अँधेरे ने मुझे अब तक ढक रखा था। बिंदु ने आकर क्षण-भर के लिए उस आवरण के छेद में से मुझे देख लिया। वही लड़की अपनी मृत्यु द्वारा सिर से पैर तक मेरा वह आवरण उघाड़ गई है। आज बाहर आकर देखती हूँ, अपना गौरव रखने के लिए कहीं जगह ही नहीं है। मेरा यह अनाहत रूप जिनकी आँखों को भाया है वे सुंदर आज संपूर्ण आकाश से मुझे निहार रहे हैं। अब मझली बहू की खैर नहीं। तुम सोच रहे होगे, मैं मरने जा रही हूँ — डरने की कोई बात नहीं। तुम लोगों के साथ मैं ऐसा पुराना मजाक नहीं करूँगी। मीराबाई भी तो मेरी ही तरह नारी थी। उनकी जंजीरें भी तो कम भारी नहीं थीं, बचने के लिए उनको तो मरना नहीं पड़ा। मीराबाई ने अपने गीत में कहा था, ‘बाप छोड़े, माँ छोड़े, जहाँ कहीं जो भी हैं, सब छोड़ दें, लेकर मीरा की लगन वहीं रहेगी प्रभु, अब तो होना है सो हो।’ यह लगन ही तो जीवन है। मैं अभी जीवित रहूँगी। मैं बच गई।

तुम लोगों के चरणों के आश्रय से छूटी हुई।

— मृणाल

मृत्युलोक की परिकल्पित संरचना

(देवभूमि – एक महत्वपूर्ण अध्याय)



मेहरबान सिंह नेगी
वरिष्ठ प्रशासन अधिकारी (से.नि.)
भूखण्ड-191 (एफ 2), सेक्टर 4, वैशाली,
गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश-201010

भारतीय मनीषियों की मान्यता है कि परमपिता ब्रह्मा समस्त सृष्टि के सृजनहार, प्राणपति, नियामक और नियंत्रक हैं। उनके नाम की गणना कनिष्ठिका में प्रथम स्थान पर यानि भगवान विष्णु और महेश जी से पहले की जाती है। सतयुग से पूर्व, एक सुनहरी सुबह, ब्रह्मा जी के रचनाधर्मी के मन में स्वर्णिम विचार आया कि हमारे सौरमण्डल का पृथ्वी ग्रह जीवन के लिए अत्यंत उपयुक्त है। अतः उन्होंने रहस्यमय देवलोक के बाद पृथ्वी की माटी में भी जीवन विस्तारण का मन बना लिया था। जीवों और वनस्पतियों के सहअस्तित्व के साथ जीवन यापन के लिए परिकल्पित संरचना को मूर्तरूप देने से पूर्व पृथ्वी का एक ग्लोबाकार प्रतिरूप बनवाया। उस प्रतिकृति पर जलनिधि, नदियां, समतल भूमि, रेगिस्तान

और पर्वतीय भूभाग अलग-अलग रंगों में प्रदर्शित किए। उन्होंने विचाराधीन प्राणियों के जीवन चक्र की आवश्यकताओं के अनुरूप स्थान उस प्रतिकृति में संकेतकों के माध्यम से आबंटित कर दिए।

देवलोक में देवगणों को योजना का पता चला तो उनका एक प्रतिनिधि मण्डल ब्रह्मा जी के पास गया। प्रतिनिधि मण्डल के वरिष्ठतम सदस्य विष्णु जी ने ब्रह्मा जी को प्रणाम कर आदर पूर्वक कहा, “प्रभु आपने पृथ्वी लोक में अपनी जीवन विस्तारण की योजना में समस्त प्राणियों के लिए स्थान आरक्षित कर दिए हैं। परन्तु परम पिता, देवी-देवताओं को उसमें स्थान देने की कोई योजना नहीं है।”

ब्रह्मा जी ने ध्यान पूर्वक सुनने के बाद स्पष्टीकरण दिया, “मैंने तो स्वप्न में भी नहीं सोचा कि

देवी-देवता भी सुसंस्कृत एवम सुरम्य देवलोक छोड़कर अन्यत्र निवास की कामना कर सकते हैं। कल्पना करो यदि मैं कुछ देवताओं को योजना में शामिल कर भी देता तो स्वाभाविक है कि वे पूछते कि उन्हें किस अपराध के कारण देवलोक से विस्थापित करने की योजना है। खैर यह तो बहस योग्य विषय है और इस पर एक लम्बी चर्चा हो सकती है। लेकिन, आप अपना संक्षिप्त पक्ष विचारार्थ रख सकते हैं।”

विष्णु जी देवों का पक्ष स्पष्टता से प्रस्तुत करते हुए बोले, “हे समस्त सृष्टि के सृजनहार प्रभु, आप तो जानते हैं कि देवलोक में सम्पन्न देवगणना के अनुसार देवसंख्या तैतीस करोड़ हो चुकी है। हमारे परिवारों के संग हमारे उपयोगी पशु, पक्षी, आदि भी हैं जिनमें से

कुछ का उपयोग हम वाहन के रूप में करते हैं। प्रभु, यदि योजना में कुछ स्थान हमें भी आबंटित कर दें तो आपकी कृपा होगी।”

ब्रह्मा जी बोले, “आपने तो मेरी आंखें खोल दी। अच्छा हुआ आपने योजना को कार्यरूप देने से पूर्व यह विषय मेरे संज्ञान में ला दिया। अन्यथा, कालांतर के पश्चात देव वर्ग को योजना में सम्मिलित करने के लिए किसी प्रजाति के प्राणियों को विस्थापित करना पड़ता। स्वाभाविक है कि तब तनिक असुविधा होती। एतदर्थ, आपका धन्यवाद।”

देव प्रतिनिधि मण्डल के सदस्य बोले, “प्रभु, आपने हमारी समस्या को, उचित परिपेक्ष में, ध्यान से सुना। जीवन विस्तारण योजना में हमें भी शामिल करने का मन बनाया है। धन्यवाद के पात्र याचक नहीं दाता है। तदर्थ कृपा तहदिल से धन्यवाद स्वीकारें।”

ब्रह्मा जी एक विशेष भूभाग को इंगित करते हुए बोले, “आप इस पावन भूमि में रहें। यह भूभाग अब देवभूमि के नाम से जाना जाएगा। देवों की उपस्थिति से क्षेत्रीय जन जीवन पर चमत्कारी प्रभाव पड़ेगा। संगति के प्रभाव से वे देवगुण ही धारण करेंगे। उनकी भक्ति,

शारीरिक और निर्णयन शक्ति में भी वृद्धि होगी। यहां के परिवेशी जीवन से देव परिवारों को किसी प्रकार की असुविधा न होगी क्योंकि मैंने अपनी मूल कार्य योजना में इस क्षेत्र के लिए दो विशिष्टताओं का समावेश किया है।

1. यह स्थल विशेष प्रजाति के मानवों के लिए आरक्षित है जो संस्कारी, कर्तव्यनिष्ठ, परमवीर, धीर-गम्भीर, संतोषी एवम् धार्मिक हों, और

2. विश्वबंधुत्व और जनकल्याण के भाव रखने वाले प्रतिभावान नागरिक देश के अन्य भागों से भी यहां आएँ, सुरम्य तपोभूमि की माटी की खुशबू से परिचय पाएँ, कुछ समय बिताएँ, आदर्श समाज की स्थापना हेतु ज्ञान का दीपक जलाएँ और समस्त विश्व को राह दिखाएँ।”

विष्णु जी अत्यंत प्रसन्नता के भाव से बोले, “धन्य हो प्रभु! आपने तो परियोजना में सहअस्तित्व, विश्वबंधुत्व और वैश्विक कल्याण के भावों के आलोक में समस्त सूक्ष्मतम मानवीय बिन्दुओं को छुआ है।”

ब्रह्मा जी बोले, “एक बात स्पष्ट कर देता हूँ। देव परिवार जो

स्वेच्छा से देवभूमि में जाना चाहते हैं केवल वे ही जाएँ।”

देवगणों के मुखमण्डल पर खुशी के भाव और आंखों में अद्भुत आभा थी। वे, अपने स्थान से खड़े हो के सिर नवाए अभिनन्दनीय भाव में एक स्वर में बोले, “हे समस्त सृष्टि के रचनाकार प्रभु, आपका कोटिशः धन्यवाद।” समाधान प्राप्ति पर वे ब्रह्मलोक से बाहर निकलने लगे। ब्रह्मा जी ने अपने पास ही बैठे विष्णु और महेश जी को तनिक रुकने का संकेत किया। वे दोनों रुक गए।

प्रतिनिधि मण्डल के बाकी सदस्यों के जाने के बाद विष्णु जी ने आदर भाव से पूछा, “प्रभु हमारे लिए क्या आदेश है?”

ब्रह्मा जी बोले, “मैं अपनी योजना के प्रारूप पर कार्यरत हूँ। योजना को अंतिम रूप देने से पहले, वांछित समीक्षा एवं सहयोग के लिए, आप दोनों को आमंत्रित करने ही वाला था। यह तो एक सुखद संयोग ही है कि आप स्वयं पधारें हैं। एतदर्थ आपका आभार।”

दोनों देव एक स्वर में बोले, “परमपिता, बल्कि हमें आपका आभार व्यक्त करना चाहिए जो आपके मन में हमारे प्रति असीम

स्नेह और हम पर अटूट विश्वास है। आप जो भी काम आबंटित करेंगे वह हम सहर्ष सम्पन्न करेंगे। आप केवल आदेश करें।”

ब्रह्मा जी बोले, “मैं नहीं चाहता कि पृथ्वी लोक की व्यवस्था देव लोक की तरह ही चले। अन्यथा, पृथ्वी लोक में जीवधारियों के कुछ पीढ़ियों के बाद जीवसंख्या का घनत्व इतना बढ़ जाएगा कि आगामी पीढ़ियों के रहने के लिए कोई जगह शेष न रहेगी।”

विष्णु जी बोले, “प्रभु आप तो अनुभवी हैं और आपका आकलन सही है।”

ब्रह्मा जी बोले, “परिकल्पित समस्त नवसृजनाधीन जीवधारियों की लालन-पालन की व्यवस्था को प्राथमिकता देनी होगी और साथ ही संख्या पर नियंत्रण आवश्यक है। विष्णु जी, आप पालनहार और महेश जी संहारक का काम देख लें।”

दोनों देवों ने एक साथ विनम्रता से उत्तर दिया, “हे जगदीश्वर — परमपिता परमेश्वर, आपकी आज्ञा शिरोधार्य है प्रभु।”

ब्रह्मा जी ने स्पष्ट करते हुए कहा, “आप दोनों कार्य निष्पादन के लिए सहायकों की नियुक्ति एवं

अपनी प्रशासकीय शक्तियों का पुनर्प्रत्यायोजन भी कर सकते हैं। महेश जी के अन्तरनेत्र पर कार्यकलापों और प्राणियों के व्यवहार की मॉनीटरिंग भी कर सकते हैं।”

“जी प्रभु! समझ गए, ऐसा ही होगा। अपनी शक्तियों के प्रत्यायोजन के लिए शुक्रिया,” दोनों ने एक स्वर में कहा।

ब्रह्मा जी कार्य परिचालन व्यवस्था को स्पष्ट करते हुए बोले, “पृथ्वीलोक की समस्त जल सम्पदा पर विष्णु जी का अधिपत्य होगा। अतिरिक्त जल की आवश्यकता होने पर कभी-कभार देवराज इन्द्र भी बादलों के रथ पर सवार होकर विश्व भ्रमण पर निकल कर विष्णु जी की मदद कर सकते हैं। मैं देवर्षि नारद से कहूंगा कि पृथ्वीलोक में भी सूचना प्रसारण का



कार्य तब तक देखते रहें जब तक वहां वैकल्पिक व्यवस्था नहीं हो जाती। वे दोनों मेरी बात कदापि न टालेंगे। आप समीक्षा के तौर पर कुछ कहना चाहते हैं तो अवश्य कहें।”

विष्णु जी बोले, “प्रभु, आपके अनुभव और दूरदृष्टि से ही सृष्टि की इतनी विस्तृत योजना सम्भव हुई है। कहने को कुछ नहीं है। यही कहेंगे कि आज हम दोनों का खड़े होकर आपका अभिनन्दन का मन है। परम पूज्य नमन है आपको।”

ब्रह्मा जी दोनों की उत्सुकता बढ़ाते हुए बोले, “कृपया बैठिए, एक महत्वपूर्ण बात जो स्पष्ट करनी थी वह तो रह ही गई।”

“वह क्या है प्रभु?,” दोनों देवों ने बैठते हुए अत्यंत उत्सुकता से पूछा।

ब्रह्मा जी बोले, “पृथ्वीलोक का जीवन मृत्युलोक की अवधारण पर चलेगा। जो आया है उसे जाना ही होगा। यही हरेक जीवधारी के वर्तमान मृत्युलोकी जीवन का अंतिम सत्य होगा।” विष्णु जी और महेश जी एक दूसरे की ओर देखने लगे।

विष्णु जी महेश जी से बोले, “यह महत्वपूर्ण उपबन्ध तो देवों को भी स्पष्ट करना होगा ताकि वे देवलोक से विस्थापन का निर्णय सोच समझकर लें। देवलोक के घर का परित्याग न करें।”

महेश जी ने ब्रह्मा जी से अत्यंत शालीनता से एक स्पष्टीकरण मांगा, “परमपिता क्या पृथ्वी लोक में, जिसे आप मृत्यु लोक की संज्ञा दे रहे हैं, सभी पर एक ही नियम लागू होगा या इसमें कोई परन्तुक भी होगा।”

ब्रह्मा जी बोले, “यद्यपि नियम तो एक ही है तथापि आत्मा अमर रहेगी। पूर्वजन्म के कर्मों के आधार पर पुनर्जन्म का निर्धारण होगा। मृत्युलोक में चार युग होंगे – सतयुग, श्रेता, द्वापर और कलियुग। सतयुग में सभी प्राणियों की आयु अधिक होगी और क्रमिक युगों में घटती जाएगी। देवगण चाहें तो पृथ्वीलोक से देवलोक वापस आ सकते हैं और/या वहीं अवतार भी ले सकते हैं। परन्तु तदनन्तर उनका अवतार ही मृत्युलोक में मानव या जीव रूप में अपनी जीवन लीला पूर्ण करेगा। देवगण अदृश रूप में देवलोक और मृत्युलोक के मध्य विचरण कर समस्त कार्य

संचालन करते हुए धर्म परायण परम भक्तों को कभी-कभार दर्शन भी दे सकते हैं। इतिशुभम्।” विष्णु जी ने ब्रह्मा जी को धन्यवाद ज्ञापित किया और त्रिदेवों की महत्वपूर्ण बैठक सम्पन्न हुई।

विष्णु जी ने देवलोक में प्रेस वार्ता की। समस्त प्रकल्प और विकल्प भी स्पष्ट कर दिए। देवर्षि नारद ने देववाणी में ही आकाशवाणी की और सूचित कर दिया कि महेश जी ने अपना त्रिशूली टावर गाढ़ दिया है। उनके अंतरनेत्र पर विस्तृत जानकारी उपलब्ध करा दी गई है। तदनन्तर ब्रह्मा जी ने 84 लाख जीवों और वनस्पतियों की उत्पत्ति प्रारम्भ कर दी। कुछ देवी-देवताओं ने नैसर्गिक सुन्दरता से सम्पन्न देवभूमि में सतयुग के प्रारम्भ में अपने घर बसाए। विष्णु जी और महेश जी ने कुछ काम स्वयं संभाला और कुछ कार्य निष्पादन हेतु ब्रह्मा जी द्वारा प्रत्यायोजित शक्ति के अनुसार अपने अधीनस्थ विभागाध्यक्षों की नियुक्ति के उपरांत अपने को प्रत्यायोजित कुछ शक्तियां विभागाध्यक्षों को पुनर्प्रत्यायोजित कर दी ताकि कार्य संचालन

वांछित गति से हो सके और समन्वय भी बना रहे।

महेश जी के अधीनस्थ एक विभाग के विभागाध्यक्ष चित्रगुप्त नियुक्त हुए। वे प्राणियों के जन्म, धर्म—कर्म, आचार—विचार, व्यवहार, जीवन के लिए अधिकतम आयु और मृत्यु के आंकड़े रखते थे। दूसरे विभाग के विभागाध्यक्ष यमराज थे। दोनों के अधीन कुछ कार्मिक और दूत नियुक्त हुए जो आदेशों का पालन करते थे और सामयिक कार्य निष्पादन प्रतिवेदन भी प्रस्तुत करते थे। दोनों कार्यालय यमलोक में समीप ही स्थित थे ताकि दोनों के कार्यों में सामंजस्य बना रहे और लेखांकन में किसी प्रकार की विसंगति न रहे। तदनन्तर, जैसे—जैसे आवश्यकता हुई, प्राणियों के कर्मों के आधार पर स्वर्ग—नर्क और पुर्नजन्म की व्यवस्था भी कर दी गई।

मान्यता है कि देवभूमि ही देवलोक से आए देवों की निवास स्थली रही है। कई देवी—देवताओं भारत—भूमि ने अन्य क्षेत्रों में अवतार लेकर अपनी जीवन लीला सम्पन्न की। देवभूमि की पावन धरा के संबंध में अनेकानेक मान्यताएं और किंवदन्तियां प्रचलित हैं। पौराणिक

मान्यता है कि जब राजा भगीरथ ने संताप हारिणी, पाप विनाशिनी और भवसागर तारिणी मां गंगा को स्वर्ग से पृथ्वी में उतारने के लिए कठोर तप किया तब महेश जी ने अपनी जटा में उस धारा के तीव्र प्रवाह को सहन किया। इसी धरा में गोमुख, यमनोत्री, केदारनाथ और बद्रीनाथ पवित्र धाम हैं। हेमकुण्ट साहब गुरुद्वारा, सरस्वती का उद्गम स्थल, कई देवस्थलियां, तीर्थ—स्थलियां, पंच प्रयाग और धर्म एवम् मोक्ष नगरी हरिद्वार है। देवभूमि ही अधिकांश ऋषि—मुनियों और तपस्वियों की तपस्थली रही। इसी भू भाग में वेद—पुराणों, उपनिषदों, और कई अन्य ग्रंथों की रचना हुई। यहां देवों के देव महादेव ने धूनी रमाई, पारिवारिक जीवन जिया एवं उनके गणों ने भी विचरण किया। विश्वगुरु के गुरुकुलों की शिक्षा विश्व विख्यात रही है और आज भी देवभूमि में कुछ गुरुकुल हैं जहां देववाणी में शिक्षादीक्षा होती है।

लव—कुश की जन्म स्थली महर्षि वाल्मिकी आश्रम (रामनगर के समीप) इसी क्षेत्र में है। 'वाल्मिकी रामायण' की रचना भी इसी आश्रम में हुई। जिस सिंह शावकों के दांत गिनने वाले वीर भरत के नाम पर ही हमारे देश का नाम भारत पड़ा

उसकी जन्म स्थली कण्वाश्रम (कोटद्वार के समीप) है। कविकुल गुरु कालीदास ने इसी भूमि में देववाणी संस्कृत में अनेकों महत्वपूर्ण साहित्यिक रचनाएं रची। कहते हैं कि यक्ष ने पांडवों की परीक्षा यहीं पर ली। इसी धरा से पांडवों ने स्वर्गारोहण भी किया। नन्दा देवी की जात (धर्म और संस्कृति की मिश्रित यात्रा), कुम्भ मेला, कतिपय अन्य रहस्यमयी घटनाएं और परम्पराएं ऐसी हैं जिनसे आज भी मानव मन चमत्कृत हो जाता है और वे दैवीय शक्ति पर आस्था के साथ विश्वास करने लग जाते हैं। गंगा मैया के तट के दोनों ओर देवों का विस्तृत गलियारा है ही नैसर्गिक सुन्दरता से इतना भरपूर कि मानव मन आकर्षणवश खिंचा चला आता है। देवभूमि के दर्शन के लिए जीवन काल में तीव्र जिज्ञासा स्वाभाविक है लेकिन कई भारतीय बुजुर्ग तो अंतिम इच्छा रखते हैं कि उनके अस्थि कलश धर्म एवम् मोक्ष नगरी हरिद्वार में विसर्जित हों। देवभूमि और उनके निवासी गुण—धर्म के आधार पर ब्रह्मा जी के नामकरण एवं संकल्पना को सार्थकता प्रदान करते हैं।

इसी भाग में फूलों की घाटी और

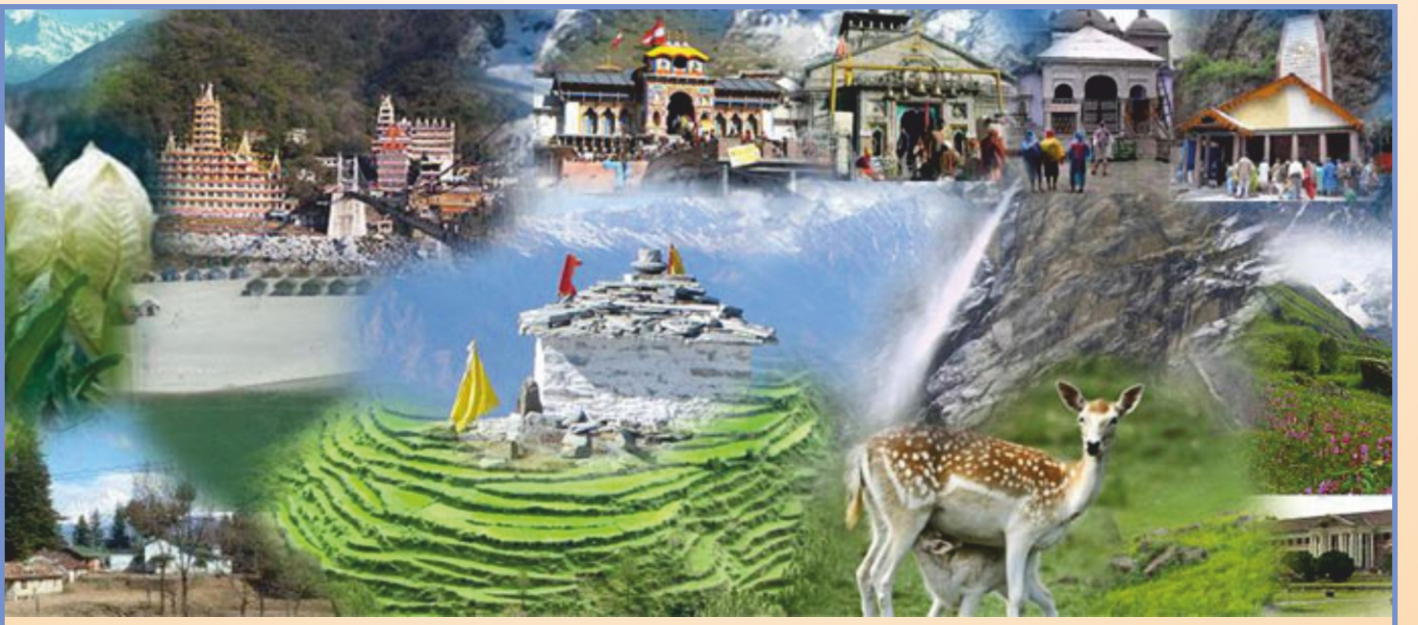
अनेकों कन्दमूल हैं। अतः यहां का जीव यदि स्वस्थ कर्मठ है तो भूखा नहीं मर सकता। इस क्षेत्र में औषधीय महत्व की अनेकों जड़ी बूटियां हैं। मूर्छित लक्ष्मण की जीवन रक्षा हेतु संजीवनी बूटी भी यहीं प्राप्त हुई थी। जिन ऋषियों ने आयुर्वेद और योग साधना के लिए काम किया उनमें महर्षि चरक और योगाचार्य महर्षि पतंजलि प्रमुख हैं।

इस धरा के लोग धार्मिक प्रवृत्ति के हैं। इसके लिए नीति और धर्माचरण आवश्यक है। मन, वचन और कर्म में शुद्धि और सत्य के पक्ष में खड़ा होना ही धर्म है। यद्यपि जिन उदाहरणों को प्रस्तुत किया जा रहा है उनको कुछ लोग मिथक या अंध विश्वास की श्रेणी में रखेंगे लेकिन सनातन धर्म में इन्हें

मान्यता भी प्राप्त है और प्रचलन में भी है। हमने तो अपनी दृष्टि के समक्ष कई दैवीय घटनाएं देखी हैं। भविष्यवेताओं के जो शब्द हमारे कर्णगोचर हुए उन घटनाओं को निर्दिष्ट समय पर प्रत्यक्ष घटते भी देखा है। कतिपय बार ऐसा हुआ जब किसी बीमार व्यक्ति की चिकित्सा हेतु आधुनिक बड़े से बड़े चिकित्सकों ने हाथ खड़े कर दिए और उन्हें वहां की आयुर्वेदिक दवाई से सही चिकित्सा उपलब्ध हुई या पूजा-पाठ/झाड़-फूंक से वह ठीक हो गया। चमत्कारी प्रभावों के मध्यनजर अब तो चिकित्सक/मनोचिकित्सक भी झाड़-फूंक और पूजा-पाठ को अंतिम उपाय के रूप में मान्यता देने लगे हैं। यहां के मानव इतने

विश्वास करते हैं कि कतिपय वार यहाँ अंतिम उपाय के रूप में प्रयुक्त छद्म चिकित्सा (Placebo) भी प्रभावकारी होती है।

इस भूमि में देवी-देवताओं सहित शिव, विष्णु और देवियों के अवतारों और गोलू जैसे कुछ वीरों के मंदिर हैं। गोलू की देवता के रूप में पूजा होती है। इस भूमि में घरभूत, रणभूत और सामान्य भूत प्रेतों की भी पूजा होती है। वे नचाए या वकाए भी जाते हैं। उनकी उचित मांगों पर भी विचार किया जाता है। यह जानकर सुखद आश्चर्य अवश्य होगा कि यद्यपि इस भूमि में कभी मुगलों का शासन नहीं रहा तथापि यहाँ के लोग सय्यदों की पूजा करते हैं, नाचते हैं और मान्यता है



कि यदि सय्यद नचाने से प्रसन्न हो जाए तो मालामाल कर देते हैं। पुराने लोग नागिनों के रथ, आछरियों, सिद्धया और विद्धया रमोला एवम् अन्य वीरों की वार्ताएं/गाथाएं सुनाते थे। शब्द ब्रह्म – ढोल सागर के ज्ञाता इस ताल-छंद की विद्या का उपयोग सूचना प्रसारण के रूप में भी करते थे और देवों को नचाने के लिए भी। पांडव नृत्य और छलिया नृत्य यहां मेले, विवाहोत्सवों, आदि अवसरों पर आयोजित होता है। शंख ध्वनि का उपयोग पूजा काल, युद्ध काल और मृत्यु के समाचार प्रसारण के लिए तो अभी भी होता है।

देवभूमि के मानव के मन में धर्म, देवों, अवतारों और परम वीरों के प्रति आस्था, राष्ट्रीयता की भावना, कर्म के प्रति सकारात्मकता, सहअस्तित्व, स्वर्ग-नर्क और पुर्नजन्म के प्रति विश्वास विश्व के दूसरे भागों से तनिक अलग प्रतिमान और स्वस्थ समाज के लिए आंतरिक नियंत्रण स्थापित करते हैं। वे देवभूमि को समझने हेतु आएंगे, गंगा नहाएंगे, देवदर्शन पाएंगे और कुछ दिन देवभूमि की

माटी में अवश्य बिताएं। आपको अनुभूति होगी कि देवभूमि का संस्कारी मानव या देवभूमि के रहस्यों से परिचित भारतीय नागरिक कतिपय बार अपनी मानवीय शक्ति और कभी-कभार तप-त्याग से अर्जित दैवीय शक्ति के उपयोग से प्रत्यक्षदर्शी या प्रतिपक्षी को आश्चर्य चकित भी कर सकता है।

युगीन महत्वपूर्ण घटनाओं पर दृष्टिपात से पाते हैं कि हर युग में सत्य-असत्य के मध्य युद्ध हुए और सत्य की विजय हुई।

1. देवों और दनुजों के मध्य युद्ध सतयुग में समुद्र मंथन से रत्नों के लिए शुरू हुआ। शिव ने समुद्र मंथन के उपरांत विषपान किया और समस्त धरा के प्राणियों को विनाश से बचा लिया। उनकी प्रतिष्ठा ऊंची हो गई कि वे देवों के देव महादेव बनकर उभरे। युद्ध में कई बार ऐसी विकटतम परिस्थिति आई जब भष्मासुर जैसे खूंखार दैत्य के वध के लिए देवों का वश नहीं चला तो इस पावन धरा की देवियों को हथियार उठाने पड़े।

2. त्रेता में मानव और दानव युद्ध हुआ। एक ओर देवावतार राम स्वयं

खड़े थे और दूसरी ओर दानव प्रवृत्ति के प्राणी थे।

3. द्वापर का युद्ध सगे रिश्तेदारों के मध्य हुआ। सत्य के साथ विष्णु अवतार कृष्ण खड़े थे तो दूसरी ओर दानवी प्रवृत्ति के वे असत्यवादी धूर्त थे। गीता का ज्ञान महाभारत की रणभूमि में ही दिया गया।

4. कलियुग में भी यही क्रम जारी है। दो विश्व युद्ध हो चुके हैं। आंग्ल उपनिवेश के कई देश गणतंत्र बन चुके हैं। विश्व युद्ध की पुनः आहट है जिसमें एक ओर सर्वधर्म समभाव वाले मानव हैं तो दूसरी ओर विस्तारवादी, उग्रवादी, आतंकवादी और उनको प्रश्रय देने वाले देश हैं। आप जानते हैं कि उनका व्यवहार राक्षसी प्रवृत्ति से भी बदतर है। राक्षसों ने यद्यपि छल बल का भी प्रयोग तो किया परन्तु आत्मघात कभी नहीं किया। यह भी हो सकता है कि इस प्रवृत्ति के कुछेक देशों के विनाश के लिए विधि ने ऐसी ही रचना रची होगी। अन्यथा, यह कलियुग का अंतिम चरण हो और युग चक्र में परिवर्तन का समय समीप हो। समुद्र मंथन की प्रक्रिया भी चल ही रही है।

हमेशा सीखते रहो



पवन कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षक
कार्यालय महालेखाकार (ले.प.)-II,
तमिलनाडु एवं पुदुचेरी, चेन्नई-600018

एक बार गाँव के दो व्यक्तियों ने शहर जाकर पैसा कमाने का निर्णय लिया। शहर जाकर कुछ महीने इधर-उधर का छोटा-मोटा काम करके दोनों ने कुछ पैसे जमा किया। फिर उन पैसों से अपना-अपना व्यवसाय प्रारंभ किया। दोनों का व्यवसाय चल पड़ा। दो साल में ही दोनों ने अच्छी खासी तरक्की कर ली।

व्यवसाय के फलता-फूलता देख पहले व्यक्ति ने सोचा कि अब तो मेरा काम चल पड़ा है। अब तो मैं तरक्की की सीढ़ियाँ चढ़ता चला जाऊँगा। लेकिन उसके सोच के विपरीत व्यापारिक उतार-चढ़ाव के कारण उसे उस साल अत्यधिक घाटा हुआ।

अब तक आसमान में उड़ रहा वह व्यक्ति यथार्थ के धरातल पर आ गिरा। वह उन कारणों को तलाशने लगा, जिनकी वजह से उसका

व्यापार बाजार की मार नहीं सह पाया। सबसे पहले उसने उस दूसरे व्यक्ति के व्यवसाय की स्थिति का पता लगाया, जिसने उसके साथ व्यापार आरंभ किया था। वह यह जानकर हैरान रह गया कि उस उतार-चढ़ाव और मंदी के दौर में भी उसका व्यवसाय मुनाफे में है। उसने तुरंत उसके पास जाकर इसका कारण जानने का निर्णय लिया।

अगले ही दिन वह दूसरे व्यक्ति के पास पहुँचा। दूसरे व्यक्ति ने उसका खूब आदर-सत्कार किया और उसके आने का कारण पूछा। तब पहला व्यक्ति बोला, दोस्त इस वर्ष व्यवसाय बाजार की मार नहीं झेल पाया। बहुत घाटा झेलना पड़ा। तुम भी तो इसी व्यवसाय में हो। तुमने ऐसा क्या किया कि इस उतार-चढ़ाव के दौर में भी तुमने मुनाफा कमाया।

यह सुनकर दूसरा व्यक्ति बोला, भाई मैं तो बस सीखता जा रहा हूँ, अपनी गलती से भी और साथ ही दूसरों की गलतियों से भी। जो समस्या सामने आती है, उससे भी सीख लेता हूँ। इसलिए जब दोबारा वैसी समस्या आती है, तो उसका सामना अच्छे से कर लेता हूँ और उसके कारण मुझे नुकसान नहीं उठाना पड़ता। बस यह सीखने की प्रवृत्ति ही है जो मुझे जीवन में आगे बढ़ाती जा रही है।

दूसरे व्यक्ति की बात सुनकर पहले व्यक्ति को अपनी भूल का अहसास हुआ। सफलता के मद में वो अति-आत्मविश्वास से भर उठा था और सीखना छोड़ दिया था। वह यह प्रण कर वापस लौटा कि वो कभी सीखना नहीं छोड़ेगा। उसके बाद उसने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा और तरक्की की सीढ़ियाँ चढ़ता चला गया।

विरासत



अनिल कुमार शर्मा
वरिष्ठ लेखा अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. व हक.)
हरियाणा, चण्डीगढ़

इस बार जब मैं अपने गृहनगर लौटा तो अपने प्राइमरी स्कूल में बच्चों को देखने की इच्छा मन में थी। जहां हम जमीन पर बैठ कर स्लेट पर चाक से लिखा करते थे। मैं खुद वहां आठवीं उत्तीर्ण करने के बाद से नहीं गया था क्योंकि उसके बाद हम शहर से बाहर विकसित हो रही कालोनी में अपने घर में शिफ्ट हो गये थे।

स्कूल का कायाकल्प तो नहीं हुआ था परंतु काफी कुछ बदल गया था सिवाय क्लासरूम और ब्लैक बोर्ड के। टाटपट्टी की जगह बेंच और मेजों ने ले ली थी, भवन की खपरेल की छत पक्की हो चुकी थी और सीमेंट की बनी पानी की प्याऊं की जगह वाटर कूलर लग गया था। बच्चों के साथ पुरानी स्मृतियों को सांझा करते हुए जब बाहर निकला तो अचानक मेरी नजर एक बूढ़े पर पड़ी जो वहां एक रेहड़ी पर गन्ने का जूस हाथ

की मशीन से निकाल कर बेच रहा था। 30 वर्ष बाद भी मुझे उसका चेहरा कुछ जाना पहचाना सा लगा। जूस पीने के बहाने मैं उसके पास चला आया। “बलवंत — अचानक मुझे याद आया” — चालीस वर्ष की आयु के बलवंत को हम सभी बच्चे तब भी बलवंत चाचा कहते थे और अब सत्तर वर्ष की आयु में भी अपनी बेहर कमजोर हो चुकी काया में भी वह अपनी खराशभरी भारी आवाज और चेहरे से मेरी एकदम पहचान में आ गया। तब वह स्कूल के सामने चाट समोसे कचोरी की रेहड़ी लगाता था और अपनी चाट के स्वाद के कारण स्कूल के बच्चों के अलावा भी उसकी रेहड़ी पर काफी भीड़ रहा करती थी। लोग कहते थे वह बहुत कमाता है।

“पहचाना बलवंत चाचा” — मैंने टोका तो मशीन में गन्ना डालते उसके हाथ रुक गए। “नहीं” — उसने मेरा चेहरा पढ़ने की कोशिश

की। मैं हंस पड़ा — “पहचानोगे भी कैसे। आठवीं में पढ़ता था मैं आज से 30 वर्ष पहले इसी स्कूल में। खूब चाट पकोड़ी खाई है आपकी।”

“अच्छा—अच्छा” — वह पुनः मशीन में गन्ना डालने लगा।

“अब तो वह चाट की रेहड़ी शहर में एक मशहूर दुकान में तब्दील हो गई है। ‘जायका’ नाम से।” उन्होंने मशीन का हेण्डल घुमाया तो पूरी ताकत लगाने के बावजूद वह घूमा नहीं। मैंने मदद के लिए हाथ बढ़ाया तो मेरे बेटे ने मुझे बीच में ही रोककर मशीन का हेण्डल आसानी से पूरा घुमा दिया। वह खुश हो गए।

“तो आप यहां क्यों?” — मैंने पूछा।

“बस, बेटा बड़ा हो गया है अब। उसी ने सम्हाल ली है दुकान।”

आगे कुछ भी पूछने की मेरी हिम्मत नहीं पड़ी।

सावन



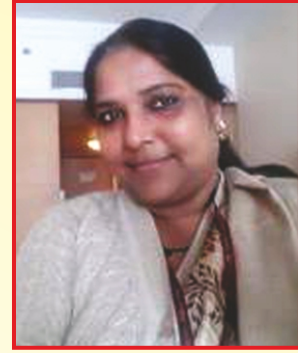
सुश्री इला सिंह, आई.ए.एस.
अपर उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक
का कार्यालय, नई दिल्ली

उमड़ घुमड़ यू आये सावन,
खुशियां भर-भर लाये सावन,
हर जीवन को छू जाये सावन,
सब को तृप्त कर जाये सावन!

देखो झूम के बरसे सावन,
खग, मृग, जग पर छाये सावन,
वृक्षों को निखारे, उभारे सावन
हर दिल में बस जाये सावन,
सब को राहत दिलाये सावन!!

बीती हुई वो भीषण गरमी,
अब तो नज़र न आये धरा पर,
इस मतवाले मौसम से सीखो,
जीवन का वो असीम ज्ञान,
जो बिखरते हैं,
वहीं संवरते हैं,
यहां बार बार ...

जीवन का सार



श्रीमती शुभा कुमार
(सेवानिवृत्त उ.नि.म.ले.प.)
बी-5, टावर संख्या-6
न्यू मोती बाग, नई दिल्ली

मन लौट लौट जाता है
उस वक्त में, जो बह गया
बस 'सोच' में ही रह गया।
वह वास्तविक था या काल्पनिक
इन उलझनों में न पड़ो
बस हर लम्हा जो जी चुके
महसूस अन्दर तक करो

खग-कुलो के शेर संग,
जब शंख-स्वर था गूँजता
गुलमोहर की कोपलों में
गुल शाख पर था फूलता।
जब दिवस थे सोने सरीखे
और रातें नीली रूपहली
जब लबों पर थी हँसी भीनी
और शामें सुंदर सजीली
अहसास! बस अहसास है
उसे आज साँसों में भरों।
बस हर लम्हा जो जी चुके
महसूस अन्दर तक करो।

कि कल था सब कुछ खुशनुमा
माँ की गोद में शीश था।
कि कल तुम्हारे हर कदम पर
पिता का आशीष था।

न कोई चिन्ता फिर थी
न अपूर्ण कोई कामना।
जब हाथ में आकाश था
कदमों तले सारा जहाँ
अब आज वो सब खो गया
न सोच दिल छोटा करो।
बस हर लम्हा जो जी चुके
महसूस अन्दर तक करो।
जिस सफर पर तुम चले
उसका न कोई अन्त है।
हर मोड़ पर है दृश्य नूतन
हर राह खुद में अनन्त है।
तुम खुद के ही हो सारथी,
अपनी दिशा खुद ही उकरो
आत्मसात हर पल को करके
भाव, करुणा, सुख, बटोरो।
हर डगर पर, हर नगर में
कुछ नया निर्मित करो।
बस हर लम्हा जो जी चुके
महसूस अन्दर तक करो।
खोता नहीं कुछ भी यहाँ
जो बीतता वो 'वक्त' है।
हम कल भी थे, हम आज भी

यह चिन्तन चिरन्तन सत्य है।
जो हो चुका, वो भी है संचित
मानस पटल पर साफ अंकित।
जो पल कहीं पर थम गए
अवचेतना में हो अलंकृत
उसकी तलाश में न तुम
व्यर्थ आज और अब करो।
बस हर लम्हा जो जी चुके
महसूस अन्दर तक करो।
महसूस करना भी कला है
अहसास होना मुश्किल बड़ा।
वक्त को अपनाया है जिसने
वो रास्ता पाया है उसने।
स्नेह का दरिया बहाकर
हर उस घड़ी को अमर कर
उसमें समाहित हर खुशी को
पल में ही पाया है उसने।
हर लम्हे के सार को
समझो, समझ आगे बढ़ो
जीवन तभी सम्पूर्ण है, जब
हर लम्हे को जी सको
महसूस कर जीते रहो।

वापसी

(प्रवासी मजदूर का अंतर्द्वंद्व)



सुश्री रश्मि अग्रवाल
भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
महानिदेशक लेखापरीक्षा (नौसेना)
नई दिल्ली

चलो रे भाई, दूर बहुत है गाँव,
ये शहर पराया फिर होने लगा,
इस ठौर कहाँ अब छांव

डर आज वही फिर फैला है,
उसी आतंकी का खेला है,
थमने को है सब, आज न कल,
चिंता खाए जाए हर पल,
किस तरह सफ़र होगा पूरा,
थक चुके हैं अब तो पाँव,

ढँक कर नकाब से मुख को,
चल अपने घर को लौट चलें,
माना कि वहां रोटी आधी,
पसरी लिपटी है बर्बादी,
है हवा वहां की सुथरी बहुत,
पर ठंडे पड़े अलाव,

इस ओर कुआँ है, खाई उधर,
आशा की किरण का नाम नहीं,
मुंह फेर लिया है मुंसिफ ने,
आया फिर वही पड़ाव



बंटवारा



विनय कुमार गर्ग
सहायक लेखा अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. व ह.)
हरियाणा, चण्डीगढ़-160020

बेजोड़ बनाया प्रकृति को
और मानुष को भगवान ने
खंड-खंड समरसता, कर डाली
क्यों कुदरत की, इंसान ने

थे जन्मे रसखान-कबीर, इसी जमीं पर
तब ना इतना, बाँटा था इंसान ने
थी बड़ी मामूली, कट्टरता-कटुता
फिर वक्त के साथ इंसा बदला
नफरत-मतलब परस्ती का दौर चला
भड़का आग, बंटवारे किए इंसान ने

पहले रंग, जात और धर्म में
बाँटा खुद को, इंसान ने
कोई हिंदू हो गया, तो कोई मुसलमां
कोई सिख, तो कोई ईसाई हो गया
और भी न जाने, क्या-क्या बन गया
गवां दी मूल पहचान, अपनी इंसान ने

राष्ट्रीय ध्वज के, रंग भी सारे
बाँट दिए इंसान ने

रंग हरा-धानी, मुसलमां हो गया
रंग श्वेत ईसाई, तो केसरिया हिंदू हो गया
इन रंगों की बंदरबांट में,
रंग प्रेम का, खो दिया इंसान ने

भोले-मासूम, पशु-पक्षी भी सारे
बाँट दिए, मतलब परस्त इंसान ने
बकरे-मुर्गे को, मुसलमां बना डाला
तो गाय-मोर को, हिंदू बना डाला
अबोध पशु-पक्षी ना पाए, कुछ भी समझ
क्यों बंटवारा किया, इंसान ने

ना थमी आग, बंटवारे की जब
तो भाषाओं को भी, बाँट दिया इंसान ने
उर्दू मुसलमां की, शान हो गई
तो हिंदी हिंदुओं की, आन हो गई
क्षेत्रीय भाषाओं में भी तलवारें तन गई
यूँ भाषा को भी झगड़ों में, डाल दिया इंसान ने

ना छोड़ा जिद में, बंटवारे की
खुद का कुटुंब भी, इंसान ने

बांटी जमीनें, दौलत बांटी
 घर बाँटा, चूल्हा बाँटा
 ना बख्शा, सामां कोई बाकी
 मात-पिता भी अपने, बाँट दिए इंसान ने

 है दौड़ता सभी की, रगों में लहू एक
 फिर कैसे? भेद किया इंसान ने
 है सूरज भी एक और चंदा भी एक
 धरती भी एक और आसमां भी एक
 फिर क्यों बंटा, मालिक का बंदा ये नेक
 ये साधारण गणित क्यों, ना समझा इंसान ने

 है सूत्र बड़ा, अनेकता में एकता का
 फिर यह प्यारा सूत्र, क्यों तोड़ा इंसान ने
 ये धर्म-जात, मजहब का प्रचार
 हैं सब इंसानों को, बांटने के औजार
 हैं धर्म बड़ा इंसानियत का
 हाय! क्यों? सोचा ना इंसान ने

 अंग-भंग सृष्टि, कैसे जी लेगी
 यह क्यों? ना सोचा इंसान ने
 तोड़ो-बाँटो और राज करो
 बांटने तोड़ने की नीति ने हमें
 एक दूसरे से बहुत दूर कर दिया
 कुदरत की बनाई नेमत को
 हमने ही मानो नेस्तोनाबूद कर दिया

 हिन्दू भी कहाँ भूल पाया है
 वो तहजीब और मिठास उर्दू की
 तो मुस्लिम भी कहाँ भुला पाया है
 वो गंगा-जमुनी मोहब्बत भाईचारे की

हो बांटने की नीति का अब तिरस्कार
 ईश्वर की संरचना पर प्रहार
 जमकर हो समरसता का प्रचार
 है एक देह रूप

 बहुत हुआ अब ख़त्म करो ये
 बंटवारे का अत्याचार।
 समरसता है जीवनदायनी
 क्यों ना छोड़ी, ऐसी फितरत इंसान ने।

 विभाजन करता जा रहा है दूर
 मानव को खुदाई से, भाई को भाई से,
 कर रहा महरूम हमें, अपना
 सभी रंग और भाषाओं को
 इसलिए, खत्म हो अब
 बांटने का धिनौना व्यापार

 रहना था जिसे पास, क्यों हो रहे वो दूर
 दिलों से दूर-दूर, विचारों से दूर
 बची थी बाकी जो कमी बंटने में
 वह कर दी राजनेताओं ने दूर
 लड़ा दिया भाई को भाई से
 अमन को अशांति से

 बंटवारे की खाई दिन ब दिन
 क्यों बढ़ती ही जा रही है
 मासूमों का भोलापन और
 अपनापन खाए जा रही है

 देखा है मुस्लिम मासूमों को मचलते
 दीवाली के पटाखे और मिठाइयों के लिए
 हिन्दू भी अब ईद की सिवइयों को झिझकता है
 तो मुस्लिम भी होली के हुडदंग को तरसता है

जीवन तरंग



सुश्री नीतू सिंह
वरिष्ठ लेखाकार
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. व ह.)
हरियाणा, चण्डीगढ़-160020

बैठी थी समुन्द्र
के किनारे
चकमती रेत, कुछ अनछुई
खामोशियां
बिखरी थीं चारों तरफ
गहरी सी गहराइयां
कैसा ये सन्नाटा,
कैसी, ये परछाइयां
एकाएक एक लहर उठी
यूं जोश से
ले गई तन्हाइयां
देख कर मैं सोचती
रह गई
अन्तर्मन से व्यथा सब
खो गई
यूं जाने कितने दुःख
कितने विषाद
अनायास ही जीवन में
आ जाते हैं
एक छोटी सी खुशी का
उफान
ले जाता है सारे विषाद
कर देता है जीवन नवरंग
देके इस छोटी सी तरंग

माँ गंगा



सुश्री आरती शर्मा
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्र.नि.ले.प. (कृषि, खाद्य एवं जल संसाधन)
नई दिल्ली-110002

शिव की जटा से निकल पृथ्वी का कल्याण करती गंगा।

कण-कण को पोषित कर कल-कल बहती निर्मल गंगा।

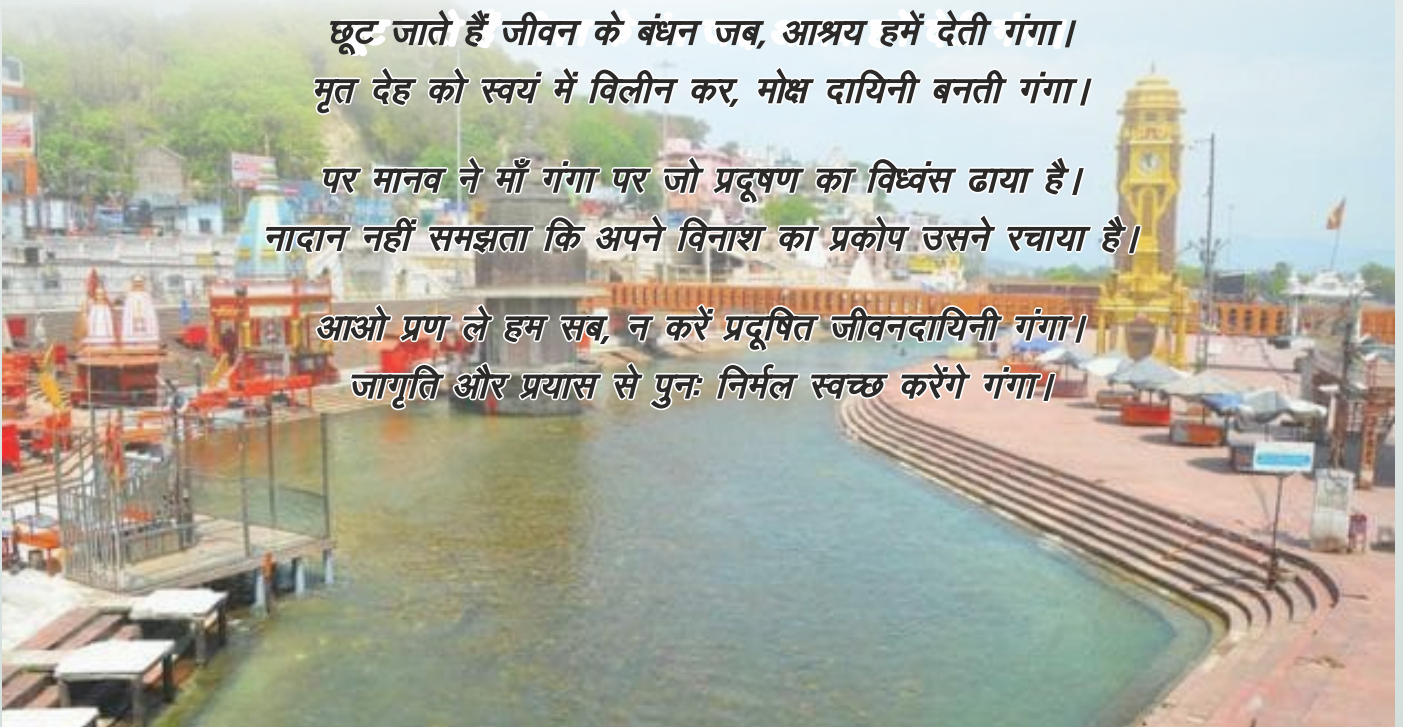
हैं लहलहाते खेत इसके जल से, अन्न के भण्डार देती गंगा
अगिनत जीव जंतु पलते जिसकी गोद में, जीवन का संचार करती गंगा।

जनमानस की प्यास बुझा कर, प्राणों का संचार करती गंगा।
अमृत समान जल से धरा को हरा भरा करती गंगा।

छूट जाते हैं जीवन के बंधन जब, आश्रय हमें देती गंगा।
मृत देह को स्वयं में विलीन कर, मोक्ष दायिनी बनती गंगा।

पर मानव ने माँ गंगा पर जो प्रदूषण का विध्वंस ढाया है।
नादान नहीं समझता कि अपने विनाश का प्रकोप उसने रचाया है।

आओ प्रण ले हम सब, न करें प्रदूषित जीवनदायिनी गंगा।
जागृति और प्रयास से पुनः निर्मल स्वच्छ करेंगे गंगा।



पलाश के फूल



योगेश कुमार मिश्र
वरिष्ठ अनुवादक
प्रधान महालेखाकार (ले.प.)
का कार्यालय, पंजाब, चण्डीगढ़

एक दिन मेरी सखी ने लिखा

“लालसा पलाश के फूलों की
चाहत बरगद के झूलों की”

हमने उनसे कहा,
पर ये बताओ कभी गाँव गयी हो,
वहाँ पर बसंत के बाद भी कभी रही हो?

बरगद में झूले कहाँ लगते हैं?
उसके डाल का कुछ अनुमान है?

वर्षा में हो बेपरवाह, इत्मीनान से गीली हो!
क्या पीपल के पेड़ पर भी कभी झूली हो?

हाँ हाँ झूली हूँ न ...!
मेरे बाबा ने
बरामदे में मेरे लिए कई बार झूला लगाया है!
काटे जाने से पहले, पीपल मेरे सामने लहराया है,

तो सुनो ...
तुम झूले, पीपल पर डालना,
विस्तृत छाया में, साफ़ सुथरी डाली में

रस्सी नायलोन की नहीं
गाँव में बनी जूट या पटसन की लेना,
और उस पीपल के पास, जरा नंगे पैर ही जाना,
चप्पल अपनी कहीं दूर छोड़ कर आना,

मुझे यकीं है जब तुम झूले पर बैठोगी
पक्का कहता हूँ पछिया हवा चलेगी
पुरवैया की उमस से भीगी तुम्हारी पीठ पर कुछ
झुर झुराहट होगी ...

तुम यहीं मत रुक जाना ...
झूलना तुम, खूब जोर लगा कर झूलना,

पीछे आते समय पाँव मोड़ लेना
आगे जाते समय बिलकुल सीधे ही रखना
जितना हो सके,
हो सके तो फुनगियों तक
अपने पांव को ले जाना ...

फिर सुनो आसमान में घटा काली होगी
कोमल गालों पर लाली होगी
तुम यहाँ भी मत रुक जाना,
विशाल पीपल—छतनार पीपल,
में मौन हो कर कुछ सुनना,

शनि की छाया से राहू की माया से हटा
जिजीविषा और कृष्ण के योग क्षेम तक
पहुँचाने वाले पीपल के पास ही रहना

बरखा की बूँदें तपती धरती पर गिरेगी
तुम झूले पर बस आंखें बंद कर लेना
धरती को छू कर उसका सौँधापन
बूंदों का सन्देश बन, तुम तक आएगा

यकीन करो यह तुम्हारे गेशुओं में
वर्ष भर के लिए बस जायेगा ...
फिर तुम कहना कि जो भी किताबों में पढ़ा था तुमने
जो लिखा था डायरी में तुमने
क्या यह वही है! हू-ब-हू

लेकिन क्या फर्क पड़ता है?
अगर अनुभव ही सब कुछ होता
तो चाक पर बर्तन गढ़ने वाले रचनाकार हो जाते
किसान कविता लिखते और बहेलिये तराने गाते,
शब्दों से गुँथी हुई मेरी कविता में क्या कमी है,
इसमें भी मिट्टी की खुशबू और तकलीफ की नमी है।

ए.सी. में बैठ कर भी जब यह सब संभव है
फिर कौन पूछता है तुम्हारी तरह कि,
क्या तुम्हें सच इन सब का अनुभव है?

ठीक है ...
अब चलो ले चलूं तुम्हें
अपने गाँव से सटे
पहाड़ियों पर

जहाँ घने पलाशों का वन है
जिनके टेसुओं में
आज भी अटका मेरा मन है,
तीखी धूप में भी खिले रहने की वीरता
इसका रंग गहरा केसरिया

कहते इसे हैं जंगल की आग
तमस हर लेने को यह उतर आता है
जब बीतता है फाग,
गुलमोहर, सेमल और अमलतास ...

इनका नाम और इनका वैभव
ऐसे ही हैं – जैसे तुम आये दिन सुनती हो
फलां रिक़्शेवाला का बेटा आई.ए.एस. हो गया
फलां चौकीदार की नौकरी करते आई.पी.एस. हो गया

वीरता, आत्मगौरव खरीदे नहीं जाते
ऐसे ही इन अहसासों को केवल
पढ़ कर जिया नहीं जा सकता,
अब जरा इन टेसुओं को देखो ना!
भीषण गर्मी और चुभती-जलाती धूप में
कैसे खिला है विपरीत में,

केवल खिला नहीं है प्रिय
इसके भीतर क्या होता है
ये भी तुम केवल पढ़ कर नहीं जानोगी
कभी इसके फूलों की पंखुड़ियों को चीर
इसका रस पी कर ही मानोगी

कितनी मधुरिमा है, इसके आस्वादन में
जो भीड़ में तुम्हें न मिला,
वह मौजूद है, इस निर्जन में

चीटियों की कतार देखती हो
यह भी तो प्रमाण है
कुछ मीठा सा, तरल और सरल सा
इसके भीतर भी प्राण है!
गेहूँ और गुलाब की तरह यहाँ भी द्वंद्व है
सुगंध भले ना हो पर रस है
सूखापन नहीं, प्रेम की नमी है
इसी वज़ह से कहता हूँ,
एक बार चाहता हूँ,

तुम्हें पहाड़ी के उस पार भी ले चलूँ
 तुम्हारे घर के पालतू खरगोश
 और जंगल वाले फुर्तीबाज—स्वच्छंद में
 अंतर बता सकूँ ...

बरगद के झूलों में रस्सी प्रकृति ने पहले ही दे रखी है,
 बरगद के आस पास, कुछ उग भी नहीं पाता
 टेसू खूबसूरत तो हैं, पर उसकी जीवटता से
 कुछ लोगों को कुढ़न है
 टेसू से चिढ़ते हैं शहर के लोग ...

पर टेसू को न फर्क पड़ता है
 ना ही बरगद को ...
 वट सावित्री के पूजन में, बरगद की पूजा
 का विधान है ...
 हर सावित्री के संघर्ष का सुफल सत्यवान है।

नवग्रहों में चन्द्रमा की समिधा है पलाश
 वन देवी की पूजा में इसके पत्तों का प्रकाश
 और क्या—क्या कहूँ सखी ...
 कथा अनंत है।

कभी माटी के सान्निध्य में रहो
 चरती गायों के गले की घंटी सुनो
 उसके रंभाने से और अपनी छाती में दूध उतरने की तुलना करो

फिर नहीं कहोगी
 ये सब मायने नहीं रखता ...

सच कहूँ तो मायनों से
 जिन्दगी भले चलती हो लेकिन,
 जीने का मायना पता नहीं चलता
 जब तक की मायनों के
 पार जा कर जिया नहीं जाता ...

दो गज़लें



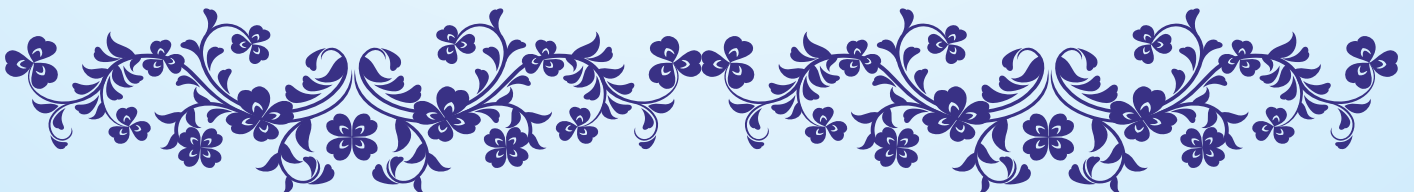
सुश्री मनजीत शर्मा 'मीरा'
सहायक लेखा अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. व हक.)
हरियाणा, चण्डीगढ़

(1)

हम ज़िंदगी की राह के दरबान हो गए
कमज़ोर थे जो इल्म में सुलतान हो गए
मल्बूस तो थे कीमती राजा की देह पर
खाली जो देखा दिल सभी हैरान हो गए
आती नहीं ढंग से जिनको लुग़त तलक
बज्म-ए-अदब के आज वो रसखान हो गए
भूकों से पूछते हैं वो रोज़े शुरू किए
हमने भी कह दिया कि हां रमज़ान हो गए
तुमने तो ज़र-ज़मीन से दौलत बटोर ली
हम लोग प्यार करके ही धनवान हो गए
तुम काफ़िया ग़ज़ल का तो मैं भी रदीफ़ हूँ
जिनमें भरा है प्यार वो अरकान हो गए
'मीरा' तेरे ख़याल में फ़िक्र-ए-सुख़न रही
जो काबिल-ए-अदब थे वो दीवान हो गए

(2)

किसी भी दर में न फैलें हथेलियाँ मेरी
खुदा जो प्यार से भर दे तिजोरियाँ मेरी
सिकुड़के बैठा है क्यों पेट में दिए घुटने
बला की ठंड है ले जा रजाइयाँ मेरी
हर इक बशर ने मेरी शान में क़सीदे पढ़े
रक़ीब को ही न भाई बुलंदियाँ मेरी
शज़र हैं ठूँठ हवा गुल ख़िज़ां का मौसम है
न जाने कैसे कटेंगी ये गर्मियाँ मेरी
मदारी हूँ मैं मुहब्बत के गुल सिखाता हूँ
कभी तो देख तू भी आके खूबियाँ मेरी
जता न मुझको कि कुछ भी नहीं किया मैंने
मैं डाल आया हूँ दरिया में नेकियाँ मेरी
हुनर सिखाया जिसे ज़िंदगी का है 'मीरा'
वही पढ़ाए है मुझको कहानियाँ मेरी



विश्व राष्ट्र



मुकेश कुमार सक्सेना
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
वित्त व संचार, दिल्ली-110054

विश्व राष्ट्र की बात करें।
खण्डों पे आघात करें॥
एक अखण्ड सारी दुनिया हो।
ऐसा ही संवाद करें। विश्व राष्ट्र ...
टुकड़ों में अब बंटे न धरती
पड़े न जरूरत सेना की वर्दी॥
बस सारा धरती एक देश हो।
एक राष्ट्र हो एक भेष हो॥
दुनिया की अच्छी चीजें।
न एक कोने में पले बढ़ें॥
जो बड़ी बुराईयाँ फैली हैं।
वे घिसट-घिसट के दम तोड़ें॥
हर शहर गाँव और नगरों में।
हर बच्चे बूढ़े के अधरों में॥
बस प्रेम की धारा बहती हो।
जो मन के मैल को धोती हो॥
आओ अब सब मिलजुल कर।
व्यक्त अपने जज्बात करें। विश्व राष्ट्र ...
न विकसित विकास का हो लफड़ा।
न देश-देश का हो झगड़ा॥

जब सब बच्चों का एक पिता है।
सब धर्मों की एक कथा है॥
फिर क्यों हम धरती को चीरें।
नफरत की क्यों खींचें लकीरें॥
हिन्दू-मुस्लिम-सिख-ईसाई।
बाँट दिये सब भाई-भाई॥
इनसे भी जब भरा न मन।
बाँटे हमने तन-मन-धन॥
और सिलसिला टूट-फूट का।
न जाने कितने दिल तोड़ेगा॥
धरती तोड़ी, सागर तोड़े।
राम-रहीम के घर तोड़ेगा॥
अरे भाइयों आओ समझें।
ये धरती है प्यार की॥
इससे निकली खनिज सम्पदा।
सबके ही अधिकार की॥
ये अधिकार न बंटने पाये।
मानव न खतरे में आये॥
दुनिया संग बारात करे।
विश्व राष्ट्र की बात करे। विश्व राष्ट्र ...

मानव जैसे मोबाइल बन गया

सुश्री राजश्री के. शाह
वरिष्ठ लेखाकार
कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हक.)
गुजरात, राजकोट-360001

आजकल मानव जैसे मोबाइल बन गया,
कैसे बन गया, सोचो कैसे बन गया!!
जरूरत के हिसाब से संवेदनाओं को रीचार्ज करने लगा,
मुश्किल घड़ी में जीरो बैलेन्स दिखाने लगा।
आजकल मानव जैसे मोबाइल बन गया॥

हों राजकोट में और बताएं मुंबई, ऐसा झूठ बोलने लगा,
मोबाइल कंपनियों की स्कीम की तरह
फायदे के लिए मित्रों को बदलने लगा।
आजकल मानव जैसे मोबाइल बन गया॥

आधुनिकता के अहंकार में रिश्तों को बदलने लगा,
स्वार्थ के चश्मे लगाकर रिश्तेदारों को डिलीट भी करने लगा॥
व्हाट्सएप और फेसबुक के चक्कर में
परिवार से कवरेज के बाहर होने लगा
आजकल मानव जैसे मोबाइल बन गया॥

सुख कहाँ है?

सुश्री पूनम शर्मा
वरिष्ठ अनुवादक
कार्यालय प्रधान निदेशक
वाणिज्यिक लेखापरीक्षा
बैंगलूर-560001

सुख कहाँ है?
दूँढा तुझे चहुँ ओर
न मिल पाय तेरा कोई छोर,
पकड़नी चाही जब तेरी कोई डोर
कभी मुड़ा इस ओर कभी मुड़ा उस ओर।
सुख कहाँ है?

शायद उन आलीशान महलों में
जहाँ अपार सुविधाएँ है,
नहीं मैंने उसे वहाँ नहीं पाया
उन आलीशान महलों में भी
सुख कहीं नहीं आया

सुख कहाँ है?
शायद उस असीम धन दौलत की कमाई में
जहाँ इन्सान खुद को भुला चला जा रहा है
पैसे की अंधी दौड़ में बस पैसा चाहिए हैं सब इसी होड़ में।
नोट गुलाबी हों, लाल हो, नीला हो या हरा,
कमाल की बात, सुख तो किसी नोट की कमाई में नहीं भरा।
जब नहीं मिल पाया सुख मुझे यहाँ
सोचा कोई और पता होगा उसका,
कोई भी पता रहने दो, सुख तुझे
दूँढने मैं आऊँगी वहाँ
तभी ख्याल आया हो शायद
किसी के प्रेम में सौहार्द में,
छुपा बैठा होगा चुपचाप,
जाऊँगी दूँढ लूँगी उसे न सुनाई भी देगी मेरी पदचाप।
खैर, यह भी तो करके देख लिया
प्रेम किया, दिया सब किया
लेकिन अफसोस सुख नहीं मिल पाया
हृदय में सुख को पाने वाला फूल न खिल पाया।

अब बहुत हुआ मुझे मालूम है
 कहाँ मुझे सुख मिल पायेगा
 जीवन के इतने वसंतों का अनुभव मेरा
 बेकार कतई नहीं जायेगा,
 घमंड से सर उठाकर सोचा मैंने,
 सुख तो मेरा ना आखिर कब तक
 मुझसे दूर रह पायेगा, आना होगा उसको
 मेरे पास और वो निश्चय ही आयेगा।
 शायद सुख स्वयं की तलाश में हो,
 शायद शांति के किसी एहसास में हो,
 हाँ आखिर जीत होती दिख रही है मुझको मेरी
 तलाश सुख की होने को है पूरी।
 प्रकृति की गोद में नहीं बहते झरनों की झर-झर में नहीं,
 नदी के शीतल जल की कल-कल में नहीं।
 फसलों में लदे वृक्षों की घनी छाँव में नहीं
 जहाँ बचपन बिताया मैंने उस गाँव में नहीं,
 लहलहाती फसलों से भरे खेतों में नहीं,
 मरुस्थल की तपती रेतों में नहीं,
 आखिर सुख है कहाँ क्यों नहीं मिल पा रहा?
 क्या कोई ऐसी भी वस्तु आज है जिसे
 पैसे धन दौलत से नहीं खरीदा जा सकता,
 यह प्रश्न कौंधा मेरे मस्तिष्क में,
 एक अंतिम निर्णय लिया फिर गंभीर हृदय से,
 जो सुख नहीं महलों में, बड़े मकानों में,
 जो सुख नहीं खेल के खुले मैदानों में,
 जो सुख नहीं है प्रेम में सौहार्द में,
 ढूँढते उसको इधर-उधर बेकार में,
 वो वहाँ नहीं जहाँ उसकी तलाश की गई,
 वो वहाँ नहीं जहाँ उसकी आस की गई,
 वो मिलेगा आखिर बाहर क्यों,
 छुपा बैठा हमारे भीतर वो
 सुख चाहिए तो हृदय को रखना हो स्पष्ट
 मुस्कुराते रहिये चाहे जीवन में हो लाखों कष्ट,
 उस अंतरंग मुस्कान में जब हम मुस्काएंगे,
 निश्चय ही सुख की अनुभूति को तुम अपने अन्दर ही पाओगे।
 कहाँ कहाँ नहीं ढूँढा तुझे,
 तू तो मेरा ही हिस्सा ही था,
 पूरी कविता ये मेरी बस सुख पाने का ही किस्सा था।

कभी सोचता हूँ

कुमार भास्कर
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान निदेशक, वाणिज्यिक
लेखापरीक्षा, बेंगलूर-560001

कभी सोचता हूँ, क्या कुछ छोड़ आया हूँ पीछे,
वो ममता का आँचल, पिता का सर पे हाथ।

बहन की राखी, कलाई जिनसे गुलजार रहा करती थी,
भाई-बंधुओं का प्यार, हृद से गुजरने को तैयार रहा करती थी।

कल-कल बहता वो सलिल, चहकती वो चिड़ियाँ छोड़ आया,
लहलहाते, सुनहले वो खेत, बगीचे की अमिया छोड़ आया।

वो बगिया जहाँ भ्रमर गुंजन करते थे, तितलियाँ चिहुकती थी सुमनों पर,
छोड़ आया मैं वो बूढ़े बरगद की छाया, बीता जहाँ बचपन था।

छोड़ आया सब संगी-साथी, जिनसे थी जीवन की थाती,
छोड़ आया वो पगडंडिया जो पहचानती थी कदमों को।

दो जून की रोटी कमाने निकला, इश्क (गाँव) अधुरा छोड़,
शहर से मोहब्बत निभाने निकला।

शहर तो ये बेवफा निकली, साँस लेने की कीमत चुकानी पड़ी,
कहने को ये शहर बेमिसाल है, ढूँढने गर निकलो अपने तो तंग हाल है।

अट्टालिकाएँ हैं, चकाचौंध है, कोलाहल है, गति है, एक दूसरे को पीछे करने की होड़ लगी है,
पा सको जो सहानुभूति, अपनापन, साहब! वक्त की कमी है, वक्त तो ही नहीं है।

कहते हैं अपने बड़ा आदमी हो गया हूँ
गर, जता पाऊँ, बिन बारिश के सुखी धरा हो गया हूँ।
गमजदा हूँ, संजीदा हूँ, वक्त से मेरी अभी ठनी पड़ी है,
लौट आऊँगा अपना मोहब्बत (गाँव) जीने, रस्ता निहारे जो मेरे खड़ी है।

महानगर की जिंदगी

सुश्री प्रिया मिश्रा
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. व हक.)-I
महाराष्ट्र, मुम्बई-400020

सुबह मीठी-सी अलसाई अलार्म के साथ,
आँखें खुलती, जगा जाती मन में अटूट विश्वास,
आधे घंटे दौड़, हल्के-फुल्के व्यायाम के साथ,
होती मेरी दिन की शुरुआत।
लोकल ट्रेन में अखबार के पन्ने पलटते,
अपनी ही जैसी सखी-सहेलियों को देखते,
पहुँच जाती मैं प्रधान महालेखाकार कार्यालय,
पूरा करने अपने सपने, नए जुनून व उमंग के साथ।।
लंच टाइम में सबके अपने-अपने अनुभवों का किस्सा,
कुछ भविष्य की कल्पनाएँ, कुछ अतीत की यादें,
कर देता दिमाग को वापस 'रिफ्रेश',
हो जाती तैयार मैं, आधे दिन के लिए वापस फ्रेश,
सायं घर पहुँचते देख, अपने घरवालों की मुस्कान,
सोचती सब ठीक ही हो रहा, आगे भी अच्छा होगा,
सब यहाँ ऐसे ही दौड़ रहे, हम क्यों व्यर्थ सोच रहे,
दे उस परमपिता परमात्मा को धन्यवाद,
करती मैं अपना दिन समाप्त,
करती मैं अपना दिन समाप्त।।।

आत्म-विश्वास

सुश्री मोनिका चौहान
कनिष्ठ अनुवादक
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)
ओड़िशा, भुवनेश्वर

रख हौंसले बुलंद, मन में थोड़ा विश्वास रखा कर,
किसी और से नहीं, तू खुद में थोड़ी आस रखा कर।
कठिनाइयाँ भी मिलेंगी, परिस्थितियाँ भी विपरीत होंगी,
संघर्ष से मत पीछे हटना, तभी तो जीत होगी,
मिले असफलता तो भी विचलित नहीं हो जाना है,
अनुभव तो मिलेगा, कोशिश करने में क्या खो जाना है,
न थका कर प्रयासों से, न खुद को निराश रखा कर,
किसी और से नहीं, तू खुद से थोड़ी आस रखा कर।
चार लोग क्या कहेंगे, काम तेरा नहीं है ये सोचना,
लोग तो चाहेंगे तुझे कदम-कदम पर रोकना,
जिस दिन तू आस-पास के शोर से निकल जाएगा,
तेरा रास्ता उस दिन तुझे साफ नजर आएगा,
धुंधला जाए गर रास्ता, तो भी जारी तलाश रखा कर,
किसी और से नहीं, तू खुद से थोड़ी आस रखा कर।
तू ठीक से देख उनको, जो आज तेरा मजाक उड़ा रहे हैं,
तुझे ऐसा नहीं लगता कि वो ही तेरा हौंसला बढ़ा रहे हैं,
गिरगिट से लोग है ये, आज तेरी राहों में कांटे बिछायेंगे,
तेरी कामयाबी पर यही लोग सबको तेरा उदाहरण बताएंगें,
ऐसे लोगों में अपना व्यक्तित्व तू कुछ खास रखा कर,
किसी और से नहीं, तू खुद से थोड़ी आस रखा कर।

जलती हुई चिताओं से पूछे ...



रवि कान्त

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान निदेशक ले.प. (इन्फ्रास्ट्रक्चर)
आई.पी. एस्टेट, नई दिल्ली

जलती हुई चिताओं से पूछे कोई
क्यूँ हवा दे रहा है इसे कोई
देख इसे परेशान होता नहीं
हिस्सा हो चला है जिन्दगी बस अब यही
जलती हुई चिताओं से पूछे कोई।
धुएँ का गुब्बार उठ फिर खड़ा हुआ
दिनों से दिन हुए थका नहीं सका इसे कोई
कोशिशें जारी हैं कम करने की
हार कर बैठा नहीं अभी कोई
जलती हुई चिताओं से पूछे कोई।
जिन्दगी मायूसी की चादर ओढ़ सो गई
मालूम है मुझे सोता नहीं ऐसे कोई
जिद हुई जी लू इसे पहले की तरह
साथ देता नहीं मेरा इसमें कोई
जलती हुई चिताओं से पूछे कोई।
समय ये भी निकल ही जाएगा
ढेर लगा जो शमशानों में हट ही जाएगा
इस जिन्दगी को हर पल जीये ऐसे
मरने पर भी मलाल ना हो जिया कैसे
जलती हुई चिताओं से पूछे कोई।

पिता



सुश्री मीनाक्षी
सहायक प्रशासन अधिकारी
राजभाषा अनुभाग
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक
का कार्यालय, नई दिल्ली

पिता

आज फिर झल्ला रहा है, गुस्सा किए जा रहा है
बाहर जाने से बच्चों को रोके जा रहा है
जो चाहिए मुझे बताओ कहे जा रहा है
ये पिता है ... जो इस तरह परवाह जता रहा है

अक्सर सुबह शाम ही घर पर दिखता था
ऑफिस की दौड़ में कभी नहीं थकता था
काम में भी बच्चों का भविष्य तकता था
बस ... अपने काम से ही काम रखता था
आज अखबार की खबरें सुनाता जा रहा है
आज पिता का ये नया रूप सामने आ रहा है
ये पिता है ... जो इस तरह परवाह जता रहा है

घर को तो माँ सजाती है, यहाँ उसका ही राज है
खाना, सफाई, बर्तन धुलाई से पिता को क्या काम है
पर ... इन दिनों बार-बार बच्चों के हाथ धुला रहा है
मैंगी बना कर रसोई में भी हाथ आजमा रहा है
दरवाजों के हैंडल तक सेनिटाइज किए जा रहा है
हाँ ... ये पिता है ... जो इस तरह परवाह जता रहा है

कैसा पिता है, कभी 'आई लव यू' नहीं बोलता है
पाई-पाई का हिसाब रखता है, सब कुछ पैसों से तोलता है
अब तक यही जाना था, पर इसमें भी एक राज था
आज जाना ... क्यों उसके सर मुखिया का ताज था
खुद पर खर्च ना कर 'अनजाने संकट' के लिए बचाता था
क्योंकि ये अपने से ज्यादा अपनों को चाहता था
आज ये पिता सम्बंधी पुराने सारे मापदंड बदले जा रहा है
हाँ ... ये पिता है ... जो इस तरह परवाह जता रहा है ...
'समय' बच्चों को पिता की नयी पहचान करा रहा है।



भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग के कार्मिकों से प्राप्त फोटो



श्री अजीत सिंह, वरिष्ठ प्रशासन अधिकारी द्वारा ली गई फोटो

पंजीकरण सं.-2 एल (9) / 8747177 / 87(90)



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय
9, दीन दयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110124